अमृतलाल नागर

क्रम

चन्दनवन

चन्दनवन

पात्र

शर्मिष्ठा (शम्मी)
मंजु
माँ
जय
डॉ० याज्ञिक
सेठ किशनलाल
बरिस्टर
सिन्हा
गाइड
पुलिस, नौकर, कुछ अन्य लोग

दृश्य एक

कुत्ते के भौंकने और दूर पर एक कार के जाने की ध्वनि। पुलिस की सीटियाँ। 'जागते रहो' की गुहार और भारी बूटों की खट-खट।

पुलिस आते हुए कौन है बे वहाँ ? कूडा घर मे क्या कर रहा है ? कूडे पर फावडा चलाने की आवाज

जय झक्की स्वर कौन है ? ओह कास्टेबिल। धीरे से चुप-चुप। मैं चोर हूँ।

पुलिस चोर नही, पागल हैं आप। ओफ-ओह कितनी बदबू ! तेज सडाध है यहाँ। ये कूडेखाने मे फावडा क्यो चला रहे हो ?

जय रूखा स्वर अरे मेरी माँ—ये कान्स्टेबिल भी नादान निकला ! अरे भोले आदमी जिसे तुम कूडा कहते हो, बदबू कहते हो, उसे जरा खोदो तो सही। उसके नीचे दुनिया की बेशुमार दौलत है। उसके नीचे चन्दनवन है—बागे बहिश्त, जहाँ से खुदा या ईश्वर ने नही बल्कि हौवा ने आदम को निकाला था ! सेब खुद खा गयी और बेचारे भोले आदम को साँप से डसवाकर उसकी लाश इसी कूडेखाने मे फिकवा दी।

पुलिस स्वगत—बडबडाहट ये कम्बख्त पढा लिखा पागल है—करेले पे नीम चढा। अब निकल आइए बाबू, कूडे की गैस मे

घुटकर मर जाइएगा। देखिए कूडा मत छितराइए। नाक दबाकर बदबू उड रही है।

जय फूल! नो नो। मैं पागल नही हूँ जो वरदी पहने पुलिसमैन को गाली द। मुझे क्षमा करें और सच पूछें तो गाली देनेवाला दरअसल खुद अपने ही का गाली देता है। वह समझता है कि वह दूसरे का दे रहा है।

पुलिस स्वगत कोई बडा आदमी है पूर दिमाग च् च च् ।

कुछ दूर से नारी स्वर जय जय जय

पुलिस आप ही को ढूढ रही है साहब जोर से इधर आइए देवीजी, इधर हैं आपके साहब दूर से आयी जूतो की खटखट पास दौडकर आती हुई

जय अरे क्या कर रहे हैं? मेरे यार मेरे दुश्मन! मैं यहाँ मजे मे चन्दनवन के फूलो की महक से मस्त हाल हूँ और तुम उस बुला रहे हो जिसके कीमती सेंटो से बसे हुए गोरे नाजुक जिस्म से—उफ उफ उफ नाक दबाकर उसके पास आते ही बदबू के तेज झाके आन लगे।

शर्मिष्ठा दौडती हुई आ गयी

शर्मिष्ठा हाँफते हुए जय तुम यहाँ —उफ बडी बदबू—जय तुम यहाँ फावडे से क्या खोद रह हो?

पुलिस मैंन भी बहुत समझाया है। पढे लिखे बडे लोग यहाँ एक मिनट मे ही बीमार पड जायें।

जय फिर वही गलत बात आपन दुहरायी मिस्टर कान्स्टेबिल। मैं कहता हूँ कि आज का पढा लिखा—सो कॉल्ड बडा आदमी या बाबू आदमी अपने दिलो और दिमागो म कितनी गन्दगी और सडाँध बसाकर असीम घुटन मे दिन रात सिमटा रहता है।

शर्मिष्ठा इनका दिमाग ठीक नहीं रहा। न जाने किस वक्त घर स उठ कर चले आय। सब लाग इन्हें ढूँढने निकले हैं। सब नौकर-चाकर यहाँ-वहाँ ढूँढने गये हैं। *मैं क्या करूँ जय—अब मान*

भी जाओ डालिंग—बदबू के मारे मेरा

जय मैंने कहा हुजूर, आपके घर मे—आपके आसपास कितनी बदबू समायी हुई है, कुछ इसका भी अन्दाज है आपको ?

शर्मिष्ठा बहको मत जय। घर मे बदबू है और यहाँ बदबू नही। कैसी बच्चो जसी

जय बच्चो-जैसी ! क्या मैं झूठ कहता हूँ ? बोल—तेरे घर मे बदबू नही है? हजार बार कहूँगा—है है है ! झूठी देश सेवा की खोखले समाज सुधारो की, भद्दे सास्कृतिक सम्मेलनो की—तरह-तरह की दुर्गन्धियाँ ! तुम्हारे अदर से क्षुद्र खोखली अहमता की दुर्गन्ध हर वक्त उडा करती है।

शर्मिष्ठा धीरे से इनके साथ सख्ती वरते बिना काम नही चलेगा। क्या आप मेरी मदद करेंगे ! प्लीज़ यही दो फर्लांग पर हमारी कोठी है। प्रसिद्ध फिल्म प्रोड्यूसर जयवर्द्धन।

पुलिस हाँ हा।

शर्मिष्ठा यही हैं।

पुलिस तो आप मशहूर समाज सेविका शर्मिष्ठा देवी !

शर्मिष्ठा गुमानभरी उपेक्षा के साथ जी हाँ आइए।

जय चीखना छोडो, मुझे छोडो। मुझे उजाले से अँधेरे मे मत घसीटो। मत घसीटो।

दृश्य दो

घडी की टिक टिक

जय धीरे धीरे टिक टिक टिक टिक टिक टिक दरवाजा खुला। चौंकना कौन ?

मजु   आप घबरा गये मिस्टर जयवद्धन !

जय   तसल्ली तुम हो—नस तुम हा मुझे शाति है बडा सकून है, लेकिन वो वा सब नक्ली चेहरे ?

मजु   अपने आपको उत्तेजित न कीजिए। विश्वास रखिए, जिसको आप न चाहेंगे वह यहाँ न आ सकेगा। आप पूरा भरोसा रक्खें।

जय   थैंक्यू थैंक्यू नस, भगवान तुम्हारा भला करे। मुझे अपना नाम बतलाओगी ?

मजु   जानकर क्या करेंगे ?

जय   यह बार-बार नस कहने से लगता है फासला धरती और चाँद के जितना हो गया है और अब तो मैं दूरियो से घबरा गया हूँ, माँ।

मजु   आप मुझे मजु कहा कीजिए।

जय   खुश रहो। तुम्हारी शरण मे आकर मुझे, जानती हो कैसा लगता है ? श्री श्री रामकृष्ण परमहस को माँ काली की जसी छत्रछाया मिली थी तुम्हारे पास रहने स मुझे ठीक वैसा ही श्रद्धा भरा भरासा बना रहता है।

मजु   जय साहब ! आपने तो वडी ही अच्छी अच्छी फिल्म बनायी हैं। मैं तो जाने कबसे आपका नाम सुनती चली आ रही हूँ।

जय   सन्तोष हूँऽ तो अभी लोग मेरा नाम भूले नही। शर्मिष्ठा अभी मेरे यश को मिटा नही पायी। वो मिटा नही सकती, तुम मुझे भरोसा दिला दो मजु। डा० बाजपेयी से कह दो—एक बार मेरा खोया हुआ विश्वास मुझे वापस दे दें।

मजु   आप शर्तिया उसे अपने अन्दर ही पायेंगे।

जय   धीरे से मेरे अन्दर तो चन्दनवन है उसमे अनगिनत पारिजात खिले हैं, जो अभी तक मुरझा नही पाये। इन नक्ली शरीफो के हजार जतन करने पर भी नही।

मजु   चन्दनवन के पारिजात पुष्प कभी मुरझाते नही हैं जय साहब।

जय   ठीक कहा मुरझाते हैं केवल दुनियावी फूल। बडा धोखा होता

है इनसे। इनका रस, गन्ध, स्पर्श सब-कुछ धोखा फरेब छि —
मजु तुमसे सच कहता हूँ—मैंने शम्मी को भी पहले-पहल
पारिजात ही समझा था।

मजु — जय साहब, अगर आपका जी चाहे तो आप पुरानी स्मृतियो को ढील देन की कोशिश करें। मैं टेप रिकाडर चला दू।

जय — हूँ ऽ, पुरानी यादो को ताजा करना अच्छा लगता है।

मजु — मशीन चलाती हुई शर्मिष्ठा देवी से आपकी भेंट पहली बार कब और कहा हुई थी जय साहब ?

अनुकूल सोलो वाद्य

जय — महाबलीपुरम् दक्षिणी भारत मे १३-३ ६० का दिन। मद्रास से टैक्सी पर वहाँ गया था। दोपहर का समय, सातवी-आठवीं सदी की बनी गुफाएँ, पल्लवो के मन्दिर, पाण्डवो के रथ, पुरानी पुरानी चीजें।

समुद्र तरगें

झाडी की आड मे कम्बल बिछाये एक मद्रासी दम्पति पिकनिक का आनन्द ले रहे थे। युवक लेटा हुआ तमिल भाषा का कोई गीत गुनगुना रहा था और युवती टिफिन कैरियर से खाना परोस रही थी। मुझे आज भी याद है—देखकर मेरे मन मे भी उमग भरी चाहना जागी थी कि पत्नी के नाजुक हाथो से परोसा गया खाना जल्द नसीब हो।

गाइड — है है अइ ऐम गैडड सर।

जय — क्या ?

गाइड — अइ ऐम मगाबलीपुरम गैंड्ड सर नटराजन गैडड।

जय — गैंड्ड गैडड ? ओ तुम यहाँ के गाइड हो !

गाइड — आमा आमा सर।

शर्मिष्ठा — सुनिए आपने इस गाइड को इगेज कर लिया है क्या ?

जय — जी हाँ, यही समम्न लीजिए। मगर आप चाहें तो हम दोनो ही इस गाइड के ज्ञान का लाभ ले सकते हैं। क्यो भाई नटराजन, यहाँ के सब मदिर वगैरह दिखला दोगे ?

गाइड आमा आमा सर इन्दी नेइ समचता सर समचता कौचम् कौचम् है है यी ई गलिश वेरी गुड्ड सर अइ स्पीक। मई सट्टीफिकट सर लुकु।

जय हां-हां, देख लिया तेरा सर्टिफिकेट। तू बहुत बढ़िया इंग्लिश बोलता है। बोले जा, बोले जा पट्ठे।

शर्मिष्ठा हँसकर और गाइड नटराजन की लगड़ी अंग्रेजी तमिल भाषा की वैसाखी लगाकर खूब दौड़ती है।

जय विश्वास मानें—ये अपनी मेड इन इण्डिया अंग्रेजी को इंग्लैण्ड में भी इसी ठाठ से बोलेगा।

गाइड इदो पागिरेन सर। दिस इस सेवन पगोडास सिक्स इन सी वन हियर सर मैंडिडपल्लवास हुईम। हियर चीफ मिनिश्टर चीफ जश्टिश ची इ गलिश प्रेंच बकाल वोबे एल्लोसम कम सर। दिस इस मगाबलीपुरम् हियर महाबारता राक सर अरजुना पिनेस बीभास इश्टोव बीभास इडली सर महिशासुर मर्दिनी केव सर वणणम मडपम फाइव पडवास एड वन वईप सर द्रौपदी रथा हि हि हि

शर्मिष्ठा : ओ हाउ लवली! हमारे देश में कितने ऊँचे दर्जे की कला थी, लेकिन मेरी अक्ल हैरान है कि इस धुर दक्षिण में भी अर्जुन भीम आदि पाडवों को इतना अपनापन मिला है।

जय दक्षिण के शंकराचार्य को कश्मीर तक में उसी श्रद्धा और अपनेपन का भाव मिलता है जो आप यहाँ पाती हैं।

शर्मिष्ठा ठीक कहते हैं आप। दिशाओं की दूरी इस देश में कभी दूरी नहीं मानी गयी। यहाँ दसों दिशाएँ सिमट अनेक सगमों पर आ मिलती हैं।

गाइड लैंक पक्ची सर बड वड कम वेरी वेरी हाई मीट हियर पक्ची तीथम् हियर आल्सो सर वेरी हियर।

शर्मिष्ठा पक्षी तीर्थ की बात कहते हो?

गाइड आमा आमा सर लेडी सर दि हिल्स अफ सेक्रेट कैंटस तिरुक्कुल कुड्रम वरी वेरी फैन सर लेडी सर गो देयर लेडी

सर यू आल्सो सर।

जय नटराजन गाइड कहता था कि पक्षी तीथ मे हजारो साल से क्षेमकरी पक्षी का एक जोडा रोज आकर पहाडी पर बैठता है। लेकिन एक पछी जो जान कहा से उडता हुआ यहाँ आया था। हम दोनो ही एक साथ इतनी देर घूमे फिरे और अलग भी हो गये। मने उसका नाम तक न जाना कौन थी कौन थी।

दृश्य तीन

कलम की खरखराहट

मजु हूँ, फिर क्या हुआ जय साहब ?

जय फिर १३ माच सन् ६१ मे एक दोस्त की बरात मे लखनऊ गया था। क्या अजीब सयोग था कि ठीक एक साल पहले महाबलीपुग्म् मे घूमते हुए मुझे अपने जीवन के अकेलेपन पर तरस आया था। वहा एक अनजान मिली और चली भी गयी और आज लखनऊ मे अचानक उससे भेंट हो गयी। यह अकेला उदास रहने वाला पछी अपने मन के जोडे के साथ पख फैलाकर सारे दिन उडता रहा। आज मेरे जीवन मे एक नया अनुभव आया है। लगता है अब मेरा जीवन ही बदल जायगा। शर्मिष्ठा याज्ञिक शम्मी मेरी शम्मी हा मेरी शम्मी एक बहुत ऊँचे परिवार की पढी लिखी सुसस्कृत युवती है। ससार प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा० सर देवीशकर यानिक की इकलौती लाडली कल से मेरे हिये का हार बनकर फूल रही है। नदी किनारे सूने घाट पर पास पास बठे हुए हम एक-दूसरे से अपना मन न छिपा सके। मैंने कहा

जय हमारी डेढ दिन की मुलाकात म इतनी घुलमिल बातें हो गयीं। तुमस बातें करके मुझे न जान कितनी प्रेरणा मिली है।

शर्मिष्ठा मुझे भी बहुत अच्छा लगा। अभी तक किसी स भी इस तरह खुलकर अपन मन की बातें नही कर सकी थी। पापाजी कला और कलाकारो स नफरत करते हैं।

जय सच! डॉ० याग्निक जसे महान विचारक कला से नफरत!

शर्मिष्ठा इसम अचरज की कोई बात नही। बचपन स ही उन्होंने लेबोरेटरी म ही रहना जाना। बाहर की दुनिया से उन्हें बहुत ही कम वास्ता रहा है। लोगो स मिलना-जुलना, थियटर, सिनेमा, हँसी मजाक

जय वह कुछ भी हो। मगर कला जीवन का रस है। मेरा ख्याल है डा० याज्ञिक ने कला के ऊँचे आदश नही दखे तभी कला को छोटी दृष्टि से देखते हैं।

शर्मिष्ठा मानती हूँ। मैं तो कहती हूँ कि जीवन को देखने के दो ही तरीके हैं। एक वज्ञानिक, दूसरा कलात्मक। राह भले ही अलग अलग हैं। मगर दोनो पर चलकर एक ही सत्य दिखाई देता है और यह सत्य है प्रेम।

जय देखो, फिर तुमने प्रेम की चर्चा छेडी और फिर खुद ही इल्जाम लगाओगी कि फिल्मवाले प्रेम ही प्रेम चिल्लाते हैं।

शर्मिष्ठा वह भी सच है और यह भी कि फिल्मो मे प्रेम के नाम पर बडी सस्ती भावनाएँ उछाली जाती हैं।

जय सस्ती भावनाएँ किसे कहती हो? मान लो मेरी तुम्हारी मुलाकात हुई। हमे एक दूसरे की कुछ खूबियाँ पसन्द आयीं। हमे एक दूसरे से प्यार हो गया, तो यह क्या सस्ती भावना है?

शर्मिष्ठा मगर तुम इन खूबियो को दिखलाते ही कहाँ हो? तुम्हारा प्रेम का फार्मूला तो यह है कि खूबसूरत चेहरे आपस म मिले और प्यार हो गया और फिर तडपने लगे। मैं पूछती हूँ यही प्रेम होता है? प्रेम एक दूसरे के गुणो से होता है या

जय हाँ, बाहरी सुन्दरता से भी प्रेम होता है शम्मी। समाज क्या

समझेगा हम एक दूसरे से प्रेम करते हैं कि नही ? खुद तुम उसे प्रेम मानोगी या नही ?

शर्मिष्ठा हँसकर प्रेम क्या नही मानूगी। प्रेम का अतिम रूप और उद्देश्य ता यही है।

जय बस यही मुश्किल है शम्मी। दुनिया इसे अच्छी तरह जानते हुए भी मानती नही है। हम लैला मजनू की तडप और उनके एक दूसरे के लिए तकलीफ सहने को सिफ इसलिए ही महान् प्रेम मानते हैं कि उनकी आपस म शादी नही हो सकी। मगर यही लैला-मजनू अगर आपस मे शादी कर पाते, इनके बच्चे-कच्चे होते, ये दोनो अपनी जिम्मेदारिया को ठीक इसी तडप और लगन से सँभालते अपनी घर गहस्थी के लिए इतनी ही तकलीफें सहते, तो सच मानो कोई भी लला मजनू के प्रेम को महान् न मानता।

शर्मिष्ठा हँसकर तुम्हारी बात एक तरह से सही है। प्रेम दर-असल फूल है जो हाथो मे लेकर सूघा जा सकता है, गले मे माला बनाकर पहना जा सकता है। अगर पत्थर की तरह प्रेम का बोझ महसूस किया तो फिर उसकी खूबी ही क्या रही।

जय नही शम्मी ! प्रेम सिफ फूल ही नही, पत्थर भी है। दो दिलो का नाज बनकर प्रेम जब हथेली पर उठाया जाता है तब वह फूल की तरह हल्का होता है, लेकिन उस फूल को हाथ मे रखे रहो तो थोडी देर बाद ही वह पत्थर की तरह वजनी बनने लगता है। जितना है—प्रेम का बोझ इसानी जिन्दगी के मिनट दो मिनट पर नही, बल्कि पूरी उम्र पर पडा करता है। मानती हो ?

शर्मिष्ठा चौंककर हाँ ?

जय घर चलो—ये चाद और तारे इकटठे होकर अब हमारे यहाँ बैठने की चर्चा कर रहे हैं—तुम्हारे पिताजी भी चिंता कर रहे हागे।

शर्मिष्ठा निश्वास दबाते हुए चलो। कल तुम इस समय बम्बई

मे अपनी फिल्मी स्टार दोस्ता के साथ हँसी मजाक कर रहे होगे—तब तक मुझे भूल भी गये होगे।

जय यह तुमने कैसे मान लिया ?

शर्मिष्ठा और नही तो क्या।

जय शम्मी, परसाल महाबलीपुरम और पक्षी तीर्थ में सैकडा-हजारो अनजान चेहरा मे तुम्हारा चेहरा बराबर मेरे मन मे झाँक जाता है।

शर्मिष्ठा हाँ जय ! यह अजीब बात है। इतन वर्षों मे म किसी और युवक के साथ यह अपनापन नही अनुभव कर पायी थी।

जय हो सकता है कि एक-दूसरे की बाहरी सुदरता ने हमे लुभा लिया हो।

शर्मिष्ठा बाहरी सुदरता ! नही जय। मैं तुम्हारे रूप पर नही रीझी। तुमसे अधिक सुदर व्यक्ति मेरे दोस्ता म हैं। मैं तुम्हारी कीर्ति पर भी नही रीझी। हमारे यहा बडे बडे नामी लोग आते ही रहते हैं।

जय तुम्हार पिता स्वय इतने नामी

शर्मिष्ठा जय !

जय हाँ।

शर्मिष्ठा मैंने तय कर लिया क्ल तुम बम्बई नही जाओगे।

जय हँसकर क्यो ?

शर्मिष्ठा क्यो मत पूछो जय। यह कहो कि नही जाऊँगा—शम्मी।

जय अच्छा नही जाऊँगा।

शर्मिष्ठा सतोष की साँस छोडती है

जय मगर शम्मी, यह कब तक चलेगा ? इसका परिणाम ?

शर्मिष्ठा परिणाम साफ है। मुझे एसा लगता है कि मेरे जीवन मे यह समय आ गया है जब स्त्री पिता का घर छोडकर अपना घर-बार बसाती है।

जय ठीक है। तुम्हारी उम्र अब विवाह के योग्य हो गयी है। तुम्हें विवाह के लिए योग्य वर भी मिल गया है पर तुम कसे कह

सकती हो।

शर्मिष्ठा कल तुमने बतलाया था कि पक्षी तीर्थ मे अनेक पक्षियो के रहते हुए भी तुम क्षेमकरी के जोडे को सहज ही मे पहचान गये थे।

जय लेकिन शम्मी, इतनी जल्दी क्या तुमने मुझे पहचान लिया? तुमने अभी मेरा एक ही रूप देखा है। तुम कसे कह सकती हो कि मैं

शर्मिष्ठा इन्सान जिसका मन देख लेता है उसके हर रूप को बगैर देखे ही देख लेता है।

जय तुम हठ कर रही हो शर्मिष्ठा। तुम्हारे पापाजी नाराज नही होगे ?

शर्मिष्ठा नाराज होकर भी वे तुमसे मेरा विवाह तो रोक नही सकते—मैं बालिग हूँ पढी लिखी हूँ, आजाद हूँ।

जय हँसता है शम्मी! तुम जिस तरह के फिल्मो के प्रेम को पसद नही करती वही अपने जीवन मे कर रही हो—खैर, मैं रुक जाऊँगा। मैं आज ही किसी दूसरे होटल मे चला जाऊँगा।

सुखान्त सगीत

दृश्य चार

डॉ० याज्ञिक जरा डाँटकर शम्मी, बारात तो चली गयी,फिर तुम्हारा वह फिल्म प्रोडयूसर यहाँ क्यो रुका हुआ है ?

शम्मी सकपकाकर जी वो—उनको कुछ काम है यहाँ इसलिए रुक गये।

डा० याज्ञिक हूँऽ और तुमको उससे क्या काम है ?

शम्मी सकपकाकर जी मुझे तो उनसे कोई काम नही है।

शम्मी मैं जरूर मिलूगी—देखू आप क्या कर लेंगे।

डा० याज्ञिक मैं पोटेशियम साइनाइट खा लूगा—और मरने से पहले दुनिया को यह स्टेटमेंट दे जाऊँगा कि अपनी नालायक बेटी के पाप का प्रायश्चित करने के लिए उसका बुड्ढा बाप आत्महत्या कर रहा है।

शम्मी घबराकर पापाजी आप इतन कठोर हैं य मैं नही जानती थी। रोते हुए आप अपनी जान देकर हमारे पवित्र प्रेम को कलकित बनाना चाहते है। रोती है

खट खट जूतो के जाने की आवाज—फेड आउट।

दृश्य पाँच

घडी की टिक टिक और आठ घण्टे

जय क्या बात है—आज अभी तक शम्मी नही आयी? पृष्ठ-भूमि मे प्रेम की धडकनें। पियानो और वायलिन। जरा हँस कर मैं भी किस नादानी मे—वही सादया पुरानी, स्त्री-पुरुष के प्रेम की कहानी, हँसता है ये प्रेम कम्बख्त फिल्म स्टोरी की तरह मेरे ही जीवन मे आ रहा है। क्या मैं सचमुच शर्मिष्ठा से प्रेम करने लगा हूँ? अब तक मेरे जीवन मे जितनी लडकिया आयी हैं उनसे यह अलग है। इसमे जरा भी शक नही। मुझे इसके साथ रहते हुए जितनी कल्पनाएँ और विचार मिले हैं उतन अब तक और किसी के साथ रहकर नही मिले। पत्नी ऐसी ही चाहिए जो पति को अपने कामकाज मे पूरी मदद दे सके।

पष्ठभूमि मे आल राइट आल राइट मिस्टर जयवद्धन

गुप्त पिक्चर बनाने से पहले अब प्रेम कर ही डालो मियाँ। क्या बात है क्यो नही आयी ? शायद बुडढे मिया ने रोक लिया हो। बुडढे मियाँ हमको देखकर खार खाते हैं। ताज्जुब है कि ऐसे बडे-बडे लोग भी यह समझने की मूखता करते हैं कि दुनिया मे उनके सिवा और कोई भला आदमी ही नही है।
हँसता है वाह रे बुड्ढे मियाँ, अगर सचमुच तुमने ही अपनी बेटी को यहा आन स रोका होगा तब तो वह शर्तिया ही अपने पलग पर पडी हुई फिल्मी हीरोइन की तरह ही टेसुए बहा रही होगी।—बस एक प्लेबक सॉङ की कसर होगी! हँसता है अच्छी बात है तो हम भी आज रात फिल्मी हीरो की तरह ही अपनी हीरोइन से मुलाकात करेंगे।

दृश्य छह

झिल्लियो की झनकार, कुत्तो के भौंकने की आवाज चौकीदार के पहरे की आवाज, सस्पेंस म्यूजिक का एक धमाका होता है, जसे कोई कूदा हो, कुत्ते का भौंकना और चौकीदार का आवाज देना 'कौन है'। फिर किसी के भागने की आवाज। दरवाजे की खटखट।

डा० याज्ञिक जागकर भारी आवाज में कौन है ? उठ करके दरवाजा खोलता है क्या है चौकीदार ?

चौकीदार मालिक खता माफ। उई मिलै आय हैं बेबी रानी से।

डा० याज्ञिक कौन ?

चौकीदार हजूर वहै जउन उइ दिन हजूर का नमक खाय गये हैं हियाँ। हम झटटे पहिचान गयेन, बाकी

दृश्य सात

जय धीरे धीरे जब मुझ पर चौकीदार की टॉर्च पडी तब एक बार ता घबरा गया कि अब पकडा जाऊँगा। मैं झट स गाडी की आड मे हो गया।

शर्मिष्ठा तुमने बडी हिम्मत का काम किया—मगर यह बेकार हिम्मत दिखाने की क्या जरूरत थी। पापाजी की जिद से मैं बाहर दो एक रोज भले ही न जाऊँ, मगर तुम जब चाहो मुझे फोन कर सकते हो।

जय शर्मिष्ठा की उत्तेजना को ठडा करने के लिए, थोडा नाटकीय होकर हाय री बेमुरोवत हीरोइन! मैंने तो समझा था कि फिल्मी हीरो की तरह स्टट मारकर तुम्हारे पास पहुँचूगा तो तुम बडी खुश होगी।

शर्मिष्ठा हँसकर खैर, तुम्हारी खातिर मैं खुश हो जाऊँगी। मगर आगे के लिए ध्यान रखना। मेरे लिए धोखाधडी या चालबाजियो की राह न लेना। मैं तुमसे सदा सीधी ही राह पर मिलूगी।

जय ब्रेवो डालिग। इतनी-सी बात कहकर तुमने मुझे जीवन भर के लिए अपना गुलाम बना लिया। तो फिर क्या तय रहा? आखिर कब तक हम ये लैला-मजनू बने रहगे!

शर्मिष्ठा रूठकर जाओ भी! तुम अन्पोइटिक नीरस हो। तुमस कुछ दिनो तक इतजार भी नही किया जाता।

जय हँसकर देवी जी, जब से अजन्ता, एलोरा, महाबलीपुरम

देखा—तब से प्रेम सम्बन्धी मेरी सारी धारणाएँ बदल गयीं। हम पहाडो को रस बनाकर पचा जानवालो के वंशज हैं। बम हमारे देश की आन है। इसलिए फिजूल के सेण्टीमेंटस मे न पडकर मुझे एक रात जान लेनी चाहिए—या तो तुम मिलो झटपट। मैं घरबारवाला होकर नयी लगन और उत्साह के साथ अपने काम मे लगू। और या तो आप का दद ही मिल जाय, मैं 'खुश रहो एहलेवतन' करके हारे हुए जुआरी की तरह अपनी बम्बई को लौट जाऊँ।

शर्मिष्ठा मैं पक्की बात कल सवेरे खुद तुम्हे आकर बता दूगी। और बात कुछ नही है—मुझे पापाजी से विदा लेनी है और यह कह देना है कि उनकी बडी से बडी धमकी भी अब मुझे अपने निश्चय से नहीं डिगा सकेगी।

जय अच्छा तो भई, बाई बाई टा टा[1] मैं अब सीधी राह फाटक से जाऊँ न?

शर्मिष्ठा हाँ, चलो मैं पहुँचा दू।

जय इसकी जरूरत नही। तो सवेरे मैं होटल मे तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा।

जाने की आवाज। दूर तक जाते जाते एकाएक तीन-चार परो की आहट। जय के मुह से हल्की सी 'बचाओ' की आवाज और गुत्थमगुत्था। जल्द ही परो का झुण्ड फेड आउट हो जाता है। मोटर कार स्टार्ट होकर जाती है।

दृश्य आठ

शर्मिष्ठा टेलीफोन पर हल्लो होटल एस्टोरिया ? आपके रूम नबर ११२ मे बाम्बे के फिल्म प्रोडयूसर मिस्टर क्या कहा चले गय ? रात मे बारह बजे कार मे अपना सामान लेकर चले गये ? टेलीफोन रखती है चले गये। किसकी कार पर—कहाँ चले गये ?

सस्पेंस म्यूजिक पैथास और एगोनी

शर्मिष्ठा तीन दिन बीत गये। जय ने मेरे साथ यह धोखा क्यो किया ? मैंने उनका क्या बिगाडा था—

चौकीदार बेबीरानी, अनवरसीटी ते ई खरीता आवा है तुम्हार।

शर्मिष्ठा अनवरसीटी ? ओ युनिवर्सिटी! लाओ अच्छा चौकीदार, उस दिन रात मे जो साहब मुझसे मिलने आये थे—

चौकीदार कौन शाहेब हजूर !

शर्मिष्ठा उत्तेजित होकर ए बनो मत। ठीक ठीक बतलाओ वो क्या कार पर आये थे

चौकीदार कार प आये हुइहैं। आपके हिया बेकार कौन आय सक्त है बेबी—

शर्मिष्ठा ईडियट ! लिफाफा फाडकर कागज निकालती है, खुश होकर चौकीदार, ये खत कौन लाया ?

चौकीदार घबराकर हजूर उइतो—

शर्मिष्ठा खैर कोई हज नही। लो ये पाच का नोट इनाम। मैं जाती हूं। तेजी से जाना

दृश्य नौ

शर्मिष्ठा *जय! तुम कहाँ चले गये थे जय?*

जय लम्बा किस्सा है शम्मी। लेकिन तुम्हारे पिताजी जैसे संसार प्रसिद्ध विद्वान् से मुझे ऐसी बेवकूफी की आशा न थी। अभी मैं अगर पुलिस या प्रेस म एक स्टेटमेण्ट दे दू तो बुरी तरह से उनकी बदनामी फैल जाय।

शर्मिष्ठा क्या किया?

जय मैं तुम्हारे कमरे से निकलकर ज्यो ही फाटक पर आया कि तीन चार आदमियो ने मुझे घर लिया और जबरदस्ती मुझे कार म बिठाकर ले गये।

शर्मिष्ठा कहाँ ले गये?

जय अरे सुबह झाँसी ले जाकर मुझे छोडा है।

शर्मिष्ठा और तुम्हारा सामान?

जय यही तो सब से बडा सबूत है मेरे पास। तुम्हारे पिता न खुद अपने नाम से टेलीफोन कर मेरा सामान मँगाया। उनके आदमी न दूसरे दिन जाकर मेरे होटल का बिल चुकाया है। मेरे पास ऐसी गवाहिया हैं कि वे फौरन आफत मे फँस सकते है।

शर्मिष्ठा खर जाने दो। पापाजी जब नाराज हो जाते हैं तो बुरी तरह बचपना—

जय अरे बचपने की हद कर दी। भला बताओ इनकी कार, इनके आदमी मैं अगर जरा भी शोर मचा देता तो यह बदनाम हो जाते। खैर! मैंने उस किस्से को भुला दिया। आओ हम लोग कोर्ट मे चल कर शादी कर लें।

शहनाई। फेड आउट

दृश्य दस

जय — माँ, ये देखो तुम्हारे घर मे आज कौन आया है !

माँ — मैं इह पहचानती नही बेटा।

जय हँसता है।

मा — पहचान गयी—पहचान गयी ! अरे, ये तो मेरे घर की लक्ष्मी है।

जय — शम्मी, मा के पर छूओ।

शर्मिष्ठा — पैर छूना असभ्यता और जहालत की निशानी है।

मा — ठीक है बेटी। ये जय जो है न मेरा—इसका बस चले तो ये मन्दिर बनवाकर उसमे मुझे ठाकुरजी की तरह बैठा दे।

जय — मेरी माँ मन्दिर मे प्रतिष्ठित हर देवी-देवता की मूर्ति से अधिक ऊँचे सत्य की प्रतिमूर्ति है।

माँ — अच्छा अच्छा रहने दे अपनी बातें। थकी माँदी आयी होगी बिचारी—

जय — नही माँ, हवाई जहाज मे थकान कहाँ।

माँ — लो तू हवाई जहाज मे इसे ब्याहने गया था और मुझे बतला भी नही गया।

जय — गया तो दूसरे की बरात में था माँ, शादी अपनी कर लाया—

माँ — अरे दुष्ट तू नही मानेगा जूते पहनकर मेरे पूजा के कमरे म जाता है।

जय — हँसकर जा नही रहा था माँ, शम्मी को दिखला रहा था कि मेरी माँ किन किन बातों से चिढती है, और अपने इकलौते बेटे को भी गालियाँ देने मे नही चूकती जिसे सारा देश फूलमालाए पहनाते नही अघाता। ह ह ह ह

नौकर मांजी, अपनी कोठी के बाहर एक बच्चा पडा है।

मा-शम्मी बच्चा !!

जय तुम दौडकर कहा जाती हो माँ !

बच्चे के रोने का स्वर धीरे धीरे क्लोज अप मे आता है। दो एक आदमी चर्चा करते हैं।

एक पाप करती हैं और फिर बच्च का इधर उधर छोड जाती है।

शर्मिष्ठा हाय हाय—कैसा रो रहा है बेचारा ! देखकर दया आती है।

जय तो उसे उठा क्यो नही लेती शम्मी !

शर्मिष्ठा काला है, किसी नीच कौम का बच्चा——

माँ काला ! अरे य तो कृष्ण कन्हैया है—इसकी अभी कौम क्या! आदमी का बच्चा है।

उठा लेती है। माँ बच्चे को लाड करती है ना ना बेटा ना, चुप हो जा मेरे लाल, मेरे कृष्ण कन्हाई। बच्चा चुप हो जाता है।

जय किसी स्त्री-पुरुष मे प्रेम हुआ होगा—तब प्रेम दोनो के दिलो म पवित्र होगा। लेकिन उस पवित्र प्रेम का परिणाम ये नन्ही सी नयी जान। य बच्चा पाप हो गया। हूँ कसी विडम्बना है!

शर्मिष्ठा उँहूँ। छोडो इन बातो को। मुझे तो अचरज इसी बात का हो रहा है जय कि माँ को इस नीच कौम के लावारिस बेटे को उठाते और अपनी छाती से लगाकर उसे चूमते हुए सकोच क्या नही हुआ।

जय सकोच ! किस बात का ? छोटी कौम का बच्चा है, काला है इसलिए तुम ये कह रही हो शम्मी तुम !

शर्मिष्ठा मैं क्या कोई भी शरीफ और पढ़ा लिखा आदमी—'मन

ऑफ कल्चर' संकोच करेगा।

जय — मैन आफ कल्चर ! तो यही है तुम्हारी कल्चर की परिभाषा ! शम्मी, आदमी काला हो या गोरा, ऊँच नीच किसी कौम का हो—पहला सवाल यह उठता है कि उसमे जो जीव है वो छोटा बडा है—या सब मे एक समान है। मैं अपनी अगली फिल्म इसी विषय पर बनाऊँगा, उसका नाम होगा—पहला सवाल।

शर्मिष्ठा — तो क्या तुम समझते हो कि मैं समाज और मानवता की सेवा नही करती ? तुमने मुझे समझा नही जय—तुम देखोगे कि थोडे ही दिनों मे मेरे और तुम्हारे इस घर मे कितनी सामाजिक और सास्कृतिक सेवाओ के प्लान बनते है।

फेड आउट

दृश्य ग्यारह

शर्मिष्ठा — सेठ किशनलालजी, आप जब उस देहाती से मिलेंगे, बातें करेंगे तब आपको रियल इन्स्पिरेशन मिलेगा। अरे हमलोगो को अब तक मालूम ही न था कि हमारे शहर क पास ही कल्चर का इतना एन्शेण्ट खजाना है।

किशन — आहा ! एन्शेण्ट। यानी विगत। विगत यानी कि विगत वैभव। भारत का विगत वैभव। आशा ! मैं धन्य हूँ। आप धन्य हैं शर्मिष्ठा देवी जी जो विगत वैभव की बातें करती हैं—वरना—नहीं नही—अन्यथा अन्यथा जाश मे अन्यथा पाश्चात्यो न हमारी शिक्षा प्रणाली को ऐसा चौपट, नही-नही भ्रष्ट कर दिया है कि हमारा प्यारा विगत वभव ही हमस छिन गया है। हाय ! हमारी दासता ने हमारे देश प्रेम के सस्कार छीन लिये हैं। हाय लेकिन

नहीं नहीं—परन्तु हम अपने उस विगत वैभव को वापस लाना—नहीं नहीं पुनः जीवित कराना है।

शर्मिष्ठा आप तो लेक्चर देने लगते हैं किशनलालजी!

सिन्हा किशनलालजी कभी सीधी बात तो कर ही नहीं सकते। सदा लेक्चर देते हैं। लेक्चर देते हैं और अपनी तारीफ करते हैं। बस यही दो काम हैं इनके। ह ह

किशन लेक्चर! नहीं भाषण करता हूँ।—तारीफ नहीं प्रशंसा करता हूँ। प्रशंसा करने ही से विगत वैभव महान होता है। हमारे भारत का विगत वैभव महान है और मैं यानी कि—नहीं नहीं अर्थात सेठ नहीं नहीं श्रेष्ठि किशनलाल—नहीं नहीं-नहीं।

शर्मिष्ठा रुक क्या गये सेठजी?

किशन बात—नहीं नहीं—बात यह है देवीजी कि विगत वैभव में किशन नहीं कृष्ण था और लाल भी नहीं था रक्ताभ था। इसलिए मेरे समान विगत वैभव के पुजारी को अपना नाम श्रेष्ठि कृष्ण रक्ताभ—शुद्ध यानी कि अर्थात् शुद्ध भारतीय संस्कृति—

सिन्हा भई किशनलाल नाम न बदलना वरना, हम तुम्हारा साथ छोड़ देंगे।

शर्मिष्ठा और किशन या लाल या सेठ ये सब विगत वैभव में बहुत-से लोग बोलते थे। मैं पिछले साल दक्षिण भारत गयी थी, वहाँ पता चला कि सेठ को वहाँ चेट्टि बोलते हैं—श्रेष्ठि से चेट्टि भी विगत वैभव में ही हुआ। *हँसती है—दोनों हँसते हैं*

किशन ठीक है जब देवीजी ने अपने कोमल कोमल मुखारविन्द से यह कह दिया—नहीं नहीं कथित कर दिया तो मैं विगत वैभव का पुजारी अब सेठ किशनलाल ही बना रहूँगा। नहीं नहीं निर्मित रहूँगा, निर्मित रहूँगा।

चाय की खनक

शर्मिष्ठा लीजिए चाय आ गयी।

सिन्हा हें ह हें देवीजी, आपकी चाय म जाने क्या बात होती है कि

किशन चाय ! च च-च चाय ! द-द-देवीजी, चाय तो चीनी वस्तु है और आप देश प्रेमी होकर विदेशा शत्रु—

सिन्हा अजी सेठ जी, यह हमारी वीरता और देश प्रेम का पक्का सबूत है कि हमलोग चाय में चीनियो को घोल के पी जाते हैं।

किशन हाँ, सत्य बात है बैरिस्टर साहब—नही-नही—न्याय-विनेता महोदय ! मैं भी अवश्य चाय पीऊँगा—नही नही पान करूँगा पान करूँगा। पर चाय—चाय को विगत वैभव मे क्या कहते होगे देवीजी ?

शर्मिष्ठा आपके विगत वभव मे चाय कहाँ थी सेठजी !

किशन यह नही हो सकता देवीजी। जब आज हमारे अ दर—नही-नही—अ तर मे चीनियो के प्रति घृणा है तो विगत वैभव मे भी अवश्य अवश्य होगी। मेरा ख्याल—नही-नही—विचार है कि विगत वभव मे चाय को चाह कहते होगे।

सिन्हा साहब, ये चाह लफ्ज तो नया लगता है।

शर्मिष्ठा अजी शुद्ध सस्कत का है सेठजी, आप निश्चिन्त रहिए।

किशन सस्कृत है ! अरे ये ऐसा सरल शब्द सस्कृत का है और मुझे मालूम ही न था। आज ही प्रस मे स्टेटमेण्ट, नहीं-नही—मुद्रणालय म वक्तव्य देता हूँ कि हमारा विगत वैभव जटिल भी था और सरल भी था।

बरिस्टर सेठजी ने अखबार मे अपनी तस्वीरें और बातें छपाने का रास्ता अच्छा निकाला है। विज्ञापन बनाकर छपा देते हैं। हँसी

सिन्हा आइए आइए जयवद्धनजी ! नमस्ते !

शर्मिष्ठा आज तुम्हारी शूटिंग जल्दी खत्म हो गयी, जय ! लो चाय

पियो।

बैरिस्टर जय साहब, आजकल कौन सी फिल्म बना रहे हैं आप ?

जय 'पहला सवाल'।

किशन जी, जयवद्धनजी, इसको आप प्रथम प्रश्न नाम से क्यों नहीं बनाते—नहीं-नहीं निर्मित करते।

नौकर हुजूर, वो दिहाती जिसे आपने बुलाया था आ गया है।

जय कौन देहाती—शम्मी ?

शर्मिष्ठा अरे यहाँ से पचीस मील दूर पर वह जो गौतम बुद्ध से भी पाँच सौ बरस पुराने खडहर निकले हैं ना—उसी ग्रामीण आदमी—

किशन आहा! उसी विगत वभव के ग्राम का निवासी ग्रामीण! कहाँ है ? उसे शीघ्र शीघ्रातिशीघ्र बुलाइए—मैं उसके चरण पखारूँगा। नहीं-नहीं—प्रक्षालित करूँगा!

बरिस्टर शर्मिष्ठा देवी, उस गँवार को यहाँ कहाँ बुलायेंगी ?

सिन्हा हांआंऽ यहाँ वो सूट नहीं करेगा!

किशन ठीक है ठीक है। विगत वैबव का तो है पर ग्रामीण और अन्य सब महानुभाव—

बरिस्टर खैर होगा। हाँ तो जय साहब, आप ये फिल्म—ये—'पहला सवाल' है क्या ?

जय यही कि एक दरिद्र देहाती और श्रीमती शर्मिष्ठा देवी, सेठ जी, बैरिस्टर सिन्हा इन सब में क्या एक ही जान नहीं है। इन सब के साथ क्या एक ही जैसा बर्ताव न करना चाहिए ? हर मनुष्य को उसकी मूलभूत इज्जत देना हमारा कर्त्तव्य है या नहीं—ये मेरा पहला सवाल है।

दृश्य बारह

शर्मिष्ठा जय तुम आजकल बहुत उखड़े रहते हो। क्या बात है?

जय हाँ शम्मी मैं तुमसे छिपा न पाऊँगा। बेहद उखड़ा हुआ हूँ। मुझे इस सारे नकली जीवन से नफरत हो गयी है। झूठी मानवता, झूठा देश प्रेम, झूठी मान्यताएँ। शम्मी—आओ कहीं भाग चलें। इस भीड़ और झूठी तारीफों से भरी हुई दुनिया से कतराकर कहीं एकान्त में छोटा-सा घर बनायें। और एक-दूसरे के सुख से, जीवन को भर दें। अब यहाँ अच्छा नहीं लगता।

शर्मिष्ठा यहाँ तुम्हें क्या अच्छा नहीं लगता? हमारा इतना सुन्दर घर है, हमारे पास लाखों रुपया है। शान शौकत है नाम और शोहरत है। यहाँ हमें किस बात की कमी है।

जय हाँ। ये सब चीजें तो हैं, इतनी हैं कि देख-देखकर दूसरों को जलन होती है। पर इस सफलता से अब तो मुझे भी जलन होती है शम्मी। मुझे घर चाहिए होटल नहीं, मुझे घरवाली चाहिए झूठी कल्चर की साझीदार नहीं, मुझे पत्नी चाहिए जो मेरे बच्चों की माँ बन सके।

शर्मिष्ठा नाराज होकर तुम मुझे रोटियाँ टीपनेवाली और बच्चे-कच्चों की झंझट से घिरी रहनेवाली बहू बनाना चाहते हो। क्या यही तुम्हारा प्रेम है, जय? इन विचारों को मन में पाल कर क्या तुम अपने को माडर्न पति समझते हो? तुम चाहते हो मैं घूँघट काढ़कर घर में बैठूँ और तुम बाहर नाम और शोहरत पैदा करो? यह नहीं हो सकता। मैं भी नाम और शोहरत चाहती हूँ।

जय तुम्हें नाम और शोहरत देने के लिए पिछले दो वर्षों में मैंने

काई कमर नही उठा रक्खी, शम्मी। तुम अपनी इस समाज सेवा मे मनमाना खच करके ही नाम कमा रही हो।

शर्मिष्ठा संयत स्वर मे मैं इससे इनकार नही करती। लेकिन क्या ये नाम और शोहरत तुमने किसी अयोग्य स्त्री को दिया है?

जय नही।

शर्मिष्ठा क्या एक बार नाम और शोहरत देकर तुम मुझे जीवन भर के लिए अपनी दासी बना लेना चाहते हो? अपने एहसान के बोझ से मुझे दबा देना चाहते हो?

जय नही शम्मी, नही। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारा और नाम हो—तुम्हे सारा देश पूजे।

शर्मिष्ठा तब फिर ये क्यो कहते हो कि हम लोग कही एकान्त म भाग चलें!

जय इसलिए कि यहाँ सबकुछ होने पर भी मेरे मन को शान्ति नही है। यहाँ हमें उस प्रेम के दशन नही होते जिसके कारण हम एक दूसरे के जीवन-साथी बने—हमे—

शर्मिष्ठा जय तुम्हे याद है—तुमने एक बार कहा था कि लैला मजनू की तडपन को ही दुनिया महान् प्रेम मानती है, प्रेमी प्रेमिका एक दूसरे की आँखो म आखें डालकर बठे रहे, एक दूसरे की भावनाभरी बकवास को सुनते हुए, एक दूसरे के बालो और गालो को सहलाते रहे—केवल इसी को प्रेम का असली रूप मानकर दुनिया दीवानी हो रही है।

जय अब भी मानता हूँ कि यही प्रेम नही। लैला मजनू साथ-साथ घर चलाते हुए दुनिया के सघर्षों म एक-दूसरे का बल बनें—मैं अब भी इसी को महान् प्रेम मानता हूँ।

शर्मिष्ठा तो क्या हमलोग इस तरह नही चल रहे? तुम्हारे व्यापार मे, कला म, कीर्ति म मेरे आने से क्या चार चाँद नही लगे?

जय मानता हूँ।

शर्मिष्ठा तब फिर?

जय बाहरी दुनिया म तुम मेरी खरी जीवन सगिनी हो—वाकिंग

स्टिक की तरह लेकिन हमारा घर नही है।

शर्मिष्ठा घर और कैसा होता है?

जय जहाँ प्रेम का निवास होता है जहाँ घनी छाँव

शर्मिष्ठा प्रेम

जय बोलो मत। मुझे कह लेने दो शम्मी।

शर्मिष्ठा बहुत सुन चुकी, तुम्हारी बातें। अब और न सुनगी। मैं तुम्हारे लिए अपनी महत्त्वाकाक्षाओ का खून नही करूगी। पापाजी चाहते थे, विज्ञान के क्षेत्र मे मादाम क्यूरी की तरह नाम करूँ। विज्ञान के क्षेत्र म मेरी रुचि नही थी पर कला के क्षेत्र म नाम चाहती हूँ। अपनी अमिट छाप छोडना चाहती हूँ। मैं तुम्हारे बच्चो की माँ नही बनना चाहती, मैं तुम्हारा घरबार सम्हालने वाली दाई नही बनना चाहती।

जय पर मादाम क्यूरी क्या बाल-बच्चेदार नही थी क्या क्यूरी दम्पति के पास साइन्स की लबोरेटरी के अलावा घर नही था? शम्मी, हम किसके लिए ये नाम शोहरत और रुपया कमा रह है? पहले मैं सोचता था कि अच्छी फिल्म बनाकर मैं अपन देश की जनता का भला कर रहा हूँ। आज मेरे साथ यह भावना भी नही। आज मैं यह महसूस करता हूँ कि दूसरे व्यापारिया की तरह मैं भी अपने देश की जनता के दुख सुख से मुनाफा कमा रहा हूँ। यह नाम जो हमे हासिल हो रहा है, वह हमारे अच्छे विचारो का परिणाम है। पर ऊँचे सिद्धात ऊँची कला क्या दूकान के शो-केसेज मे सजाकर बिक्री और मुनाफा कमान की चीज है। मुझे ये ठाट बाट, कीमती फर्नीचर, बँगला मोटरें और तडक भडक नही चाहिए। मुझे एक घर चाहिए जिसमे दिन भर की कडी मेहनत के बाद शाम को हम उस प्रेम और शाति का अनुभव कर सकें जिसका हम अपनी फिल्मो म मुनाफा कमाने के लिए प्रोपगैंडा करते हैं। मुझे बच्चे चाहिए जो मेरे तुम्हारे प्रेम की नयी लहर बनकर हमे अपनी मेहनत की कठिन साथकता प्रदान करें।

मुझे असलियत चाहिए, ढाग नही। मैं अब ये बरदाश्त नही कर पाता—मैं घटा जा रहा हूँ—घुटा जा रहा हूँ।

सगीत

मजु पानी पीजिएगा जय साहब, थोडा-सा ले लीजिए। थक गए हो तो आराम कीजिए। मैंने टेप रिकार्डिंग बन्द कर दिया है।

जय नही मजू, मैं थका नही, मेरी आवाज़ सुन रही हो! थकान सच पूछो तो उतर रही है। स्मृतियो को ठडे-ठडे सँजाते हुए मेरी विचारधाराएँ निमल हो रही हैं। जो बातें इकठठी होकर एक घुटन और गुस्से के बन्द चक्कर मे उलझ उलझकर मुझे उलझा रही थी, वह तुम्हारे व्यवहार से शाति पाकर वही उलझी तस्वीरें अब साफ हो रही हैं। तुम मुझस आयु मे छोटी हो मजू पर मेरी माँ हो—श्री रामकृष्ण परम हस की जगदम्बा जैसी

मजु और आपकी माँ का क्या हुआ जय साहब! यह तो आपन बतलाया ही नही।

जय मेरी मा—मेरी मा—

सगीत पूजा की घटी। माँ आरती गा रही है। जूते की खटखट।

माँ वह मेरे पूजा घर म जूते पहनकर—

शर्मिष्ठा ओफ माँ, तुम्ह हर समय बस बेकार की बातो का ही होश रहा करता है। छूत पाक और ये और वो। लाओ ये सब पूजा की घटी शख वगैरा मुझे दो। आज हमारे नाटक का ग्रण्ड रिहसल है कल शो पूरा होगा। रामसरन ये सब पूजा का सामान और ठाकुर जी का सिंहासन उठाकर गाडी पर

रक्खो—

मा मेरे ठाकुर तेरे नाटक मे नही जायेंगे वहू !

शर्मिष्ठा मा देखो मैं ये सब तुम्हारे मन की भक्तिभाव की बातें तो समझती हूँ, पर नाटक का मामला—शो का मामला है। अब इस वक्त कहा से लाऊँ ?

माँ मेरे ठाकुर नही जायेंगे वहू !

शर्मिष्ठा ठाकुर ठाकुर ठाकुर **ठोकर। पीतल की हल्की भारी खनक** लो मरो अपने ठाकुरो को ले के। ये ये-ये मा है जिन्हें अपनी बहू की मान मर्यादा से अधिक पीतल पत्थर के चोचले प्यारे हैं। पत्थर कही की। मैं आज से तुम्हारा मुह भी नही देखना चाहती। **खट खट खट गई। सगीत**

जय मेरी पढी लिखी सभ्य सुसस्कृता समाज सेविका पत्नी ने मेरी गगाजल जसी माँ को न पहचाना। वह पहचान भी नही सकती थी। उसके जिस मुह को देखना भी नही चाहती थी जिसकी अमूल्य भावनिधि उसके ठाकुर थे। वह जिस तरह निममता से ठुकराकर चली गयी उसके बाद मेरी माँ और उसके ठाकुर फिर दुनिया मे रह ही कसे सकते थे ? बाग के कुएँ मे अपने ठाकुरो को लेकर **डूबने का शब्द**

जय मेरे लिए एक पत्र छोड गयी थी। लिखा था—

माँ बेटा, मैं पुराने जमाने की थी। मैंने इन पीतल के बालमुकुन्द भगवान की सेवा कर करके ही तुम्ह और बहू का—सारे जग के बच्चो को प्यार करना सीखा था। मेरी पढी लिखी बहू न समझी। अब समझ ले बेटी—पुराने कूडे के नीचे कही-कही चन्दनवन भी छिपा मिलता है। हर कूडे को कूडा न समझ, पहले उसके चन्दनवन से सदा खिले रहनेवाले पारिजात फूलो को चुन ले। तुम दोनो को आशीर्वाद दिये जाती हूँ। फूलो फलो, सुमति पाओ।

सगीत

दृश्य तेरह

डा० याज्ञिक मैं शुरू से ही कहता था, कि ये आर्टिस्ट वार्टिस्ट पसा और यश पा जाने से ही शरीफ और कुलीन नही हो जाते। मैं जानता था शम्मी कि तुम्हे कभी न कभी गलती मालूम होगी। आखिर वह जाहिल जलील बुढिया मेरी मासूम बच्ची पर कलक लगाकर ही मरी ना। सर देवीशकर याज्ञिक की बेटी को कलक लगा गयी। खानदानी खान दानी हैं और मामूली मामूली! ऐण्ड द टविन शल नवर मीट।

शर्मिष्ठा *हाँ पापाजी यह बात सही तो है मगर जय ऐसे नही हैं।*

डा० याज्ञिक क्या ऐसे नही हैं। मुझे—मुझे क्या नाम है के कल्चर और एथिक्स समझा रहा था। मैंन तो नागरिकता के उसूलो के तकाजे स अपनी बेटी की सास का शोक प्रकट करने के लिए यहाँ आना उचित समझा था वरना ऐस कमीनो के यहाँ और सर देवीशकर याज्ञिक आत!

जय तेज आवाज मे महामहिम श्रीमान सर देवीशकर याज्ञिक! आप मेरी मा की मातमपुर्सी मे आये, मेरी पत्नी के पिता हैं—इस नाते एक बार और प्रणाम करता हूँ—और अब—रामसरन, इस *खानदानियत की बदबू* इस जलील बूढे को धक्का देकर मेरे घर से बाहर निकाल दो।

डा० याज्ञिक मुझको धक्के दिलवाएगा! यह हिम्मत! गोली चलने की आवाज

जय आह! बाँह घायल हुई है।

शर्मिष्ठा *जय!*

संगीत

दृश्य चौदह

शर्मिष्ठा सेठ किशनलाल जी मैं इस समय एकान्त चाहती हूँ।

किशन एकान्त देवी जी! विगत वैभव म सदा एकान्त रहता है और नहीं-नहीं अत, जहा मैं रहता—नहीं-नहीं निवास करता हूँ वहा एकान्त वास—

शर्मिष्ठा रामसरन, साहब क्या कर रहे हैं?

नौकर कुछ लिख रहे हैं मेम साहब।

शर्मिष्ठा ठीक है तुम जाओ, अच्छा तो सेठजी इस समय—

किशन क्या! इस समय आप देश-सेवा, समाज सेवा नहीं करेंगी देवी जी?

शर्मिष्ठा नहीं इस समय पति सेवा करूँगी।

अल्प विराम।

खटखट दरवाजा खटकता है।

जय कौन है?

शर्मिष्ठा खालो जय!

जल्दी जल्दी कागज पत्र समेटने की आवाज।

शर्मिष्ठा दरवाजा बन्द करके क्या कर रहे थे?

जय अपनी तकदीर पर अफसोस कर रहा था।

शर्मिष्ठा सुनो जय! मैंने तुम्हारी बातों पर बहुत गौर किया।

जय अच्छा किया।

शर्मिष्ठा नाराज न हो। मैं तुम्हारे लिए खुशखबरी लेकर आयी हूँ यह तय किया है कि कुछ रोज के लिए हम कहीं बाहर चलेंगे। मैंने तुम्हारी बातो पर ठण्डे दिल से गौर किया। मैं समझती हूँ, तुम क्या चाहते हो। तुम्हारी घर, बच्चो और शांति की भूख दरअसल और कुछ नहीं—महज एक छुट्टी की जरूरत है। मैं भी छुट्टी चाहती हूँ। मैं भी महसूस करती हूँ कि यह

नाम धन और वैभव ही सब-कुछ नही। हम एक-दूसरे का एकान्त साथ चाहिए—जहाँ एक-दूसरे की ही चिन्ता करें और कोई चिन्ता न रहे। प्रेम ऐसा पौधा है जो बाग मे अकेला खिलना ही पसन्द करता है दूसरे फूलो, पौधो और पेडो के झुड मे खो जाना उसे पसन्द नही। प्रेम वह पक्षी है जो मुक्त आकाश मे उडना चाहता है—बस उडते ही रहना चाहता है।

जय प्रेम !

शर्मिष्ठा बस अब प्रेम की परिभाषा रहने दो जय। मैं तुम्हारे लिए सब-कुछ छोडकर तुम्हारे साथ साथ प्रेम का आनन्द लूगी। हम पक्षियो की भाति देश भर मे उडे उडे फिरेंगे। पहले राजस्थान *बस रेल और हवाई जहाज की आवाज* आबू, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, चित्तौड उदयपुर, जयपुर।

जय शासको की ऐतिहासिक प्रेमिका सदा सुहागिन दिल्ली,—प्रेम का अमर प्रतीक आगरा का ताजमहल, रासविहारी राधाकृष्ण की लीलाभूमि मथुरा, वृन्दावन गोकुल, नन्दगाव, गोवर्द्धन, कुरुक्षेत्र पानीपत हस्तिनापुर के खँडहर,—अमृतसर, श्रीनगर पहलगाव।

पार्श्वसगीत बजता रहता है।

जय अब ? अब कहाँ की सैर होगी हुजूर ?

शर्मिष्ठा अब अब हम अमरनाथ की ऊँचाइयो तक चलेंगे।

जय चलिए। वसे मेरा तो ख्याल था कि सीधे माउण्ट एवरेस्ट पर चढ चला जाय और वहाँ से सीधे स्वर्ग को—उससे बढकर ऊँचाई भला और कौन सी होगी।

शर्मिष्ठा *हँसकर* तुम तो मजाक करते हो। देखो, घूमने मे कितना मजा है। इतने महीनो से हम साथ साथ अकेले हैं—आजाद होकर घूम रहे हैं। ओह कितना सुख है ! तुम सच कहते थे जय नाम कीर्ति, धन वैभव कमाने मे प्रेम खो जाता है।

जय मैंने यह तो कभी नही कहा था।

शर्मिष्ठा मगर तुम्हारा मतलब यही था। मैं जानती हूँ और अब तो अच्छी तरह अनुभव भी कर रही हूँ। प्रेम एक लम्बी ऊँची उडान है और कुछ नही। प्रेम के पखो म सदा मुक्ति बँधी रहती है। क्यो ठीक कहती हूँ या नही?

जय सवा सालह आने ठीक धर्मावतार!

शर्मिष्ठा इस तरह सास क्यो भरते हो?

जय कुछ नही हुजूर। आपके प्रेम का पोटमण्टो उठाते उठाते जरा दम फूल आया है।

शर्मिष्ठा नानसेन्स। हम नित नयी जगहो की सैर करते हैं—नित नयी बहार देखते हैं, इसमे कही दम फूलता है! कितनी ताजगी है, कितना मजा है!

'शिवोऽहं! शिवोऽहं!' समवेत ध्वनि।

जय अमरनाथ!

शर्मिष्ठा ओह, मैं कितनी खुश हूँ। आज मैं भारतमाता के मुकुट मे कोहिनूर स चमकते हुए हिमाच्छादित अमरनाथ की ऊँचाई पर पहुँचकर अपन देश के दशन कर रही हूँ। गुजरात, असम म आशीर्वाद के लिए बाँहे पसारकर हिमालय की धवल केश-राशि बिखराये भारतमाता खडी हैं। इस ऊँचाई पर पहुँचकर विनय के भाव आ रहे हैं। ओह, यही ऊँचा आदश है, यही प्रेम है। आओ जय, हम अब यहाँ से सीधे कन्याकुमारी चलेंगे। मैं तुरन्त माता के चरणो मे पहुँच जाना चाहती हूँ।

जय हुजूर, मरे पास अलादीन का चिराग नही है वरना चट से घिसकर तुरन्त पहुँचा दता!

शर्मिष्ठा बनकर मान से जय देखो, ऐसी पवित्र जगह पर मजाक अच्छा नही लगता। हम श्रीनगर चलकर चाटड प्लेन से सीधे त्रिवेन्द्रम चलेंगे और वहाँ स कन्याकुमारी। मेरे मन मे इस समय जो महान् भावना जाग रही है, उसे अनुभव मे लाकर दखना चाहती हूँ।

जय गम्भीर होकर शर्म्मी एक बात कहूँ! केवल उडानें भरते

रहना ही प्रेम नही है। उदन का अय होना चाहिए, जीवन का उद्देश्य होना चाहिए।

शर्मिष्ठा झुंझलाकर तुम भी अजीब हो! किसी तरह भी चन नहा। जब मैं तुम्हारे जीवन उद्देश्य म मदद द रही थी तब तुम नाराज थे। अब तुम्हार साथ सिफ तुम्हारी हाकर रह रही हूँ, तब भी तुम सन्तुष्ट नहीं। आखिर तुम चाहत क्या हो?

जय शात थके स्वर मे कुछ नही।

शर्मिष्ठा पापा जी सच कहते थे—कलाकार थाली के बैंगन की तरह इधर से उधर लुढकना जानता है। उसका कोई सिद्धान्त नहीं हाता। कोई राह नही होती। श्रीनगर पहुँचते ही हवाई जहाज का इन्तजाम करो। तुम मेर साथ चुपचाप घूमत रहा। जीवन का अनुभव लो। अभी तुम कुछ नही जानत।

संगीत

दृश्य पन्द्रह

समुद्र की लहरें

शर्मिष्ठा माँ तेरे चरण पखारने के लिए महासागर अपने दोना छोटे भाई महादधि और रत्नाकर को लेकर कितन दीवानेपन के साथ आता है। पानी को धुएँ की तरह उडाती हुई लहरें, दूर से मचलती आती लहरें, लहरा पर लहरें दौडती हैं, जाश पर जोश चढता है और यह सब कुछ माँ के चरणा पर निछावर होने के लिए कितना ऊँचा आदश है। यही प्रेम है, सुन रह हा जय, यही प्रेम है।

जय ये ऊचे आदश जब तक धरती पर नही आयेंगे, तब तक कौडी

काम के नही। तुम लहरो की तरह अपनी भावनाओ को तट पर उछाल कर फिर उन्ह अपने ही मे समेट ले जाती हो। यह प्रेम नही है शम्मी। तुम जबान से निछावर होने की बात करती हो, सिद्धात से प्रेम के समपण और उसकी विनय को पहचानती हो, पर अमल मे कहाँ लायी। तुम झूठी हो, ढोगी हो, दम्भी हो और तुम्हारे ये

शर्मिष्ठा चीखकर जय! आज तक किसी न मुझे मेरे मुँह पर झूठी कहने का साहस नही किया था। मैं जो सोचती हूँ, वही करती हूँ। मैं धोखाघडी, चालबाजी की राह नही जानती, सीधी राह चलती हूँ।

जय हरगिज नही। पहले मैं भी यही समझता था। इससे प्रभावित हुआ था, पर आज अच्छी तरह समझ गया कि तुम अपने को धोखा देती हो और मुझे भी। तुम मेरी सह धर्मिणी बनकर मेरे कर्मक्षेत्र की सहायक बनती हो, इसलिए कि तुम जानती हो कि सब कुछ तुम्हारा है, तुम मेरी प्रेमिका बनकर सैरो मे डोलती हो, इसलिए कि इस बहान भी तुम मेरे प्रेम के जल से अपन दम्भ की बेल सीच रही हो। मुझे क्या मिलता है—यह पहला सवाल!

शर्मिष्ठा तुम्हारे पहले सवाल को मैं अब खूब समझती हूँ। तुम चाहते हो कि मैं पुरानी औरतो की तरह गृहस्थिन याने घर की दासी बन जाऊँ और तुम हर समय मुझसे सेवा लेते रहो। तुम ऊँचे और मैं नीची रहूँ—क्यो?

जय अगर मैं अपने लिए एक बात को अयाय मानता हूँ, तो तुम्हारे लिए भी जरूर मानता हूँ। मैं न तुम्हारा दास बनना चाहता हूँ और न तुम्ह दासी बनाना चाहता हूँ।

शर्मिष्ठा तब फिर तुम चाहत क्या हो?

जय वही विचार जो अमरनाथ से लेकर कयाकुमारी तक तुम्हारी बहक मे फूटे हैं—समपण! और जब तक तुम अपने ही शब्दो का सच्चा नही कर सकती तब तक तुम झूठी हो, दगाबाज

हो ! मैं अब तुम्हारा साथ करके भर पाया। ज रामजी की !

शर्मिष्ठा हमेशा के लिए नाता तोड रहे हो ?

जय फिलहाल बम्बई जाऊँगा। काम म मन लगाऊँगा।

शर्मिष्ठा मुझसे सदा के लिए नाता तोडकर ही काम मे मन लगा सकोगे, इससे पहले नही ?

जय अच्छी बात है बम्बई नही जाऊँगा पर अब तुम्हारे साथ भी नहीं रहूँगा।

शर्मिष्ठा पापा जी सच कहते थे। इन जलील कलाकारा के साथ जीवन बाँधकर यही फल मिलता है। दुनिया हमारे आदश प्रेम की तारीफ कर रही है लेकिन जब उसे ये पता लगगा

जय जब ये पता लगेगा कि एक सच्चा कलाकार तुम सफेदपोश काले दिलवालो के समाज म घुसकर तुम्हारी असलियत

शर्मिष्ठा यू ब्रूट जगली, शतान कोई चीज फेंकती है जिसके गिरने पर चकनाचूर हो जाने का प्रभाव स्पष्ट हो

जय चोट लगने पर शम्मी !

जय उसी समय से मेरी सारी दुनिया खो गयी, बदल गयी ! जयवद्धन पागल कहलाने लगा। लेकिन क्या जयवद्धन पागल है मज ?

मजु नही जय साहब, आप पागल नही बल्कि दोहरा जीवन बनाने वाला य सफेदपोशी का जमाना ही पागल है। आदमी अपनी किसी हैसियत से छोटा बडा नही बनाया जा सकता। आदमी हर हालत मे

जय आदमी है—हम देशसेवक हो अफसर हो, कलाकार हो या वैज्ञानिक।

शर्मिष्ठा तुम कोई भी हो, निहायत जलील हो ! तुम मेरे अमर निमल

प्रेम को ठुकराकर इस नीच नस पेशे की औरत से यहाँ बैठे प्रेम का नाटक कर रहे हो! मैं तुम्हारे इस नाटक का अन्त

गोली चलने की आवाज । मजु की चीख गूंजती है।

जय मजु शम्मी शोक संगीत ये क्या किया शम्मी? ये क्या किया तुमने? मेरी जगदम्बा को दूसरी बार मार डाला।

फूट फूटकर रोता है

••

सुहाग के नूपुर

ईसा की पहली शताब्दी में महाकवि
इकगोवन रचित 'शिलप्पादिगारम्'
महाकाव्य के कथानक का आधार लेकर

उदघोषिका (बद्ध स्वर) एक था राजा, एक थी रानी। राजा का नाम मन और रानी का नाम था कहानी। मन सैलानी बडा चचल। पल छिन मे अपनी राजधानिया बदलता, छलाँग मारते लाखो युग और लाखो योजन पार करता। और कहानी, औरत बानी, त्रिकाल और त्रिलोक मे सब के दुख सुख की गहस्थी से बँधी अपना चरखा-करघा लेकर सब जगह मन के पीछे-पीछे जाती। एक रात चन की चादनी से अठखेलियाँ करती हुई समुद्र की नयी जवानी सी उठती लहरा मे मन राजा बिलम गये। कहानी किनारे बैठी अपना चरखा-करघा सँजोकर नये-पुरान तारा का ताना-बाना बुनने लगी।

फेड इन समुद्र का घोर गजन। समुद्र के व्याकुल गजन का अन्त नहीं। हा, लहरें आवागमन के अनवरत क्रम से एक क्षण के लिए मुक्त होकर किनारे पर विश्राम लेने के लिए बिछ जाती हैं। कुछ क्षणो के लिए स्तब्धता। नूपुरो की रुनझुन।

पात्र

मन
कोवलन
मासात्तुवान
मासा
पानाइहन
कुपुस्वामी
सज्जन
यात्री
महाराज
सिपाही
नागरिक
उदघोषिका
कहानी
माधवी
कनगी
नागरत्ना
अम्मा
चेलम्मा
देवन्ती
—आदि

ईसा की पहली शताब्दी मे महाकवि
इलगोवन रचित 'शिलप्पादिगारम्'
महाकाव्य के कथानक का आधार लेकर

उदघोषिका (वृद्ध स्वर) एक था राजा, एक थी रानी। राजा का नाम मन और रानी का नाम था कहानी। मन सैलानी बडा चचल। पल छिन मे अपनी राजधानियां बदलता, छलांग मारते लाखो युग और लाखो योजन पार करता। और कहानी, औरत बानी, त्रिकाल और त्रिलोक मे सब के दुख सुख की गहस्थी से बँधी अपना चरखा-करघा लेकर सब जगह मन के पीछे-पीछे जाती। एक रात चन्द की चादनी से अठखेलियाँ करती हुई समुद्र की नयी जवानी सी उठती लहरो मे मन राजा विलम गये। कहानी किनारे बैठी अपना चरखा करघा सँजोकर नये-पुराने तारो का ताना-बाना बुनने लगी।

फेड इन समुद्र का घोर गजन। समुद्र के व्याकुल गजन का अन्त नहीं। हाँ लहरें आवागमन के अनवरत श्रम से एक क्षण के लिए मुक्त होकर किनारे पर विश्राम लेने के लिए बिछ जाती हैं। कुछ क्षणो के लिए स्तब्धता। नूपुरो की रुनझुन।

सागर गर्जन की पृष्ठभूमि मे यह नूपुर ध्वनि शान्त और सधी गति से क्रमश निकटतर, निकटतम आती है। सागर ध्वनि उसी अनुपात मे हल्के हल्के आगे बढते हुए अचानक नूपुर ध्वनि पर छापा मारती है।

फेड आउट

कहानी मन !

मन हा कहानी।

कहानी खोये हुए करुण, स्निग्ध स्वर मे आज चन्द्र का सोमवार है। देखो, चन्द्रमा भी अस्त होने लगा।

मन झिडककर तुम तो दिनादिन अपनी भावुकता मे बौरायी जाती हो कहानी, अरे नित्य ही कोई न कोई वार रहता है, और सूर्य चन्द्र भी नित्य ही उदय और अस्त होते हैं

कहानी दीनता भरे स्वर मे, वकालत-सी करते हुए मन की वाक्य धारा मे तुरत ही अपनी बात जोडते हुए ना मन, यो न भूलो ! सती के आसुओ से डूबी हुई महानगरी के खँडहर अभी भी समुद्र की इन लहरो के नीचे सो रहे हैं।

मन लापरवाही से सान दो कहानी ! जो बीत गया उस भूल जाओ। समुद्र के गर्भ म विलीन हो जानेवाले कावेरीपूपट्टणम की जगह इन दो हजार बरसो म अनक महानगर उठ खडे हुए है। अपनी क्रीडा और तुम्हारे निवास के लिए मैं पल छिन, नित नये महल बनाता हू रानी, फिर पुरान खँडहरो की परवाह क्यो करती हो ?

कहानी मनुष्य के प्रेम और वासना की कहानी भी कहीं पुरानी होती है राजा ? आज की क्यारी मे खिले हुए फूल हजारो बरस पहले भी इसी तरह खिलते थ तब भी उनम वही सुगधि थी जो आज है। तुम्हार साथ इसी एक कच्चे तार क ब धन स बँधी हूँ राजा, नही तो नहीं तो तुम्हारे एस पुरुष

का साथ ? राम रे राम ! बावली बना देता है।

मन हँसकर क्यो ?

कहानी अरे ऐसे चचल निर्मोही का साथ ? जो आप तो सबको जकड-जकडकर बाधता है, पर आप कही नही बँधता।

मन मन तुमसे बँधा है कहानी। तुम न हो तो मन के पौरुष का मूल्य ही क्या ?

कहानी हाँ जी, इसीलिए तो घरवाली की पूछ होती है। विलासी पुरुष सती पत्नी की क्षमाशीलता पर भरोसा रखकर ही उस पर अत्याचार करते हैं और सती क्षमा भले ही कर दे पर दिल तो रोता ही है !

फेड इन समुद्र की ममर ध्वनि। नूपुरो की कोमलता त सधी गति वाली रुनझुन जसे गहप्रवेश करती नववधु के लज्जालु चरण उठते हैं यह इफेक्ट अगले सवाद की पृष्ठभूमि बनेगा अत मिड डिस्टेन्स से आरम्भ होकर क्रमश लाग मे जाकर फेड आउट हो जायगा।

कहानी सती सुहागिन के उमडते आँसुओ का मौन अभिशाप हजारो बरस पहले इस जगह बसी इन्द्रपुरी जसी महानगरी को ले डूबा था। याद है ?

मन याद है। सहनशीलता की सीमा से पार जाते हुए कन्नगी के सुहाग नूपुरो की पावन मधुर ध्वनि आज भी चुप चादनी बनकर वातावरण को अपनी करुणा स कँपा रही है रूप गर्विता वश्या माधवी का पराजित दम्भ इन लहरो मे वदना बनकर गरज रहा है।

कहानी गहरी निसाँस डालकर हाँ राजा, नारी बेचारी हर तरह से हारी है सती बनकर भी, वेश्या बनकर भी।

नूपुर ध्वनि। सागर गजन क्लोज से आरम्भ होकर मिड मे जाता है। ओवर-

लप घोडों की टाप रथो की खडखड, बलो की घटिया और कायव्यस्तता वभव शाली नगरो के कोलाहल की गूज।

यात्री सज्जन !

सज्जन मुझे बुलाया ?

यात्री *हाँ नागरिक मैं बडी दूर स आपके नगर म आया हू। ठहरने योग्य जगह मिल सकेगी ?*

सज्जन कावेरीपूपट्टणम के प्रत्येक नागरिक की पलकें अतिथि के स्वागत म सदा बिछी रहती हैं। आइए, मरी कुटिया पवित्र कीजिए !

यात्री आभार मानता हूँ महामना, किन्तु किसी धमशाला का पता बतला सकते तो

सज्जन हाँ, हाँ मानाइहन चेटियार की सत्तम म चले जाइए। यहाँ स पास भी है, और यात्रियो की सुख-सुविधा के लिए वहाँ सब तरह का अच्छा प्रबन्ध है। आइए मैं वहाँ तक आपको पहुँचा दू !

यात्री आपकी असीम कृपा के आगे मैं श्रद्धा स नत हूँ।

सज्जन मैं अपना साधारण कत्तव्य कर रहा हूँ। पधारिए।

नगर का कोलाहल रथ, घोडे, बलो की घटिया आदि पूववत। घण्टा शख घडि-याल आदि का स्वर और सम्मिलित हो जाता है।

यात्री आपका नगर भव्य है। हिरन की आखो जैसी खिडकियावाली य ऊँची ऊँची आकषक अटारियाँ आपके वैभव का परिचय दे रही हैं। ये सुसज्जित हाट अपनी द से तारको की श्रीहत कर

सज्जन वा दक्षि का मुहल्ल । इनके घर म द के यहाँ घेरा नहीं हो

यात्री यवन बडे कुशल व्यापारी होते है। हमारे नगर मे भी अनेक देशो के व्यापारी निवास करते हैं। सि घु वावेरु मिश्र

सज्जन आप कहा से पधारे हैं ?

यात्री शूपारक से। आपके नगर सेठ मासात्तुवान के पुत्र का विवाह होने वाला है।

सज्जन हा, अगली सप्तमी की लग्न है।

यात्री मैं अपने सेठ की ओर से वर वधू के लिए उपहार लेकर आया हूँ।

सज्जन बडी दूर से आये हैं। आत्मप्रशसा की रौ मे हमारे मासात्तुवान चेट्टियार का प्रभाव दूर दूर तक फैला हुआ है। सुना है, न जाने किन किन, देशो के व्यापारियो ने उपहार भेजे है और भाई, क्यो न हो इस समय तो चेट्टियार के जीवन की बडी शुभ घडी उपस्थित है कोवलन उनका इकलौता पुत्र है।

यात्री सुना है बडे दानी और धर्मात्मा हैं।

सज्जन ठीक सुना है यात्री। जैसे दसो दिशाओ की लक्ष्मी उनकी ड्योढी पर आकर लुटी-लुटी पडती है, वसे ही वे सहस्रबाहु होकर उसे लुटाते भी हैं।

यात्री विवाह कहा होगा ?

सज्जन यही, मानाइहन चेटटियार की बेटी कन्नगी से। दो वडे चेटिटयारो की होड है। कोवलन और कन्नगी का विवाह-समारोह तो देखने योग्य होगा। सुना है मासात्तुवान ने अपनी पतोहू के लिए जो सुहाग के नूपुर बनवाये है वे मदुरा के पाण्ड्य राजा की पटरानी के नूपुरो के समान हैं।

सहसा रथ तेजी से दौडता चला जाता है।

सज्जन कुछ उत्साहित होकर कोवलन, यही चेटिटयार का कुल-दीपक है।

यात्री बडा सुन्दर युवक है। वडी उतावली से जा रहा है।

सज्जन आह भर के हाँ, अँधेरे मे।

यात्री हँसकर ठीक तो है। ऐसे बडे चेट्टियार का कुलदीपक अँधेरे मे उजाला करेगा।

सज्जन हाँ, पर अपने घर मे अँधेरा करके। चन्द्रमा के समान इस नगर म भी कलक लगा है यात्री। यहाँ के प्राय हर धनी का सौभाग्य-दीप, रूप के हाट म जाकर बुझता है।

शुक, सारिका, चक्रवाक आदि अनेक मनहर स्वर और रूप रग वाले पक्षी, सोने के पिजरे मे टँगे वेश्या माधवी के मकान मे आमने-सामने बनी चारों दालानों में चहक रहे हैं।

माधवी सतेज, दर्पयुक्त नागरत्ना ?

नागरत्ना क्या है छोटी स्वामिनी ?

माधवी तूने चकवे चकवी को फिर एक पिजरे से कर दिया ? मैंने मना किया था न ?

नागरत्ना इसके बोलने में बनावट एक आदत बनकर समा गई है अब वह आदत भी इतनी सँवर गयी है कि कला बन गयी है। साथ ही स्वर सतेज और मीठा है हा मना तो किया था छोटी स्वामिनी, यों एक मे रहते हैं तो दिन होते ही पास आ जाते हैं इन्ह अलग करते मेरा कलेजा कचोटता है। एक तो राम ने ही इन्ह रैनबिछोहा दिया है दूसरे हम भी ।

माधवी दम्पती का वियोग ही वेश्या का इष्ट है। कल से इन्ह आमने सामने अलग अलग पिजरो म देखना चाहती हूँ। सुना ?

अम्मा जीती रहो बेटी, आशीर्वाद करती हूँ कि तुम इसी तरह चिर-काल तक पतियो के गले का मोती और पत्नियो की आख का आँसू बनी रहो। तुम्हारा रूप और यौवन अखड रहे।

वृद्धा भिखारनी वेश्या

चेलम्मा अरी अपनी बेटी को तो झूठा आशीर्वाद न दो पेरियनायकी। निसाँस रूप और जवानी किसी की नही टिकी।

अम्मा   कठोर स्वर से भर्त्सना करते हुए क्यो री चुड़ैल, मेरी बेटी की जूठन से पलकर उसी का बुरा चेतती है। जा मुई, काना मुह कर मेरी आँखो के आगे से। और फिर कभी पर रखा मेरी देहरी पर तो झाड़ुओं से पिटवाऊँगी।

चेलम्मा   निलज्ज हँसी झाड़ू मारकर जैसे मेरा बडा अपमान करोगी है ना जसे वेश्या का कभी सम्मान होता है, ह ह -ह

कठोर सत्यभरी, सनकभरी हँसी

अम्मा   दर्प से जा, जा ! परम प्रतापी चोल महाराज कारिहार वठवन के भरे दरबार को, मेरी बेटी न, कामदेव का धनुष बनकर जीता है। महाराज ने स्वय अपने हाथो से माला देकर उसका सम्मान किया है। नगर के महाश्रेष्ठि का इकलौता लाडला मेरी लाडली के तलवो तले चादनी सा बिछा रहता है। और क्या सम्मान चाहिए ?

चेलम्मा   बेटी के सौभाग्य स फूलकर तू इतनी जल्दी भूल कैसे गयी परियनायकी कि महाराजा और चेट्टियारो के मन जीतने के लिए मैं भी कभी कामदेव का धनुष बनी थी। वह धनुष अब टट गया है। और अब समझी हूँ कि वह सम्मान मेरा नही रूप की चमकती दूकान का था। नि श्वास सती विधवा होती तो मेरे बुढापे पर चार के आदर की चादर तो पडी रहती। मेरे रूप के खँडहरो पर दुनिया यो घणा और उपेक्षा से खिल्ली न उडाती।

माधवी   ठीक कहती हो मौसी, शक्ति और सफलता की धूल झाडकर जब कभी मन के दपण म अपना रूप देखती हूँ तो ऐसे ही विचार उठते हैं।

चेलम्मा   तू समझदार है बेटी, अपनी रूपगर्विता जवानी के मद मे मैंने एक हतयौवना का निरादर किया था। तब उसने कहा था, चेलम्मा दपण मे अपना सुदर रूप निहारते हुए मेरे बुढापे की झुर्रियो को भी देख लिया कर।

माधवी   स्वगत शोकाहत अपने रूप यौवन मे तुम्हारे बुढापे की

झुरियाँ मौसी, मेरे अल्हड़ यौवन को तुमने कठोर सत्य के पत्थर से घायल कर दिया। जाते हुए, गिरी हुई आवाज़ में ही नागरत्ना, चकवे चकवी को अलग न करना।

अम्मा कड़कती हुई आ तो सही निगोड़ी। तू मेरी बच्ची का मन फिराती है। अभी उसके खाने-खेलने के दिन हैं।

चेलम्मा ह ह, तेरा जी जलाने के लिए तेरी बेटी को सत्य का मार्ग सुझाती हूँ, ह ह-ह।

अम्मा क्रुद्ध होकर नागरत्ना, चूल्हे में से लकड़ी निकालना इस मुँझरसी के मुँह में आग लगाऊँगी।

चेलम्मा हँसती हुई चली जाती है। वीणा के तार धीरे धीरे छिड़ रहे हैं।

अम्मा माधवी, तू पगली रोती है? उस निगोड़ी जलकुकड़ी की बातों में आकर?

नाग० आकर घबराहट के साथ धीमी आवाज़ में कोवलन चट्टियार पधारे हैं।

अम्मा व्यस्त भाव से उन्हें यहीं ले आ।

नाग० वे यहीं

कोवलन नमस्कार अम्मा। यह क्या माधवी, रो रही हो?

अम्मा तुरन्त बनावट का करतब दिखलाकर अरे बेटा, इतनी देर से समझा रही हूँ इस कि मेरे कोवलन और लोगों की तरह स्वार्थी नहीं हैं जो ब्याह के बाद तुझे भूल जायेंगे। निःश्वास कितना कितना समझाया सवेरे से न खाया है न पिया है, बैठी आँसू बहा रही है।

कोवलन माधवी इधर देखो देखो देखो।

माधवी हटो जाओ, मुझसे न बोलो।

कोवलन सुनो तो।

माधवी अम्मा तुमने नाहक वो कह दिया इनसे। पत्थर की मूर्ति की प्रार्थना में फूलों का मूल्य ही क्या?

अम्मा बनावटी रूप से हतप्रभ स्वर में क्या जानूँ बेटा, आजकल

के लडरे-लडकियो के मन का भाव दिन भर तो याद कर-कर के रोती रही और अब जब मेरे लाल आये हैं तो मान दिखा रही है। अच्छा भाई, मैं तो चली अब पचासो काम पडे हैं मुझे।

कोवलन पत्थर की मूर्ति म प्राणप्रतिष्ठा करनेवाली शक्ति ही जब अविश्वास करगी तब उसे और कौन पूजेगा माधवी?

माधवी क्या नई पुजारिन ला तो रहे हो?

कोवलन हँसकर वह तो जग की रीति निभाऊँगा। अरे मैं ससुर के धन रूपी घी को होम का सुवा बनकर निज कुल के ऐश्वर्य-यज्ञ की आहुति बनाने जा रहा हू प्रिये। मेरी लक्ष्मी की लौ ऊँची उठगी।

माधवी ताना यदि केवल धन के लिए विवाह करने हो तो मेरे पास भी अतुल सम्पत्ति है।

कोवलन चोट खाकर, कडककर, तलवार खींचते हुए माधवी! अपने आवेश को वश मे करने का प्रयत्न करने के लिए यह वाक्य आधा स्वगत है मैं मैं इस क्षण भी भूल न सका कि तुमसे मुझ बहुत प्यार है नही तो नही तो दपयुक्त स्वर: रोम, मिस्र बावरु सिंध, शूर्पारक और सिंहल तक के धन-कुबेरो स अपनी साख पुजाने वाले चेट्टियार मामात्तुवान के वशधर कोवलन से स्वर फिर धीमा हो जाता है यह बात कहकर कोई वेश्या कोई स्त्री जीवित नही बच सकती थी। तलवार म्यान मे जाती है

माधवी विनय से नर्म होकर आग्रह व्यग्र तुम्हारे चरणो की धूल हूँ। तुम्हारे हाथो स मरकर भी सतियो के लोक मे जाऊँगी। भले ही इस लोक म कोई मुझ अभागिन वेश्या के एकनिष्ठ प्रेम मे विश्वास न करे। रोना

कोवलन मेरा विश्वास भ्रमर तुम्हारे प्रेमपुष्प पर इसीलिए मुग्ध है प्रिये। केवल मुझे व्यर्थ के लिए उत्तेजित न करना अब न रो माधुरी। तुम जानतीनही, मैं तुम्हे कितना प्रेम करताहूँ।

माधवी सच कहते हो ?

कोवलन मेरा प्रेम तुम्हारी परीक्षा की प्रतीक्षा कर रहा है, बोलो, क्या साहस करूँ ?

माधवी साहस करोगे ? वरदान दोगे ?

कोवलन मागो।

माधवी मांगती हूँ कन्नगी के सपना की पहली रात तुम मेरे यहा रहोग, कन्नगी मरी और तुम्हारी सेवा म रहगी।

कोवलन कन्नगी यहाँ ? तुम्हारे यहाँ ?

माधवी बस ? परीक्षा के एक ही झोके स तुम्हारे प्रेम की अखड ज्योति खडित हो गयी ? घर जाओ चेट्टियार, अब किसी से प्रेम करन का झूठा दभ

कोवलन उत्तेजित न हो माधवी। मैं वचन देता हूँ कि दो कुला की लक्ष्मी अपनी सौभाग्य लालिमा से तुम्हारे चरण रजित करेगी। चलो उठो, नाचो, गाओ। मेरे तृपित मन को अपन सगीत, नत्य और मदिरा के पात्रा से भर दो। नत्य

विवाह मत्र। विवाह मडप की तत्कालीन मव्यता। मानाइहन चेट्टियार के विवाह की महफिल में माधवी का नत्य। कन्नगी कोवलन के भावरे। माधवी का बधाई गाना। शहनाई। नूपुर की रुनझुन नई बहू को वहन कर आगे बढ रही है।

मासात्तुवान बेटी, तेरी सास की मृत्यु के बाद वर्षों स मेरी हवेली के य कोष्ठ दालान आँगन, और अटारियाँ सुहाग के नपुरो की गूज से सूनी थी आशीर्वाद करता हूँ, आयुष्मती हो, सौभाग्यवती हो, सतानवती हो।

नूपुर स्वर आगे बढते हैं। युवतियो की हँसी खुशी भरा गीत। सजी हुई कन्नगी को सुहाग कक्ष की ओर लिये जा रही हैं।
एक गीत—कोरस।
भाव रस श्रृगार के साथ साथ कुछ इस प्रकार का भाव भी हो—अब तुम बाला से नारी बन रही हो, कोवलन अपने पचवाद्यो के साथ एक हरिणाक्षी की प्रतीक्षा कर रहा ह। यह लक्ष्मी के समान सुन्दर और अरुधती के समान सती हरिणाक्षी कौन ह ? हमारी सखी हमारी स्वामिनी कन्नगी हँसी-कोलाहल पीछे छूट जाता हैं।
सुहाग के नूपुर लाज से सिमटे हुए बढते हैं।

कन्नगी देवन्ती, मेरी दाहिनी आँख फडक रही है।
देवन्ती भयभीत न हो सखी, ये नये जीवन की सिहरन है।

चलते चलते ठिठक जाते हैं।

कोवलन कडक कर कौन हो तुम ? कौन हो ? बोलो ?
कन्नगी सहमे किन्तु सयत स्वर से आपकी दासी।
कोवलन यही सुनना चाहता था। पत्नी के रूप मे पुरुष एक स्त्री को दासी बनाकर अपने घर लाता है। समझी ? साधारण स्त्रियाँ साधारण मोल पर हाट मे मिलती हैं, ऊँचे कुल की स्त्रियो का दासी बनाने के लिए सोने रूपे की थैलियो का मुह खुल जाता है अतर केवल इतना ही है। जानती हो ? बोलो।
कन्नगी सहज शान्त सलज्ज स्वर जी अब जान गयी।
कोवलन और कडककर और तुम अपनी सुन्दरता और सुशीलता के गुमान मे न रहना। समझी ? तुम्हारा सौन्दय मेरी दृष्टि मे कौडीमोल का भी नही। समझी ? समझीं कि नही ?

कन्नगी   शान्त सलज्ज   समझ गयी ।

कोवलन   तुम्हें इसी समय मेरे साथ बाहर चलना होगा । ध्यान रखना, किसी को कानोकान पता न चलने पाये ।

घोड़े की टाप। परिवर्तन। माधवी का घर। मृदंग पर हथौड़ी चल रही है, वीणा की खूंटियाँ सुधारी जा रही हैं, मुजरे की तयारियाँ चल रही हैं। मंजीरेवाला रंग में मंजीरा ठनकाये जा रहा है। वाद्यकार अपने अपने वाद्य सुधार कर आपसी मनोरंजन के रंग में आने लगते हैं।

माधवी   ऊबकर   अपने घुंघरू खोलकर फेंकते हुए   स्वर में चुटीले मान का कम्प   बन्द करो ये साज संगीत । वे अब नहीं आयेंगे। नागरत्ना, कल इन निगोड़े घुंघरुओं को समुद्र में फेंक आना इस नगर में अब सुहाग के नूपुरों की महिमा बढ़ गयी है।   स्तब्धता   स्वयं रूपजीवाएँ भी जब घरेलू स्त्रियों की महिमा गाने लगीं तब कोवलन तो पुरुष है। उसके घर में नये सुहाग के नूपुर आये हैं

अम्मा   तुम बेकार ही मेरी बातों का बुरा मान गयीं बिटिया। मैंने समझ की बात कही थी। तुम्हें कोवलन से कन्नगी को यहाँ लाने की बात नहीं करनी चाहिए थी यह मैं अब भी कहती हूँ। कुलीन कितना ही विलासी हो, अपने घर की औरत को कितनी ही घृणा की दृष्टि से क्यों न देखे एक जगह उसे हम लोगों से बड़ा मानता है।

माधवी   दाँत पीसकर   मैं उस बड़प्पन को चूर चूर कर देना चाहती हूँ। पुरुष के साथ सात भाँवरें फिर लेने से ही स्त्री को समाज में प्रतिष्ठा का स्थान मिले यह मैं सहन नहीं कर पाती।

अम्मा   अब तू पागलों जैसी बातें करने लगी। अरे दुनिया में सदा से सतियाँ भी रही हैं और वेश्याएँ भी। हमें भगवान ने जिस योनि में जन्म दिया है उसी का धर्म निभाना चाहिए। हमें

घर की औरत को घर की चारदीवारी के अन्दर ही जलाना चाहिए।

माधवी सनक से हँसकर और आप बीच चौराहे होली की तरह धू धू जलना चाहिए, क्यो यही न।

अम्मा वेश्या दूसरो को जलाने के लिए जनम लती है, आप जलने के लिए नही। यह याद रख। जो आप जलती है वह मूख होती है। वो निगोडी चेलम्मा घृणा से है। बेटी, जलना सच्चे प्रेमियो के ही भाग मे लिखा होता है प्रेम का नाटक करने वाली का लपटो से भला लगाव ही क्या ?

माधवी प्रेम का नाटक नही मैं कोवलन से स्त्री की तरह प्यार करती हूँ मैं मानवी हूँ, प्रेम का अधिकार नही छोड सकती।

अम्मा सास लेकर तब तेरा भी वही अन्त होगा जो चेलम्मा का हुआ है। वेश्या सती बनकर भी सती कभी नही कहलायेगी। दुनिया के नियम कठोर हैं।

माधवी एक सद आह लेती है।

नाग० हाफते हुए कोवलन चेट्टियार का रथ गुप्त द्वार पर। नयी सेठानी भी आयी हैं।

माधवी प्रसन्न होकर दप से मैं जानती थी, मेरे प्रियतम नयी दासी को लेकर अवश्य आयेंगे।

अम्मा तेजी से मेरे बाल धूप मे सफेद नही हुए हैं माधवी। एक भूल कर चुकी, अब दूसरी न करना। हम नयी सेठानी का उचित सम्मान करेंगे।

दूर से नागरत्ना और कोवलन की बात चीत क्रमश पास आती जा रही है।

नाग० नही नही, मैं मानूगी नही चेट्टियार। आज की नेग मे मोती माला ही लूगी मैं तो।

कोवलन हँसकर अच्छा अच्छा, शख की माला दिला दूगा तुझे।

अम्मा क्यो मचल रही है नागरत्ना, चुप कर। आओ भैया, बडे भाग कि शकर पावती की जोडी आज हमारे घर पधारी है।

कोवलन विजयी के भाव से माधवी, लो तुम्हारी नयी दासी को ले आया।

अम्मा अरे में बलैया लू बेटा, ऐसी बात हँसी म भी नही कही जाती। नयी सेठानी साक्षात लक्ष्मी हैं, इतने बड़े घरान का भाग्य बनकर आयी हैं—उनकी और हमारी कौन बराबरी! नाग रत्ना, जल्दी कर, सोने की चौकी उठवा ला।

माधवी नागरत्ना, मेरे घुघरू दना। कल अपने विवाह के उत्सव म नयी सठानी ने अपन पिता की कोठी मे मेरा नृत्य देखा था, आज मेरे कोठे पर मेरी सुहागरात के अवसर पर सठानी नत्य करेंगी मैं देखूगी।

अम्मा हँसकर बात बदलते हुए अरी बडी नटखट है री। नयी बहू से भला ऐसी ठिठोली की जाती है।

माधवी जोर देकर मैं सच कह रही हूँ। क नगी को मेर सामन नाचना होगा। मैं परीक्षा लूगी देखूगी कि मेरे प्राणेश्वर पर सामाजिक नियम का सहारा लेकर अधिकार जमाने वाली स्त्री म ऐसा कौन-सा गुण है जो मुझमे नही है।

अम्मा आदेश भरे स्वर मे माधवी अपनी ठौर दखकर बोल

माधवी तेजी से चुप रहो अम्मा। मेरे आदेश का तुम्हारा ठण्डा बुझा हुआ हृदय नही समझ सकेगा। जिस अनुपम पुरुष को मैंने नत्य गीत, हास विलास और कटाक्ष बडी लगन स रिझा रिझाकर आन द के लोक मे पहुँचाया है उस दिव्य शृ गारी आत्मा का रिझाने के लिए इस स्त्री मे क्या गुण हैं यह देखूगी? नागरत्ना, देती क्यो नही घुघरू।

घुघरू रखे जाते हैं।

कोवलन नागरत्ना मदिरा ला।

माधवी घुघरू बाँधो सेठानी।

कन्नगी बहन, मरे देवतुल्य पतिकुल ने सुहाग के नूपुरा स मरे परो को बाध दिया है ये घुघरू तुम्हार ही परो म सुशोभित होग।

माधवी सुहाग के नूपुर हाँ सुना है कि इन बहुमूल्य नूपुरो के कारण

तुम नगर भर की सुहागिनो के लिए ईर्ष्या की वस्तु बन गयी हो। पर इनसे अपने भाग्य देवता को न रिझा सकोगी गुइयाँ, वह शक्ति मेरे ही घुघरुओ म है।

कनगी मुझे तुम्हारे घुंघरुआ से ईर्ष्या नही होती बहन। मेरी दृष्टि मे उनका कोई मूल्य नही।

माधवी तुम अपने को उच्च और मुझे नीच समझती हो ? मन-ही-मन मुझसे घृणा करती होगी, है न ?

कनगी मैं तुमसे घृणा नही करती, क्योकि मैं जानती हूँ कि तुम अपनी परिस्थितियो के कारण ऐसी हो।

माधवी सुन रहे हो ? तुम्हारी सुहागिन मेरी परिस्थितियो पर ताने मार रही है।

कोवलन मजा लेते हुए सोच रहा हूँ कि आज की रात मेरे सन्यास ग्रहण करने के लिए उत्तम मुहूर्त आया है। वैसे घबराने की कोई बात नही मैं आनन्द ले रहा हूँ। मेरे सामने स्त्री के दो रूप आ रहे हैं—सुहागरात मे यह अनुभव भला कितने सौभाग्यशालियो को मिलता है। ह ह-ह

मदिरा के पात्र मे धार पड रही है।

कोवलन समय पर आयी नागरत्ना, पुरुष को मदिरा से बढकर और कोई स्त्री नही समझती। पात्र को होठो से चूमते जाओ, झूमते जाओ मदिरा रस देना जानती है। मागती कुछ भी नहीं। नागरत्ना, यही मेरे पास बैठ जा—ढालती चल, पिलाती चल।

पीता है, पात्र मे उसी समय दुबारा उँडेली जा रही है।

कोवलन मस्ती के साथ हा प्राणेश्वरियो, तुम लोग आपस मे चहको। मुझे रस आ रहा है। नागरत्ना, मेरे और भी निकट आ जाओ और पास। मदिरा के रसान्दोलन से मेरी चचल उँगलियो को प्रेयसी की लटा से खेलन की लत पड गयी थी।

माधवी दप से चेट्टियार, तुम मेरी आखा के सामने ही मेरी दासी

को अक मे लेकर खेलो। यह अपमान सहन नही कर सकती। नागरत्ना कलमुही।

पास रखी एक पीतल की मूर्ति उठाकर नागरत्ना को खींचकर मुह पर मारती है। दासता की जजीरों से जकडी हुई मानवीने अपनीचीख को दबाने कीलाख कोशिश की मगर चीख निकल ही गयी।

कन्नगी तुरत ही साडी का पल्ला चीरती हुई आगे बढकर घबरा मत नागरत्ना। दीपक स रेशम बालकर अभी तेरे घाव पर रखती हूँ।

कोवलन उत्तेजित होकर माधवी जब कन्नगी के सामने मैं तुम्हारे गले मे बाँह डालकर तुम्हारी लटा से खेल रहा था तब उसे क्या बुरा नही लगा होगा। वह तो कुछ न बोली। और तुम इतने ही पर खेल गयी। तुम्ह अपना अस्तित्व भूलकर मेरे दप पर पर रखने का साहस क्योंकर हुआ? माधवी, तुमने मरे खिलौने पर मुझसे अभय का क्षणिक सौभाग्य पाई हुई बर दानी नारी को इस तरह मारा क्यो? भले ही वह तुम्हारी दासी तुम भी मेरी दासी। मेरे धन से सारा तुम्हारा वैभव और दप है।

माधवी गिडगिडाकर आसु भरी आवाज से तुमने मेरे मारा को तो देखा पर उसके पीछे छिपे हुए मेरे एका त प्रेम की तडप का नही पहचाना।

कोवलन झुझलाकर मैं नही जानता, एका त प्रेम किस चिडिया का नाम है। मैं तुमसे प्रेम करता था। मैंने एक हजार आठ कबुजु देकर इन गोरी बाँहो की माला मोल ली थी। और वही तुम मेरी सुहागरात क दिन दो बार मेरा अपमान करन का साहस कर सकी? तुम्हार ही प्रेम मे वचनबद्ध होकर कोवलन न आज वह काम कर दिखाया जो उसके समान और कोई भी उच्चकुल का व्यक्ति नही कर सकता। कोवलन की पत्नी,

चेट्टियार मासात्तुवान की पुत्रवधू अपने नये जीवन की पहली रात को एक साधारण सी वेश्या के घर आये—यह अनहोनी बात, यह अपमान मैं तुम्हारे प्रेम के कारण ही पी गया। फिर दुबारा तुमने मुझसे अभय पायी हुई दासी पर मेरी ही आँखों के सामने वार किया। मैं तुम्हे कभी भी क्षमा नही करूँगा माधवी।

माधवी के रोने की आवाज।

कोवलन कन्नगी घर चलो। तुम कितनी सुन्दर हो! आह भर कर घडी भर पहले तुम्हारे रूप को इस समय की दृष्टि से देख पाता तो मेरी सुहागरात मेरे ही टुकडो पर पलनेवाली एक विषभरी नागिन के द्वारा यो अपमानित होकर अभागी न बनती।

चलता है, पीछे पीछे सुहाग के नूपुर चलते हैं। माधवी फूट फूटकर रोने लगती है।

माधवी रोते हुए हिचकियाँ तोडकर बोलने का प्रयत्न करते हुए मैं बुरी हूँ—मेरा प्यार बुरा नही है सुनते जाओ!

सुहाग के नूपुर आगे बढ जाते हैं। फेड आउट। समुद्र गर्जन! नूपुर-स्वर। फेड इन-माधवी का घर।

अम्मा माधवी, तू अपनी नयी सफलता पर फूल गयी है। घमण्ड मे बावली बनकर अपने जीवन को मिट्टी मे न मिला मेरी सीख मान ले।

माधवी मुझे तुम्हारा कुछ न चाहिए अम्मा। सफलता, सम्पत्ति, मान, गौरव, कीर्ति का चमत्कार कुछ न चाहिए। मैं केवल अपना खोया अधिकार चाहती हूँ।

अम्मा खीझकर कुछ न चाहिए तो चेलम्मा की तरह दर दर की भिखारिन बनना—मेरा क्या!

माधवी भयभीत स्वर चेलम्मा ?

अम्मा अरे चेलम्मा ने अपनी भरी जवानी मे जी भरकर राजपाट

तो कर लिया तू अभी स ही अपना मटियामट कर रही है।

माधवी नहीं, मेरी लालसाएँ अभी जवान हैं। मैं सुख भोगना चाहती हूँ।

अम्मा मैं काले गोरे दिन दखे बठी हूँ बेटा। बात बिगडन म पल नहीं लगता, बनन म अनेकों जुग लग जाते हैं। य तो कहा, इस समय भगवान ने जान बना दी है। कोवलन क न आने पर लोग यही सोचेंगे कि घर मे नयी नयी दुलहिन आयी है।

माधवी घणा से दुलहिन ! छि !

अम्मा मैं कोई बहाना सोचकर एक उत्सव की तयारी करती हूँ। किसी दूसरे धनी युवक को फँसाना पडगा।

माधवी पर दूसरो के आने से मेरे कोवलन फिर कभी भी यहा न आयेंगे।

अम्मा तू कोवलन की चिन्ता छाड। आग उस पर भी विचार किया जायगा। इस समय अपन को सँभाल।

चेलम्मा जो गिर ही चुका वह अब सँभल के क्या करगा पेरियनायकी ?

अम्मा क्रुद्ध होकर तू फिर आ गयी री।

चेलम्मा बेशम हँसी राजदरबार वैद्य का घर और हमार यहाँ कोई भी, किसी भी समय आ सकता है। अरी तुझ जसी खुर्राट य बात भूल कैसे गयी ?

माधवी भय चिन्तित स्वर मौसी,तुम्हारे भोजन वस्त्र की व्यवस्था करने का वचन देती हूँ। पर तुम मेर सामन न आया करो।

चेलम्मा समझ गयी तुम्हें भय लगता है। अच्छा, नहीं आऊँगी। पर एक पुरानी बात याद आ गयी, कहे जाती हूँ। जवानी के दिनो मे मिस्र दश का एक व्यापारी यहाँ आया था। उससे मेरी मित्रता हो गयी थी। वह अपन दश का रिवाज बतलाता था कि रागरग के उत्सव जब अपन पूर निखार पर होते हैं तब लोगा के सामन एक मुर्दा घुमाया जाता है जिससे लोग अपन अन्त का न भूलें। मैं भी मुर्दे की तरह तेर यौवनोत्सव म आती हूँ बेटी।

माधवी नहीं। मेरा अन्त तुम नहीं हो।

चेलम्मा तेरी माँ अपने स्वार्थ के कारण तुझे सच्चा ज्ञान नहीं देती। हमारा अन्त यही होता है। यह बात दूसरी है कि परियनायकी-जैसी कोई भाग्यवान तेरे जैसी बेटी पाकर बुढ़ापे में भी बाहरी सुख चैन पा ले। या कोई नयी नयी लड़कियों को फँसाकर मोल लेकर उनसे अपनी रोटी कमा ले। कोई मेरे जैसी सीधे-सच्चे स्वभाववाली निपूती अभागन हाट बाट की भिखारिन हो जाती है। मैं बाहरी सुख-दुख की तुलना में नहीं जाती। वास्तविकता यह है कि रूप का अन्त होते ही हमारा जीवन सहसा खोखला हो जाता है। सुहागिन का अस्तित्व बुढ़ापे में जाकर पूरी तरह सार्थक होता है। पर हम सदा-सुहागिनों का अस्तित्व तुझे कैसे समझाऊँ? बस यह समझ ले कि जैसे जैसे रत्नराशि से जगमगाती हुई इस वैभवशाली नगरी का अस्तित्व कल समुद्र के तल में विलीन हो जाय ह ह ह।

माधवी कैसी भयंकर बात मुँह से निकाल रही हो मौसी!

अम्मा अरे ये डायन सदा कुबोल ही बोलती है।

चेलम्मा मैं सच बोलती हूँ। सच भयंकर होता है। हाथ कंगन को आरसी क्या। अब तू भी अनुभव करेगी। कोवलन का विवाह हो गया तेरे जीवन में एक पुरुष के सुख सुहाग के दिन भी उसी दिन से खो गये। अब अनेक आयेंगे, अनेक जायेंगे और एक दिन तू बूढ़ी होकर मन से खोखली हो जायगी।

माधवी नहीं, मेरे जीवन में अनेक पुरुष नहीं आयेंगे। चेट्टियार कोवलन मेरे जीवनाधार हैं।

चेलम्मा पेरियनायकी अपनी बेटी को समझाती क्यों नहीं? विलासी पुरुष जहाँ किसी भी बहाने एक बार एक के पास से हटा वहाँ वह फूल फूल पर डोलनेवाला भँवरा हो जाता है। देख लीजो, कोवलन अपनी पत्नी का ही नहीं हो सकेगा, फिर तेरा क्या होगा बिटिया।

माधवी उत्तेजित होकर तुम क्या जानो वो मुझसे कितना प्रेम करते है। अपनी सुहागरात के दिन

अम्मा माधवी ! प्रम की बातें बड़ी बूढ़ियों के आगे नहीं कही जातीं।

माधवी दद स मेरा और उनका प्रम तुम बड़ी बूढ़ियों के लिए भी ईर्ष्या की वस्तु है। मरे लिए मेरा प्रमी उस दिन ऊंचे-से ऊँचे कुल की स्त्री को मेरे यहाँ दासी बनाकर लाया था।

चेलम्मा आश्चय से अम्मा, अम्मा ! कन्नगी यहाँ आयी थी? अयोपावम ?

अम्मा रीस कर माधवी, तू अ दर जाकर वठती क्या नहीं चुप चाप। जब दखो तब सबक सामन घमण्ड के थान फाड़ा करती है। जा !

चेलम्मा चुटकी लेते हुए अरे कहन दे विचारी को, रूप और जवानी के उफान म मच बोलती है तो बोलन दे न । अब तेरे भी मान सम्मान के दिन लद गय परियनायकी ! हू-ह-हे ।

अम्मा जा यहा स ।

चेलम्मा हँसते हुए जाती हूँ री। जान से पहल तरी लाडली को एक और ज्ञान सिखा जाऊँगी वश्या की बेटी, भले ही अपने भाव विकारों से सही, मगर जब सच बोलन लग तो जान लना कि उसके घर स सफलता का चमत्कार गया। ह ह ! अब तेरे घर की रोटी नहीं खाऊँगी। तू मुझस भी अधिक अभागी है।

अम्मा आह भरकर सच कह गयी निगोडी। दाँत पीस चिड चिडाते हुए बार बार समझा चुकी कि ऊँच नीच देखकर मुह से बात निकाला कर। अब देख लीजियो आ चुका कोवलन तेरे यहा। अरे कोवलन क्या, अब तो कोई भी यहाँ आने की हिम्मत न करेगा। इतने ऊच घराने की बात सुन गन्नी की फुलझडी के आगे कह दी। वह निगोडी मेरा घर बिगाडने के लिए नगर के सब से बडे कलक की बात का ढिंढोरा पीटेगी।

मासात्तुवान और क-नगी।

मासा० बहू मैं तरे पिता के समान हूँ। तू मेर लिए पुत्री से भी अधिक है। बहू कुलगौरव की मर्यादा होती है। सच बता, कोवलन तुझे उस कुलटा के घर ले गया था ?

मौन—एक निमिष।

क-नगी वडे पॉलिश्ड ढग से अपने स्वर की घबराहट को साधकर नहीं !

मासा० सच ?

क-नगी स च अप्पा।

मासा० तब मैं महाराज स मिलकर इस दुष्टा माधवी का देश निकाला करा दूगा। इसन झूठ ही मेरे पुत्र और पुत्रवधू को कलक लगाया है।

क-नगी समझदारी से शा-त स्वर में ऐसा करने से बात और बढेगी अप्पा !

मासा० सोचकर जीती रह बेटा। तुझमे अपनी सास का सूना पद भार ग्रहण करने की योग्यता है।

सगीत। समुद्र गजन। नुपुर ध्वनि। मन और कहानी।

कहानी च द्रमा अस्त हो गया। लहरें अपनी अह वेदना से गरज गरज-कर थक गयी। मन, डूबने की बाट मे बैठा हुआ शुक्र तारे का उजाला कितना स्वच्छ है ! क-नगी एकनिष्ठ प्रेमयाचना के समान।

मन श्रद्धा जग जीत लेती है कहानी मुझको भी जीत लेती है, कहानी बनकर बेचारी माधवी इस भेद को न पहचान पायी।

मुझ तरस आता है उस पर।

कहानी — तुम्ही सब का नाच नचाते हो मन ! जिसके तन म तुम अपना अमोघ शक्ति का तलवार बनाकर तानते हो उसकी यही दशा होती है जो माधवी की हुई।

मन — तुम गृहणी हा न। इस समय कनगी सुखी है, कोवलन उसके वश म है, तो तुम भी मन-ही मन हरख रही हो।

कहानी — (हँसकर) तुम तो ऐसा कह रहे हो जैसे कनगी कोवलन का सुख आज की बात हो।

मन — (स्नेह से) मेरी यह चिरयौवन कहानी भूत और भविष्य दोनो का ही वर्तमान बना देने की कला जानती है। इसी पर तो मैं मुग्ध हूँ। तुम्हारा यह गुण मेरे विश्राम म बड़ा सहायक होता है।

कहानी — (प्रसन्नता को बनावटी रीस में छिपाने के लिए निष्फल सा प्रयत्न करते हुए) अब लगे बनाने ! और जब अपनी झोक म मुझे तरह तरह स तग करते हो !

मन — अरे छोडो इन बातो को — कहानी सुनाओ।

कहानी — (सुहागिन की लहरा में मग्न) नही भई, अब तुम सुनाओ। तुम्हारी गोद म सिर रखकर कभी-कभी मेरा भी कहानी सुनने को जी होता है। हाँ ता बोलो, फिर क्या हुआ।

मन — फिर कहानी ? फिर तो कोवलन — जसा कि भद्र समाज में कहते हैं — एकदम सुधर गया। कारोबार मे अपने पिता का बराबरी से हाथ बँटाने लगा घर म एक स दो काम करनेवाले हुए तो व्यापार और चमका, कनगी की — अरे हूँ-हूँ तो करती जाओ।

कहानी — हूँऽ !

मन — फिर ये हुआ कि कनगी क तो बडे मान-सम्मान बढ गये। नगर मे क्या अमीर क्या गरीब, सबके मुह पर उसके बखान चढे हुए थे। ससुर का यह नहू करने मुह सूखे पिता की एक ही एक लडकी, हीले बहाने से अपनी बेटी का घर भरते ही रहते

थे, पति जैसे वह कहे वैसे ही चले। इतना होने पर भी कन्नगी को घमण्ड छू नही गया था। वह तुम्हारी परम्परा की थी कहानी श्रद्धा का साक्षात अवतार।

कहानी हूँऽ, फिर क्या हुआ?

मन फिर महीनो बीत गये। रूप के हाट मे सदा की तरह बसन्त ऋतु आयी थी। चारो ओर राग-रग, वैभव और विलास के खेल। एक हतभागिनी खिलती कली भरे बसन्त मे मुरझाई जाती थी। माधवी का घर सूना था। कोवलन की प्रतीक्षा मे उसने और किसी पुरुष को अपने घर आने न दिया। उसकी दुनियादार मा अपनी बेटी की नासमझी पर सिर पीटकर रह जाती थी। उनका कोई बस नही चलता था। एक दिन जब माधवी फन कुचलती हुई नागिन की तरह विवश विफल रोष-भरी, फूट-फूटकर रो रही थी। तब उसकी माँ ने उसे यह समझाया कि

फेड इन।

अम्मा बेटा, मेरा बुढापा और अपना सारा जीवन इन आँसुओ मे मत डुबा। ये आसू निष्फल हैं। तेरे कोवलन को भी कभी पास नही लायेंगे।

माधवी रोते हुए कभी-न-कभी तो मन को मन पहचानेगा ही, कभी न-कभी तो वे अवश्य ही आयेंगे अवश्य आयेंगे।

अम्मा वो कभी नही आयेगा। अपने प्रेम की शक्ति दिखाने मे तू इतनी दुबली कि सदा के लिए उसका प्रेम ही खो दिया। तूने अपनी इच्छाओ को देखा कोवलन की उपेक्षा की। फिर क्यो आये वह तेरे पास? कन्नगी पति का मन देखकर उसे बाँधती है।

माधवी मैं भी ऐसा ही करूँगी। अम्मा कुछ करो, मेरे कोवलन को मेरे पास एक बार फिर ले आओ। तुम जो कहोगी मैं करूँगी।

अम्मा तो प्रेम नहीं प्रेम का नाटक कर। मैं तुझे बार-बार समझा चुकी, और मान ले कि तुझे सच्चा प्रेम है तो भी यह याद रख कि मोती का मूल्य तभी घटता है जब उस पर पानी चढाया

जाता है।

माधवी तुम्हारी बातों को अब समझ रही हूँ। अपने जन्म की विवशता का स्वीकार कर मुझे कोवलन पर अपना प्रेम पाश फेंकना चाहिये। ऐसा ही करूँगी। किसी तरह भी हो मैं सती की शक्ति को चूर-चूर कर उस पर विजय पाना चाहती हूँ।

अम्मा इस बात को मन में रखकर यदि तू मेरे कहने पर चली तो तेरी मनशा पूरी कर दूंगी। किसी बहाने शीघ्र ही अपने यहाँ एक उत्सव करूँगी।

माधवी इसी महीने में कोवलन का जन्म दिवस भी आता है, पर क्या वे उत्सव में आयेंगे ?

अम्मा जन्म दिन की बात तूने अच्छी सुझा दी। और कोवलन उस दिन भले ही न आये दूसरे धनी मानी कुलीनों के लाल तो आयेंगे। उनके सामने तेरे और कोवलन के प्रेम की कथा बना कर सुनाऊँगी। तेरे विरह के आंसू सारे पुरुष समाज के हृदय में अपनी प्रेयसी का विरह बनकर उमड़ पड़ें। तेरे प्रेम को पानेवाले कोवलन के भाग्य पर दूसरों को ईर्ष्या होगी। तभी कोवलन भी आयेगा! अवश्य आयेगा!

माधवी एक कोवलन को पाने के लिए मैं लाख-लाख कलेजों को टूक बना दूंगी।

कोवलन का घर।

कन्नगी ऐसे टकटकी बांधकर क्या देख रहे हैं आप ?

कोवलन खोयेपन से उठकर देख रहा हूं तुम्हारे रूप में ऐसी कौन सी विशेषता है जो मुझे उच्छृंखल नहीं होने देती।

कन्नगी जिन आँखों की घनी छाँव तले बैठी हूँ, विशेषता उनकी है मेरी नहीं।

कोवलन सच कहती हो। एक दिन इन्हीं आंखों ने जाने परखे बिना तुम्हारे अन्तर के इस अनुपम सौन्दर्य की उपेक्षा की दृष्टि से देखा था। और वही आँखें अब तुम्हारे अन्दर न जाने क्या-क्या देख सती हैं। मनुष्य का मन भी कैसा विचित्र होता है। हूँ तुमसे

अपने मन की निबलता भी कह दू कन्नगी, एक जगह मे चाह-
कर भी यह किसी को पूरी तरह चाह नही पाता। अपने को
भी नहीं। मेरे मन का एक छोर हरदम कही उडा करता है।

कन्नगी आप विदेशो की सर कर आइए। अप्पा देशाटन से लौटें तब
चले जाइएगा।

कोवलन नही, यो किसी प्रकार भी अस्थिर या अधीर नही हूँ। मुझे
अपने काम म, घर मे, लोक व्यवहार मे रस मिलता है। पर
यह सब करते करते मन कभी कभी इन सब स विद्रोह भी कर
उठता है। सोचता हूँ कि यह सब वाणिज्य, व्यवसाय, राज
और समाज के नियम, सभ्यता के य सार ब धन न होते तो
कितना अच्छा था। हम भी पशु पक्षियो की तरह स्वतन्त्र
रहते प्रकृति और मनुष्य जिस तरह चेतना से जकडे हुए हैं
यदि सब कुछ अनियमित होता तो कितना सुदर होता।

कन्नगी मैं आपकी तरह नही सोच पाती। मैंने आप म जीवन की
सार्थकता पा ली है। इसलिए कभी कोई अभाव अनुभव नही
होता।

कोवलन अभाव मैं भी अनुभव नही करता। तुम्हारे ध्यान का छीट
पडते ही उच्छृङ्खलता दूध के उबाल की तरह ठण्डी पड जाती
है। तुमसे सच कह दू, तब मुझे अपने ऊपर क्रोध आता है कि
मैं तुम्हारे प्रभाव से इतना अधिक क्यो बँधा हूँ।

कन्नगी आपको प्रभावित करने के लिए मैंने कभी कुछ नही किया।

कोवलन तुम प्रयत्न नही करती, पर तुम्हारी निष्ठा, तुम्हारे गुण देख-
कर मन पर बरबस प्रभाव पडता ही है। मेरे कुल की सारी
सम्पत्ति स भी अधिक तुम्हारे गुण मूल्यवान है। आश्चर्य है
कन्नगी, मेरे ऐसा दर्पयुक्त पुरुष तुम्हारा आदर करता है। तुम्हे
अपने स बडा मानता है। और इसीलिए एक जगह तुमसे घृणा
भी करता हूँ।

कन्नगी आधी आने के लक्षण हैं। समुद्र अपना व्यवहार बदल रहा है।

समुद्र की गर्जन और तेज हवाएँ।

देवन्ती प्रभु एक व्यापारी नौका लेकर आया है। आपसे इसी समय मिलने की आज्ञा माँगता है।

कोवलन खीझकर मेरे आनन्द के समय में भी व्यापार! इन व्यापारियों को एक क्षण के लिए भी अपना व्यापार नहीं भूलता। अच्छा, उन्हें यहाँ भेज दो।

देवन्ती प्रभु, व्यापारी का नौकर साथ ही साथ यह भी निवेदन करता था कि उसके सेठ अपनी ही नौका पर आपसे बातें करना चाहते हैं।

कोवलन अच्छा, कह दो, आता हूँ।

दूसरी नौका।

कोवलन कौन हो तुम? मुझे यहाँ छल करके क्यों बुलाया? घूँघट उठाता है नागरत्ना, तू रो क्यों रही है?

नागरत्ना रोते हुए छोटी स्वामिनी ने विष खा लिया है चेट्टियार। अंतिम साँसें चल रही हैं। एक बार एक बार आपको देखने के लिए उनके प्राण उतावले हो रहे हैं।

कोवलन सोचकर मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ। ठहरो एक बार कन्नगी नहीं, अब कन्नगी से नहीं मिलूँगा। नागरत्ना, माँझियों को शीघ्र ही किनारे चलने का आदेश दो।

नौका चलती है। विकल संगीत का तार झंकृत होता है। झंकृत होते होते तीव्र हो उठता है। समुद्र का भयकर गर्जन। आँधी और तूफान।

माँझी स्वामी आप तो किनारे पहुँच गये। पर आपका जहाज समुद्री आँधियों से घिर गया है। समुद्र की गरज और तूफान

कन्नगी देवन्ती, मेरी दाहिनी आँख फड़क रही है। मैं अपने आपको ठीक तरह से सँभाल गिरने की आवाज, जैसे बेहोश गिरती है

देवन्ती घबराकर सखी, स्वामिनी!

समुद्र की गरज और तूफान। तीव्र वेदना
भरा सगीत। माधवी का घर।

माधवी जैसे सूय का तेज आत्मसात कर मध्या सतरगी हो गयी है वैसे ही तुम्ह पाकर मेरा आनन्द क्षितिज रग बिरगा हो उठा है प्राणेश्वर!

कोवलन विप तुमने पिया था माधवी, पर मेरे सस्कारो का देवता, वह दवता जो कन्नगी का सहारा पाकर प्रबल हा उठा था। ये देखो, क्षितिज के इन सिन्दूरी बादलो मे तुम्हारे विप की ही साँवली पट्टियाँ पड रही है।

कन्नगी का घर।

कन्नगी अस्त होत हुए सूय के रगो को चुराने का साहस ये निबल, निकम्मे बादन भी कर लेते हैं। इन रग बिरगे बादला की सुन्दरता पर तो सब रीझते हैं सूय की विवशता पर कोई आँसू नही बहाता।

देवन्ती चार दिन पहले यही सतरगी साँझ सहसा प्रबल आँधिया मे पलट गयी थी जैसे हमारा भाग्य पलटा।

कन्नगी का एक गहरा नि श्वास।

देवन्ती एक साझ है, एक ही दश्य है किसी घर मे किसी की आँखो को सुहावना लग रहा होगा, और यहाँ

कन्नगी यहाँ भी सुख है देवन्ती मेरा सुख उनके सुख मे ही है।

देवन्ती चार दिन बीत गये, स्वामी को अभी तक घर का ध्यान नही आया।

कन्नगी दिन बीतेंगे महीने बीतेंगे, बरस और युग भी बीतेंगे सर्द आह बीतने दो। सब-कुछ बीत जाय राम उनके सुख के दिन न बीतें।

कोवलन झुझलाहट के साथ महीनो बीत गये, दिनो घर नही आता तुमने एक बार भी मुझसे यह न पूछा, तुम कहाँ रहते हो, क्या करते हो?

कन्नगी शान्त स्वर आप जो करते होगे वह कल्याणकारी होगा,

जहाँ रहत होगे वह पुण्य भूमि होगी।

कोवलन — झिडककर क्यो, तुम पत्थर हो जो तुम्हे दु ख दद असर नहीं करता या तुम्ह यह मालूम नहीं कि मैं फिर माधवी क आकषण म डूब गया हूँ या सब कुछ जानकर भी तुम मर सामने अनजान बनने का नाटक कर रही हो।

कन्नगी — घर के हर आदमी, हर जीव की बराबर जानकारी रखना गहणी का धम है। और मैं पत्थर भी नहीं हूँ। सच्चे हृदय स आपके सुख म अपना सुख अनुभव करती हूँ बस इसी स चप हूँ।

कोवलन — बेशर्मी से हँसकर तब ठीक है। अब मेरा सुख देखना—मैं खुल खेलूगा सयम के सीखचो म जकडी हुई अपनी उच्छ ख-लता को मुक्त नभ का पछी बना दूगा। मैं भी दखूगा, मन क आकाश की सीमा कहाँ तक है।

करुण सगीत।

मानाइहन — ढाई बरस बीत गये। इतन दिनो मे क्या से क्या हो गया। आह ! सोचता था मासात्तुवान चेट्टियार के लौट आने पर कोवलन उनके प्रभाव से सुधर जायेंगे। सो लौटत हुए उनका जहाज ही डूब गया। और ससुर के साथ ही साथ तरे और इस कुल के अच्छे दिन भी गये।

कन्नगी — जान दीजिए पिताजी। बस यही आशीर्वाद माँगती हूँ कि मेरे सुहाग का नूपुर सदा यो ही गूजते रहें।

माधवी का घर।

माधवी — सलज्ज। बच्चे के रोने की आवाज सुनो बेटी न तुम्ह पिता का पद दिया है, तुम उसकी माँ के पगो म सुहाग के नूपुर ला दो।

कोवलन — हँसकर पिता विलासी, माँ रूपजीवा। दानो सन्तान की इच्छा स जिस सन्तान को जन्म नहीं दिया, उसकी माँ सुहाग के नूपुर पहनने के योग्य नहीं, और न उसका पिता ही पिता कहलाने के योग्य है।

माधवी बात पलटकर, हँसकर अरे मैंने तो हँसी की।

कोवलन बनकर हँसी थी ? तब ठीक है। हँसो हँसो और हँसाओ। जब तक कोवलन कोष के मोती माणिक और सोना है, रूप जीवाओ, तुम हसती ही रहोगी। हँसता है

माधवी रूपजीवा! हा रूपजीवा के घर जन्म लिया है मैंने। परन्तु प्राणेश तुम्हारे मुह से केवल यह सुनना चाहती हूँ कि मैं भी ऊँचे कुलो की सती स्त्रिया की तरह ही तुमसे प्रेम करती हूँ।

कोवलन तुम्हार प्रेमका मैं आदर करता हूँ।

माधवी प्रसन्न होकर सच ?

कोवलन फिर वरदान मागना चाहती हो ! मेरे पास ।

माधवी बात काटकर नागरत्ना, मदिरा पात्र उठा ला।

कोवलन लाओ मदिरा लाओ हास विलास और कटाक्ष लाओ। सब-कुछ मुझे दो। मेरे पास अब तुम्हे देने का कुछ नही रहा।

पात्र खटकते हैं।

माधवी तू रखकर जा नागरत्ना। मैं पिलाऊँगी। ढालती है तुमने अब तक मुझे जो रत्नमणिया और द्रव्य दिया है वह सब लेखा कर कन्नगी को दे दो और उसके शरीर के सारे गहने उसके सुहाग के नूपुर मुझे लाकर दे दो। मैं कल इन्द्रोत्सव में तुम्हारे साथ पहनकर जाना चाहती हूँ।

कोवलन पीकर पात्र रखता है। पात्र फिर भरा गया।

माधवी मैं न तुमसे कुछ माग रही हूँ न दे रही हूँ, बस, तुम्हारे द्वारा एक परिवतन कराना चाहती हूँ। इसमें कन्नगी के साथ भी पूरा न्याय होगा।

कोवलन पीकर अवश्य न्याय होगा।

कन्नगी का घर।

कोवलन शराब में चूर अपने सब गहने दे दो।

कन्नगी लीजिए। गहने उतारकर रखती है

कोवलन समेटकर और यो भी उतार।

कनगी नूपुर।

कोवलन हा-हाँ ला झटपट !

कनगी मेरे ससुर जी क दिये हुए ह। सुहाग के नूपुर मेरे ह !

कोवलन नही देगी। मारता ह

देवती सब कुछ सहा महाराज, मेरी सती स्वामिनी पर हाथ उठाआग तो जाकर राजा स गुहार करूँगी।

कनगी रोते हुए नही, और मारिए। मार डालिए। फिर य सुहाग के नूपुर जिसे चाह दे दीजिएगा।

कोवलन धीरे धीरे चला जाता है माधवी का घर। गहनो की पोटली उलटकर।

कोवलन लो अपन गहने।

माधवी और नूपुर !

कोवलन कनगी, वह धन जो मैंने तुम्ह दिया है, नही चाहती।

माधवी तेजी से पर मैं नूपुर चाहती हूँ।

कोवलन दुख से नूपुर' के लिए आज मैंने कनगी पर हाथ भी उठा दिया माधवी।

माधवी उत्सुक फिर ?

कोवलन फिर उसके आसू दखकर मरे सस्कारा का देवता जाग उठा हागा। मैं उस भूल जाना चाहता हूँ। बोलो कल इद्रात्सव म चलोगी ? महाराज करिहारवक्तवन उत्तर भारत तक विजयी हाकर लौटे है, इस वार का उत्सव अपूव होगा।

माधवी महाराज विजयी हुए हैं। जब मैं भी विजय पाऊँगी तब उत्सव मनाऊँगी।

कोवलन तो मेरे साथ उत्सव म नही चलोगी।

माधवी नही। एक बार नही। सौ बार नही।

कोवलन बेशर्मी की मस्ती का जामा पहनाकर अच्छा, तब हम जायेंगे। चलने लगता है हम समुद्रतट पर उत्सव मनायेंगे। हम अपने आपका रिझायेंगे। जाता है

। कहकहो का हुजूम। मेले की
ॅ स   हो तो मेले की गूज का
सिलसिला दिया जाय जिससे
की व्यापकता सिद्ध हो। विजय
नृत्य गीत आदि की ध्वनिया भो
ए॑। रथो की खडखड। घोडो की
े की घटिया दो रथ रुकते हैं।
ो उतावली केवल तुम्हे ही नही,

ेदेखो कोवलन चेट्टियार चले जा

ड। उसकी वाता को। अपने हाथा

रो और उनकी बडी मित्रता थी,
भरा करते थे।
ार थी।
म से निकल जाते हो, और देखते भी

े तो हो? अच्छा मैं ता तनिक
। जल्दी जल्दी जाता है
पना। प। या आज जोदेख रहा हूँ वह
मित्र परिचित सब इस मेले म मुझे
ठीक है। अब मेरे पास रथ नही है

? वाह अच्छे मिले इस मेले मे!
घूम रही थी सभी जने किसी न
रहे थे। मैं अकेली, मुझसे भला कौन
ऽ भी अकेले खडे थे, तुमसे भी अब
।!

कोवलन तेजी से आता है।

कोवलन चौखकर माधवी, तुम तो कहती थी मेले मे नही आऊँगी। फिर अब इनके साथ

माधवी धीरे से धीरे बोलो, चारो ओर भीड देख रही है।

कोवलन उसी तरह तेजी से देखने दो, मैं दुनिया को दिखाना चाहता हूँ कि यह विषकन्या है जो धनिक प्रेमियो को अपने चुम्बनो से डस डसकर मार डालती है। इस कुलटा विश्वासघातिनी ने मेरा सवनाश किया अब यै दूसरे का सवनाश करगी तीसरे का करेगी, सैकडो का सवनाश करेगी।

माधवी हँसकर मैं वश्या हूँ। द्वेष करती हूँ कुछ लोग कहते ह कि मुझे अपनी ही जाति म द्वेष है। मैं गहस्थिया से सतियो देवियो स ईर्ष्यावश मोर्चा लेती हूँ और उन्ह घुला घुलाकर मारने के उपायो म लगी रहती हूँ। कोई कहता है मुझे मानव-मात्र से घणा है, मैं ममाज का नाश करती हूँ। कोई यह नही देखता कि वेश्या स्वय अपने ही से घणा करने पर बाध्य है। क्योकि परम्परा से घणा के सस्कारो म पाली जाती है। जो स्त्री गहिणी की तरह कामकाजी और जग सचालन का भार वहन करने के योग्य थी, उसे पुरुषो की विलास वासना का साधन मात्र बनाकर समाज म निकम्मा छोड दिया जाता है। फिर क्या न वह समाज से घणा करे ? क्यो न पूरी लगन और सचाई के साथ ममाज का सवनाश कर ? उसे पूरा अधिकार है।

कोवलन मैंने तुम्हारे लिए बहुत त्याग किया है। अपनी सती पत्नी का छोडकर तुम्हारा बना हूँ।

माधवी तुमने मेरे लिए कुछ भी नही किया। जो कुछ किया अपनी वासना की तृप्ति के लिए किया। और तुम, जो अपनी सती पत्नी के नही बने मेरे क्या बनोगे ? चले जाओ मेरे सामने से।

कोवलन दात पीसकर माधवी, मैं तेरा गला घोट दूगा। तू मेरा अपमान करती है ? मेरा ?

कोवलन हँसकर तुम तो बोलती

कोई एक वो देखो कोवलन और चे
लगा ?

कोई दूसरा अरे भई, दोना ही पुरान वै
परकटी सुनात हागे।

तीन
जाते हैं

चेलम्मा हँसकर बात तो ठीक
हैं।

कोवलन निसास डालकर हाँ चे

चेलम्मा अच्छा बेटा, तुमन तो लाखा

कोवलन यही अब तक नही समझ प
सब गँवा दिया फिर ऐसा ल
पास है।

चेलम्मा बेटा जो वैभव को प्यार करे
का चाहनवाला एक जगह का
रखना। अच्छा एक बात बत
किससे अधिक प्यार मिला ?

कोवलन मुझ दोनो का प्यार मिला है

चेलम्मा जब दोनो का समान प्रेम था
व्यवहार क्यो नही किया। क
को दे दिया। और माधवी ह
हा हा, भगवान क्या साक्षात
समुद्र तट पर तुम्हारी प्रिया
के साथ मेल का आनन्द ले र

कोवलन उभरती प्रतिहिंसा से मा

माधवी जीवन हँसने के लिए है चे
है न !

कोवलन तेजी से आता है।

कोवलन चीखकर माधवी, तुम तो कहती थी मेले मे नही आऊँगी। फिर अब इनके साथ

माधवी धीरे से धीरे बोलो चारो ओर भीड देख रही है।

कोवलन उसी तरह तेजी से देखने दो, मैं दुनिया को दिखाना चाहता हूँ कि यह विषकन्या है जो धनिक प्रेमियो को अपने चुम्बनो से डस डसकर मार डालती है। इस कुलटा विश्वासघातिनी ने मेरा सवनाश किया, अब य दूसरे का सवनाश करेगी तीसरे का करेगी, सैकडो का सवनाश करेगी।

माधवी हँसकर मैं वेश्या हूँ। द्वेष करती हूँ कुछ लोग कहते है कि मुझे अपनी ही जाति से द्वेष है। मैं गहस्थियो से सतियो देवियो से ईर्ष्यावश मोर्चा लेती हूँ और उन्ह घुला घुलाकर मारने के उपायो म लगी रहती हूँ। कोई कहता है मुझ मानव-मात्र से घृणा है, मैं समाज का नाश करती हूँ। कोई यह नही देखता कि वेश्या स्वय अपने ही से घृणा करने पर बाध्य है। क्योकि परम्परा से घृणा के सस्कारो म पाली जाती है। जो स्त्री, गृहिणी की तरह कामकाजो और जग सचालन का भार वहन करने के योग्य थी उसे पुरुषो की विलास वासना का साधन-मात्र बनाकर समाज मे निकम्मा छोड दिया जाता है। फिर क्यो न वह समाज से घृणा करे? क्यो न पूरी लगन और सचाई के साथ समाज का सवनाश करे? उसे पूरा अधिकार है।

कोवलन मैंने तुम्हारे लिए बहुत त्याग किया है। अपनी सती पत्नी को छोडकर तुम्हारा बना हूँ।

माधवी तुमने मेरे लिए कुछ भी नही किया। जो कुछ किया अपनी वासना की तृप्ति के लिए किया। और तुम, जो अपनी सती पत्नी के नही बने, मेरे क्या बनोगे? चले जाओ मेरे सामनेसे।

कोवलन दात पीसकर माधवी, मैं तेरा गला घोट दूगा। तू मेरा अपमान करती है? मेरा?

माधवी फटकारकर दूर रह। तू भरी भीड म मेरा अपमान करेगा ता क्या मैं तुझे छोड दूगी? जा तू वह कोवलन नही रहा जिसके कुल की साख राम, मिस्र, बाबर तक पूजा करती थी।

दु ख भरा सगीत। कनगी का घर। पद चाप आ रही है।

कनगी रुँधे हुए कठ से जसे बडी देर से रो रही हो कौन? अरे आप?

कोवलन बडा अँधेरा है। दिया नही जलाया?

कनगी धीरे से घर म तेल चुक गया है। देवती कही से लाने गयी है। स्तब्धता

कोवलन कनगी, सदा की तरह आज भी कुछ मांगने आया हूँ।

कनगी दीनतापूर्वक सच कहती हूँ, केवल सुहाग के नूपुर बचे हैं। इन्हें न मांगना।

कोवलन मैं क्षमा मागने आया हूँ।

कनगी प्राणनाथ, ये क्या कर रहे हैं? उठिए उठिए। आप मेरे पर छुएँगे तो नरक मे भी जगह नही पाऊँगी।

कोवलन आज मेरी आँखें खुल गयी। मैंने देख लिया

कनगी अब उसे सुनाकर क्या कीजिएगा? पछतान से भी क्या लाभ? जो खोया वह अनुभव बना अब आगे की सुधि लीजिए। अभी भी कुछ नही बिगडा।

कोवलन अब बच क्या गया मेरे पास? धन मान, व्यापार

कनगी सब कुछ फिर से आ सकता है। आपको व्यापार का अनुभव है फिर से अपना कारोबार फलाइए। परिश्रम ही तो करना पडेगा।

कोवलन धन भी लगाना पडेगा। वह कहा से लाऊँगा। मैंने सब कुछ तो नष्ट कर दिया।

कनगी पर मेरा सुहाग ईश्वर की कृपा स सुरक्षित है। इन नूपुरों को ले जाकर बेच दीजिए। नये जीवन का श्रीगणेश करने के लिए पर्याप्त धन मिल जायगा।

कोवलन विचित्र हो कनगी, जिन नूपुरों को अभी तक प्राणपण से अपनाये हुए थी, उन्हीं को

कनगी जो स्वयं ही मेरे सुहाग है, नूपुर उनसे बढ़कर थोड़े ही हैं। ये उनके काम आ सकते हैं, किसी दूसरे की नहीं मिल सकते।

कोवलन निष्ठा में तुम मुझसे बहुत बड़ी हो कनगी। मैं उसी का सहारा लेकर नवजीवन पाऊँगा निश्चय पाऊँगा। पर अब इस नगर में नहीं रहेंगे। यहाँ अब मेरी प्रतिष्ठा नहीं रही।

कनगी तब फिर कहाँ चलेंगे?

कोवलन मदुरा। नये नगर में नये सिर से जमने में सुविधा होती है। दूसरे, ये नूपुर बहुत मूल्यवान हैं। हर कोई इन्हें मोल भी नहीं ले सकता। मदुरा में जिस सुनार से ये बनवाये गये थे वही इन्हें उचित मूल्य पर बिकवा भी सकेगा।

कनगी जो उचित समझें करें।

कोवलन हम आज रात बीतने से पहले ही यह नगर छोड़ देंगे। आज चैत्र का सोमवार है। आज रात्रि हमारे पुराने प्रख्यात कुल का अन्न जल इस नगर से उठ जायगा।

दुःखभरा संगीत। फेड आउट।

फेडइन। समुद्र गर्जन थम रहा है, नूपुर-ध्वनि यथावत मंद स्थिर गति से हो रही है।

कहानी हूँ, फिर क्या हुआ मन?

मन मन बड़ा दुखी हुआ। अपना घर छोड़ते हुए किसका मन नहीं दुखी होता।

कहानी यही तो कहती हूँ। तुम पल पल मेरा मेघर छुड़ा देते हो मुझे दुख नहीं लगता होगा?

मन तुमको तो मेरे साथ के कारण भटकने की आदत पड़ गयी है।

पर वेचारी कन्नगी जो रथ और पालकी छोडकर कभी पदल नही चली पाव कोस म थककर चूर चूर हो गयी। पति स पूछन लगी

कन्नगी मदुरा अब और कितनी दूर है स्वामी ?

कोवलन प्यार से हँसकर पगली, अरी, अभी सैकडा कास पार करन हैं।

दूर पर एक स्त्रीओर पुरुष की सम्मिलित हँसी।

कन्नगी भयचकित कहा हँस रह हैं ? कौन हैं ये लोग ?

कोवलन ये वो हाट है जो केवल धनवाना का हसाता रिझाता है, और जो इस समय मुझे अपना घर, नगर तक छोडन के लिए बाध्य कर चुका है। नि श्वास

कन्नगी मेरे मन मे आसू उमड रहे है। एसा लगता है कि इन आँसुओ मे यह नगर डूब रहा है, मैं डूब रही हूँ, आप भी प्राणनाथ, आप भी

कोवलन व्यथा से तुम उत्तेजित हो गयी हो कन्नगी। अपन को सँभालो।

मन और अपने का सँभालती, अपन पति को सँभाल रखती हुई कन्नगी, माग के दुख सुख भर अनुभवा से प्रौढ होकर अत म मदुरा नगर के निकट पहुँच गयी। गाव म एक गडरिए के घर डेरा डाला।

कहानी हूँ, फिर ?

मन फिर कावलन कन्नगी का एक नूपुर लेकर मदुरा के लिए रवाना हुआ। चलत समय कन्नगी बोली, तुम्हारी राजी खुशी के समाचार कैसे मिलेंगे ? कावलन न हँसकर कहा कि अरी, कौन बडी दूर जा रहा हूँ, कल-परसा तक लौट आऊँगा। फिर भी जब वह उदास रही तो कोवलन न आँगन म एक तुलसी का बिरवा लगा दिया, कहा कि तुलसी माई हरी रहें तो जानना कि मैं कुशल से हूँ जो सूख जायें ता समझना कि मुझ

पर मक्ट आया है और जड से उखड जायें तो जान लेना कि मैं मर गया । कन्नगी काप उठी। कोवलन मदुरा आया। ढूंढत-ढूंढत उसी सुनार की दुकान पर पहुँचा जिसने नूपुर बनाये थे।

कोवलन कुपुस्वामी की दुकान यही है ?

एक हाँ, ठहरिए, स्वामी अभी अन्दर बातें कर रहे है।

विराम।

कुपु० धीरे धीरे बेटा, मन्त्री से लेकर साधारण अधिकारी तक सब के मुह घूस देकर बन्द कर दिये हैं। राजा को नूपुर के चोरी जाने पर विश्वास हो गया है। पर रानीजी हठ पकड़े हैं। उन्हे विश्वास नही आता। आह देखो, क्या होता है। अब नूपुर तो मैंने गलाकर सोना बना लिया। न्याय से राजा मुझे पकड नही सकते। आगे देखा जायेगा चल दूकान का काम देखू

विराम।

कोवलन कुपुस्वामी !

नौकर वो आ रहे हैं।

कुपु० कहिए क्या काम है ?

कोवलन यह नूपुर बेचना है।

कुपु० दगू य नूपुर आपको कहा मिला ?

कोवलन मेरी पत्नी का है।

कुपु० ऐसे नूपुर जगत म केवल दो ही सुहागिनो के पास हैं। एक तो मदुरा की महारानी, और दूसरे कावेरीपट्टणम के चेट्टियार मासात्तुवान की पतोहू के पास। दोनो ही मेरी दूकान से बन कर गये हैं।

कोवलन लजाकर यह अभागा ही चेट्टियार मासात्तुवान का पुत्र है।

कुपु० तुम ? आप ? कोवलन ? हाँ स्मरण आता है। विवाह के अवसर पर जब मैं ये नूपुर लेकर गया था तब आपको देखा था। परन्तु आपकी यह दशा ?

कोवलन बुरे दिनो का प्रभाव है भाई।

कुपु० चतुराई भरे स्वर में हा ये तो ससार-चक्र है चलता ही रहता है। किसी का बुरा समय किसी को भला बनकर भी फलता है। अच्छा आप बठिए, मैं अन्दर जाकर इसको तोल कर लाऊँ?

राजमहल।

कुपु० महाराज की जय हो! पुरस्कार दीजिए! महाराज का सुहाग नूपुर मिल गया। यह लीजिए।

महाराज हा वही नूपुर है। कहा मिला? चोर पकड लिया गया क्या?

कुपु० चोर को मैंने फुसलाकर दूकान पर बठा रखा है।

महाराज मत्री को बुलाओ। हमारा आदेश है कि चोर को इसी समय शूली पर चढा दिया जाय। उस नीच ने महारानी का नपुर चुराने का साहस किया।

विराम। सुनार की दुकान। तीन-चार जोडी पैरों की आवाज।

कुपु० पकडो इसे। यही चोर है।

कोवलन घबरा कर कुपुस्वामी यह क्या? मैं चोर?

सिपाही ये मनुष्य चोरो जसा तो नही जान पडता

कुपु० तुमसे क्या? तुम्हें राजाज्ञा का पालन करना चाहिए। जाओ इसे शूली पर चढ़ा दो।

कोवलन चौंककर शूली? कुपुस्वामी यह अन्याय? मेरा नूपुर कहाँ है? बोलो, मुझे किस अपराध के कारण शूली दी जा रही है?

कुपु० इसे जल्दी ले जाओ न! और सुनो शूली देकर लौटना तो अपना पुरस्कार ले जाना यहाँ स। जाओ।

सिपाही चल उठ पापी।

कोवलन पापी हूँ सचमुच पापी हूँ। मैंने एक सती के साथ अन्याय किया था, इसीलिए मुझे भी अन्याय मिला। पर अब तो मैं अपने को सुधार रहा था अन्याय का प्रायश्चित [illegible] था। तब भी मुझे यह दड मिला? [illegible], तू बता

हमने उचित न्याय किया है।

कन्नगी उन्हें महारानी के नूपुर चुराने की आवश्यकता न थी। उनके पास स्वयं उतने ही मूल्यवान नूपुर थे। एक नूपुर बेचने के लिए ही व तेरे नगर में आये थे।

महाराज तुम अपनी बात का प्रमाण दे सकती हो?

कन्नगी दूसरा नूपुर झन्न से राजा के सामने पटककर ले प्रमाण। सत्य के लिए प्रमाण की कमी नहीं है। केवल अन्यायी के राज में न्याय की कमी है। जिस समाज में, जिस राज में, जिस युग में सत्य की लीक पर चलनेवाले दुख पाते हैं, पग पग पर अपमानित होते और कुचले जाते हैं, जहाँ पाखंडी और अन्यायियों का बोलबाला है, उन्हें सम्मान मिलता है उस समाज का, उस राज का उस युग का अन्त होगा। जिस अन्याय की आग से मेरा अन्तर हृदय दहक रहा है वही आग अन्यायियों से भरी हुई इस धरती को जलाकर राख कर देगी।

आग आग आग का कोलाहल। नगरव्यापी अग्निकांड का रोमांचकारी दृश्य। करुण पुकार और क्रंदन से भरा आर्त्तनाद।

समुद्र की ममर ध्वनि करती लहरें। नूपुर की रुनझुन जो चिड़ियों के कलरव में लय हो जाती है।

कहानी हूँ, फिर?

मन फिर क्या री? कहानी पूरी हो गयी, कोवलन मरा, कन्नगी सती हो गयी, मदुरा जलकर भस्म हो गयी और अब ये कावेरीपूपटणम भी समुद्र की लहरों में दो हजार वर्षों से सो रहा है।

कहानी और माधवी?

मन उस कथा में तो कोवलन की मृत्यु का समाचार सुनकर माधवी बौद्ध भिक्षुणी हो गयी थी। पर मैं देखता हूँ रानी, कि माधवी

अभी भी अपनी परम्परा मे वेश्या है अपमानित और लाछित है और कनगी वह भी अभी तक अपमानित है, लाछित है, दासी है। युग बीत गये, मानव की मान्यताएँ बदल गयीं। स्त्री पुरुष के समानाधिकार की चर्चा भी खूब होने लगी। पर सच तो यह है रानी कि पुरुष की नजरो मे स्त्री अभी भी या तो दासी है या खिलौना। ऐसी दशा मे सुहागिनो के नूपुर और वेश्या के घुघरू सदा आपस मे एक-दूसरे के शत्रु बने रहेंगे।

कहानी राम करे जैसे और कहानिया पूरी होती हैं वैसे ही मानवी असमानता की यह दुखभरी कहानी जल्दी ही पूरी हो।

महाबोधि की छाया में

पात्र

चन्दना
मदयन्ती
विजया
चन्द्रामा
माता
सेठानी
हेंडीवा
उद्घोषक
आचार्य गन्धोत्कट
वृषभ सेन
जीवक
श्रेणिक
चुल्ल सेट्ठि
धनदत्त
विद्याधर
चेटक
दास
सेठ
पटाचारा प्रेमी
रत्मा सरदार
व्यापारी
बुद्ध
महावीर
—आदि

उदघोषक ईसा पूव की पांचवीं छठी शताब्दी मे भगवान बुद्ध और तीर्थं कर महावीर के काल का भारत राजतन्त्र तथा गणतन्त्र दोनो ही पद्धतियो से परिचालित था। उस समय देश बाहरी आक्रमणो से मुक्त था। उत्तरापथ सोलह महाजनपदा मे बँटा हुआ था अग, मगध काशी कोसल, वज्जि, मल्ल, चेदि, वश, कुरु पचाल मत्स्य, शूरसेन अश्मक, अवन्ती, गन्धार और कम्बोज। इनके अतिरिक्त शाक्य, बूलिय कालाम, भग कोलिय आदि क्षत्रिय जातियों के गणतन्त्र भी थे। उत्तर और दक्षिण मे अनेक बडे वभवशाली नगर थे। दूर दूर तक व्यापार होता था, देश धन्यधान्य से समृद्ध था। कौशाम्बी के राजा उदयन, अवन्ती के चण्डप्रद्योत, कोसल के प्रसेनजित तथा मगध के महाराज बिम्बसार का यश चारों ओर फल रहा था। यह सब होते हुए भी देश एक बहुत बडी धार्मिक और सामाजिक क्रान्ति से गुजर रहा था।

इन्हीं दिनो कौशाम्बी मे सुप्रसिद्ध वीणावादक, उत्तम गजो की सवारी करने के लिए विख्यात, वासवदत्ता के अमर प्रेमी महाराज उदयन राज्य करते थे। वे इतने लोकप्रिय थे कि अनेक युवको के कक्ष मे ताम्बूल विक्रेताओ की दूकानो पर उनके चित्र लटके रहते थे। उनकी अनेक मूर्तिया बनती थीं।

जीवक दव साक्षी हैं आचाय, मैं सत्य को प्रतिष्ठित कर रहा हूँ। महर्पि पिप्पलाद, भारद्वाज, नचिकेता आदि उपनिपतकारो तथा वासुदेव श्रीकृष्ण के नानयन को सर्वोपरि सत्यमाग मान, अहिंसा अनुगामी होकर चलने मे ही अपना और जन का कल्याण मानता हूँ। सस्कार न प्रदान कर मनुष्य जाति के एक अग का जीवनमृत बनाये रखना—यही नही, अनायास वेदमत्र सुन लेने से ही किसी को दड देना—यह जडता, यह अज्ञान मेरे लिए अग्राह्य है।

आचाय कुलागार ! ब्राह्मणाघम !

जीवक ब्राह्मण कौन है आचाय ? जीव, देह, जाति, कम अथवा धर्मी ? अनेक क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र भी ऋषि हुए हैं। ज्ञानाजन करना मनुष्यमात्र का अधिकार है।

आचाय आयुष्मान् तुमने मेरे ममत्व की कठिन परीक्षा ली है। किन्तु परम्परागत सनातन धम की अवहेलना करनेहारा मेरी दृष्टि म अक्षम्य एव दडनीय है। मेरी पढाई हुई सब श्रुतियो का त्याग कर। मैं कौशाम्बी के ब्राह्मणसघ से तुझे निष्कासित करता हूँ। चला जा यहा से। श्रेष्ठि वषभसेन, यज्ञ के निमित्त तुम्हारा आज का सकल्प खडित हुआ। शुभ मुहूत म तुम्हें सकल्प लेना होगा।

वषभसेन परसो हमारा साथ वैशाली के लिए जायगा।

आचाय नक्षत्र और ब्राह्मण अभी साम तो महाजनो के अधीन नही हुए वषभसेन। तुम्हारी साथयात्रा अन्य मुहूत की प्रतीक्षा तक स्थगित रहेगी।

अल्प विराम।

श्रेणिक लो चुल्लसेटिठ। साथयात्रा तो कुछ दिन के लिए स्थगित हुई। आनन्द मनाओ। चलो, वारागनाओ का दल लेकर वन क्रीडा कर आयें। मेरे पास कपिश और हारहूर की अनुपम मदिराएँ हैं।

चुल्लसेटिठ श्रेणिक, तुम्हे भला विनोद सूझ रहा है। मेरे तो प्राण सूख रहे

हैं। अनेक यज्ञ करते करत मेरा भाडार चुक रहा है। सो के
था, कुछ धन कमा लाऊँ न के

वषभसेन अब भी क्या हुआ महाजन। हमारा साथ अवश्य जायगा॥

चुल्लसेठ्ठि अरे सो तो जायगा ही। भय इस बात का है कि इम मुह हैं। टल जाने से मेरे निमित्त ब्राह्मणमघ कही किसी नय याग र अनुष्ठान का विचार न कर डाले। क्यों?

दो-तीन लोग हँसते है

श्रेणिक हँसते हुए जब इतन वडे लक्षाधिपति होकर तुम इस प्र डे की बातें कर रहे हो तो औरो की क्या दशा होगी चुल्लसेठि

चुल्लसेटिठ मैं अनक के मन की बात कह रहा हूँ श्रेणिक। हम म कौन वैश्य जो इन मूल्यवान यज्ञ अनुष्ठानो स घबरा न गया हो। म वडे नृपति तक घबरा उठत हैं। योग

धनदत्त ब्राह्मण भूदेव हैं, मैं निरादर नही करता, परन्तु इतना अत कहूँगा कि इनके क्रोध और शाप के भय ने समाज का आश्रव विश्वास हर लिया है। धम का मनमाना अथ कर यह। इन ब्राह्मणेतर वर्णों पर मनमाने अत्याचार करते हैं। पण

चुल्लसेटिठ शूद्र पामर है उन्ह वदम श्र सुनन का अधिकार नही—स या है ऐसा ही हो—पर जिन्ह हम अपनी सहधर्मिणी कहते हैं, स्त्रियों का ही हमारे धम म क्या ध्यान है? ब्राह्मण ऋषिगण अपनी वासनापूर्ति के लिए कई कई पत्नियाँ रखत है, मा। इसी का नाम तपश्चर्या है? ही

वषभसेन एक ब्राह्मण ही नही, सारा समाज दोषी है। विलास वास है इस समय सवत्र व्याप्त है, क्या ब्राह्मण क्या अब्राह्मण आजीवक साधु भी दुराचारी है। शीलधम इस समय रहा कहाँ है? ईश्वर ही दया करें। अस्तु। मैंने निश्चय किया कि साथ पूव निश्चित मुहूत पर ही वशाली के लिए प्रयाण करेगा।

श्रेणिक और साथ की कुशल कामना के हेतु यज्ञ?

वृषभसेन नि श्वास एक निरपराध दास की हत्या का पातक लेक

:931, उज्जैन (म० प्र०)
हां, पता नही कहाँ-कहाँ। अन्त मे होल्कर

अलाप रहे ह 'बडो बेटा जाग अरे भाई तुम क्या पीछे पडे हो? अर अरे, वो देखो, उस अश्वारोही का घोडा कसा मचल रहा है उंह, भट्टर, तू तो लगड़ा की तरह मचककर चल रहा है अर ओ निदय, कहा अपनी गठरी डाल रहा है, दखता नहीं शकट पर बच्चा सो रहा है। हाय हाय, ये सत्तू का बोरा तो फट गया! अर भारी बोझा एक ओर झुक गया है जिससे सत्तू गिर रहा है, इतना चिल्ला रहा हूँ फिर भी नहीं सुनता उह कहाँ गड्ढे मे शकट डाल दिया। आ आलसी, गन्ना चूसना छोड़, तेरे शकट के बारे गिर रहे हैं। चुपरह चल।' शोर और बला की घटियाँ, अश्व वस आदि गतिमान हैं। कोई ढूर पर टीप भी टेढ रहा ह। इस पृष्ठभूमि में वषम सेन और धणिक की वार्ता चल रही ह।

भाग्य पर भरोसा कर निकल पडे तो आश्चय क्या है ? अनु-
मान, बल के सामने मिथ्या भय नही टिकता श्रेणिक।

श्रेणिक सुना ह आप तो विदेशो म भी माल लकर गये हैं सेटि !

ऋषभसेन दो बार, कि तु अपना साथ लेकर नही। तुमस किसने कहा ?

श्रेणिक गतवष काशी गया था। वहाके सद्विपुत्त मेघकुमार न बतलाया
था। उनकी सुवण द्वीप की यात्रा म आप भी उनके साथ थे।

ऋषभसेन हाँ ब्राह्मणो के भय से अधिकाश जन अपनी विशेष यात्राओ
का ढिढोरा नही पीटते। यद्यपि जान सभी जातहैं। हँसकर
यह कसा व्यग्य है।

श्रेणिक आपने अब तक किन-किन देशो की यात्रा की है सेटि ?

ऋषभसेन कपिश और काम्बोज तक गया हूँ। समुद्र द्वारा सुवणद्वीप
और सिहल तक यात्रा की है।

श्रेणिक बडा भय लगता होगा समुद्र-यात्रा म ?

ऋषभसेन भय तो है ही, समुद्र म अनेक भय है। उसम तिमि और
तिमिंगल नाम के बडे बडे देवमास रहते है। लहरें इतनी
ऊँची ऊँची उठती हैं कि देखकर प्राण कम्पित हो उठत है।
कही मकर चक्र दिखलाई दते है तो कही जलराशियो के यूथ।
एक बार मैंने एक बडे विशालकाय तिमिंगल को तरत हुए
देखा था। उसके वदन का तिहाई भाग पानी के ऊपर चटटान
सा दिखलाई दे रहा था। जस ही उसन अपने माणिक की
पक्तियो से झलकने वाले होठ फलाय समुद्र का पानी उसके
मुख से हरहराकर निकलने लगा अनेक बडे बडे कच्छप,
जलअश्व, सूस और न जाने कितनी मछलिया उसके पट म
समा गयी। उस दिन हमारा पोत तिमिंगल द्वारा नष्ट होत-
होते बचा। ओह !

श्रेणिक भयकर है समुद्र का अनुभव।

ऋषभसेन कभी पानी के नीचे छिपी हुई चट्टानो से टकराकर पोत टूट
जात हैं, कभी कालिकावात के थपडो से नष्ट हो जाते है,
अथवा अनजानी दिशाओ मे बह जात हैं। कभी कभी नीले

मई 1931, उज्जैन (म० प्र०)
हाँ वहाँ, पता नही कहाँ-कहाँ। अन्त मे होल्कर

— —

वस्त्रधारी जलदस्युओं के आक्रमणों का सामना करना पड़ता है। परन्तु स्थलमार्ग में भी अनेक आपदाएँ कम नही आती? दुर्गम मार्ग, हिंस्र पशुओं से भरे हुए वन, दस्युभय, सभी कुछ तो रहता है। अजपथ, मडपथ शकुपथ, वशपथ, दरीपथ, वेत्ताचार आदि कैसे कैसे अत्यन्त कठिन मार्ग हैं। वशपथ के आगे सोना मिलता है। मार्ग में एक नदी है। यात्रियों को सचेत कर दिया जाता है कि नदी के जल को न छूना

श्रेणिक क्या?

वृषभसेन उस जल के स्पर्श से मनुष्य पत्थर बन जाता है।

श्रेणिक अरे! फिर वह नदी कैसे पार की जाती है?

वृषभसेन नदी के उस पार खड़े बांस हवा के वेग से इस पार तक झुक जाते हैं, इतने बड़े बड़े हैं। बस मनुष्य उन्ही के सहारे लटक जाते हैं। हवा के वेग से बांस जब ऊपर उठते हैं तब उस पार पहुँच जाते हैं। यह वशपथ है। ऐसे ही एक अजपथ का अनुभव भी मैंने सुना है। वह बड़ा ही विचित्र है।

श्रेणिक क्या?

वृषभसेन किरात देश के बाद सुवर्णभूमि जाने के लिए एक जगह यात्री बकरों को मारकर उनकी खालें अपने शरीर से बांध लेते हैं।

मनुष्य सात दिना तक सोता रहता है। अनुभवी कणधार के बतलाने से हम सतक हो गय और किसी प्रकार का धोखा नही उठाना पडा। धन वडी कठिनाई से अर्जित किया जाता है श्रेणिक, और ज्ञान भी।

बलो की घटिया। जनरव।

वपभसेन वशाली। लो देखो नगर के परकोट के पार ऊँचे सतखडे प्रासाद और चैत्या की शोभा चादनी म कसी निखर रही है। बुर्जिया पर खडे हुए सावधान पहरुए मशाल लिये चतुर्दिक अपनी दृष्टि दौडा रहे है।

श्रेणिक जान पडता है हमसे पहले कोई साथ यहाँ आया है। परकोटे के आगे इतने शकट खडे हैं।

वपभसेन नगर द्वार बन्द हो गय हैं सम्भवत। कोई बात नही। हमारा साथ भी इन्ही के साथ ठहरेगा। कौन जाने कोई अच्छा सौदा ही हो जाय।

विराम। जन कोलाहल बीच बीच मे बलो की घटियाँ टुनटुना उठती है। कहीं गाने की दूरागत टीप भी सुनायी पड रही है।

वपभसेन कौन है?

एक व्यक्ति जिज्ञासु!

वपभसेन आदरपूवक पधारिए नापित से बस कर।

एक व्यक्ति आप अपना कायकलाप चलने दीजिए। मैं यही तो देख रहा था।

वपभसेन इसमे क्या देख रहे थे आप?

एक व्यक्ति आपके परो को उष्ण जल से धोया गया फिर उन्हे दबाया गया, फिर उन पर तेल मदन हुआ, लोधचूण लगा। फिर गरम और ठडे जल से उन्हे धोया गया अब यह सुगन्धित आलेपन लग रहा है। तत्पश्चात् और भी न जाने क्या क्या लगे?

वपभसेन अब इन पर धूप दी जायगी। परन्तु यह तो साधारण नित्य'

का कम है इसमें ऐसी कौन-सी विशेष बात आप देख रहे थे ?

व्यक्ति देख रहा था कि चरण चरण में भी अन्तर है। मैं भी बड़ी दूर से चलकर आ रहा हूँ। कंटकों से तलवे लहूलुहान हो गये। कोसों का मार्ग पार करने में जो थकान नहीं व्यापी वह कोस भर दूरी पर व्यापी थी। यहाँ तक पहुँचना दूभर हो गया। परन्तु यहाँ आकर कुएँ की जगत पर आसन जमाते ही मेरी सारी थकान जाने कहाँ चली गयी। हूँ हूँ और आपके चरणों का इतना उपचार हुआ, तब भी कदाचित आप थके ही होंगे ?

वृषभसेन वेश से तो आप साधु नहीं लगते। आपका वर्ण कौन सा है ?

व्यक्ति मैं जाति और वर्ण का त्याग कर चुका हूँ। मैं स्वेच्छा से परिव्राजक हूँ। देश-देशान्तरों में भ्रमण करनेवाला जाति और वर्ण के बोझ को व्यर्थ ढोकर क्या करे। जब कि उसे सर्वत्र मनुष्य एक-सा दिखाई देता है, भले ही उसके चरणों में अन्तर हो। परन्तु यह लौकिक भेद है और लोक परिवर्तनशील है।

वृषभसेन आपके विचारों का आदर करता हूँ महानुभाव। इस समय कहाँ से पधारे हैं।

व्यक्ति दक्षिणापथ से।

वृषभसेन यह दूसरा सार्थ दक्षिण से आया है।

व्यक्ति हाँ। मदुरै से।

वृषभसेन सार्थ में माल क्या है ?

व्यक्ति मेरे लिए अब तक दो समय का अन्न था। सेट्टियों के लिए अनुपम निर्दोष हीरे चमकदार पन्ने, हर प्रकार के माणिक, पुष्पराग गोमेदक, वदूय, अत्युत्तम जाति के मोती, मूंगे, शूर्पारक, बावेरु, मिस्र और रोमक देश की नाना प्रकार की वस्तुएं।

वृषभसेन मैं आपका कृतज्ञ हूँ। महानुभाव का भोजन तो अभी हुआ न होगा। मेरा आतिथ्य ग्रहण कर कृतार्थ करें।

विलयन।

घोडो,रथो की घटियां, बाजार की चहल-
पहल के स्वर। एक वाला गायन के
स्वरो मे फूलहार वेच रहो है लाई मे
हार ! फूलो के हार ले लो फूलो के
हार !'

दू० व्यक्ति जो भन्ते ! ओ भद्र ! क्या चाहिए ?

व्यक्ति तुम्हारी कुशल-क्षेम। जग का कल्याण।

दू० व्यक्ति हँसकर इन्द्र तुम्हारा भी कल्याण करें। परदेशी हो ?

व्यक्ति कोई देश मेरे लिए पराया नही है मित्र। वैशाली गणतन्त्र है ?

दू० व्यक्ति हाँ वज्जी गणतन्त्र—लिच्छवियो और ज्ञातृको का।

व्यक्ति भव्य नगर है। आर्यावर्त म नगर बडे सुन्दर हैं।

दू० व्यक्ति बहुत-से नगर देखे हैं बन्धु !

व्यक्ति अनक। तुम्हारे आस पास के नालन्दा, चम्पापुरी, पृष्ठचम्पा, भद्दीया, आलभिका, राजगह, लाढ, श्रावस्ती, काशी, प्रयाग, कौशाम्बी, कोसल काम्पिल्य, अहिच्छत्र, कसावपुर, पश्चिम म भरुकच्छ, शूर्पारक, द्वारका, दक्षिण मे मुचिरी, मदुरै, कावेरीपूपट्टणम

दू० व्यक्ति बहुत भ्रमण किया।

व्यक्ति यह देश ऐश्वय से भरा पूरा है। नगरो मे सवत्र यही शोभा देखी। बाग-बगीचे, सरोवर चैत्य, राजप्रासाद, हाट-हवेलियाँ, राजमाग, रथमाग, आपणमाग और उनमे भरे हुए भाट, चारण, नट, गायक, विदूषक, शस्त्रकार, माली, स्वदेशी परदेशी व्यापारी, राजपुरुष कर्मी विभिन्न श्रेणियो म विभाजित हैं। लडकी, पत्थर, चमडा, धातुओ, हाथीदात उदयचिका, बसोर, कसेरे रत्नपारखी, महाजन, कुम्हार, ततुवाय सभी तो श्रेणियोंबद्ध हैं। और सभी जगह ये श्रणीबद्ध जीव अपने स्वाथ के लिए दूसरो को धोखा भी देते हैं। मनुष्य एक है परन्तु उच्चता नीचता के दुरभिमान से घिरा हुआ। हि, कसी विडम्बना है।

का कम है, इसमे ऐसी कौन सी विशेष बात आप देख रहे थे ?

व्यक्ति देख रहा था कि चरण चरण मे भी अन्तर है। मैं भी बडी दूर से चलकर आ रहा हूँ। कटको से तले लहूलुहान हो गये। कोसो का माग पास करने मे जो थकान नही व्यापी वह कोस भर दूरी पर व्यापी थी। यहा तक पहुँचना दूभर हो गया। परन्तु यहा आकर कुएँ की जगत पर आसन जमाते ही मेरी सारी थकान जान कहा चली गयी। ह ह और आपके चरणो का इतना उपचार हुआ, तब भी कदाचित आप थके ही होगे ?

वृषभसेन वेश से तो आप साधु नही लगते। आपका वण कौन सा है ?

व्यक्ति मैं जाति और वण का त्याग कर चुका हूँ। मैं स्वेच्छा से परिव्राजक हूँ। देश देशान्तरो म भ्रमण करनेवाला जाति और वण के बोझ को व्यथ ढोकर क्या करे। जब कि उसे सवत्र मनुष्य एक सा दिखाई देता है, भले ही उसके चरणो म अन्तर हो। पर तु यह लौकिक भेद है और लोक परिवतनशील है।

वृषभसेन आपके विचारो का आदर करता हूँ महानुभाव। इस समय कहा से पधारे है।

व्यक्ति दक्षिणापथ से।

वृषभसेन यह दूसरा साथ दक्षिण से आया है।

व्यक्ति हाँ। मदुरै से।

वृषभसेन साथ मे माल क्या है ?

व्यक्ति मेरे लिए अब तक दो समय का अन्न था। सेट्ठिया के लिए अनुपम निर्दोष हीरे, चमकदार पन्ने, हर प्रकार के माणिक, पुष्पराग, गोमेदक, वैदूय अत्युत्तम जाति के मोती, मूगे शूर्पारक, बावरु, मिस्र और रोमक देश की नाना प्रकार की वस्तुए।

वृषभसेन मैं आपका कृतज्ञ हूँ। महानुभाव का भोजन तो अभी हुआ न होगा। मेरा आतिथ्य ग्रहण कर कृताथ करें।

चिन्तयन।

घोडो,रथो की घटिया, बाजार की चहल पहल के स्वर। एक बाला गायन के स्वरो मे फूलहार बेच रही है लाई मैं हार ! फूलो के हार ले लो फूलो के हार !'

दू० व्यक्ति ओ भन्ते ! ओ भद्र ! क्या चाहिए ?

व्यक्ति तुम्हारी कुशल-क्षेम। जग का कल्याण।

दू० व्यक्ति हँसकर इन्द्र तुम्हारा भी कल्याण करें। परदेशी हो ?

व्यक्ति कोई देश मेरे लिए पराया नही है मित्र। वैशाली गणतन्त्र है ?

दू० व्यक्ति हा वज्जी गणतन्त्र—लिच्छवियो और ज्ञातृको का।

व्यक्ति भव्य नगर है। आर्यावत म नगर बडे सुन्दर है।

दू० व्यक्ति बहुत-से नगर देखे हैं बन्धु !

व्यक्ति अनेक। तुम्हारे आस पास के नालन्दा, चम्पापुरी, पृष्ठचम्पा, भद्दीया, आलभिका, राजगृह, लाढ, श्रावस्ती, काशी, प्रयाग, कौशाम्बी, कासल, काम्पिल्य, अहिच्छत्र, कस्सावपुर पश्चिम म भरकच्छ, शूर्पारक, द्वारका, दक्षिण म मुचिरी, मदुरै, कावेरीपूपट्टणम

दू० व्यक्ति बहुत भ्रमण किया।

व्यक्ति यह देश ऐश्वय से भरा पूरा है। नगरा मे सवत्र यही शोभा देखी। बाग बगीचे, सरोवर चत्य, राजप्रासाद, हाट हवेलियाँ, राजमाग, रथमाग, आपणमाग और उनमे भरे हुए भाट, चारण, नट, गायक, विदूषक, शखकार, माली, स्वदेशी, परदेशी व्यापारी, राजपुरुष कर्मी विभिन्न श्रेणियो मे विभाजित हैं। लकडी, पत्थर, चमडा, धातुओ, हाथीदात, उदयचिका, बसोर, कसेरे रत्नपारखी, महाजन, कुम्हार, ततुवाय सभी तो श्रेणियाँबद्ध है। और सभी जगह ये श्रेणीबद्ध जीव अपने स्वाथ के लिए दूसरो को धोखा भी देत है। मनुष्य एक ह परन्तु उच्चता-नीचता के दुरभिमान से घिरा हुआ। हि ,कैसी विडम्बना है।

दू० व्यक्ति मूर्खों के समान हँसकर बातें तो अदभुत करते हो मित्र। यह बताओ इस देश म कही युद्ध या आक्रमण की सम्भावना तो नही है।

व्यक्ति राजनीतिक अथवा आर्थिक युद्ध तो नही, किन्तु धार्मिक क्रांति के लक्षण सवत्र पाये। मैंने प्राय सब जगह देखा जहा कोई ब्राह्मणो की नि दा करता है वहा चार जन प्रसन्न होते है।

दू० व्यक्ति हा क्रा ति तो अवश्य होगी, पर तु तीथकर भी अवतरित हो चुके हैं।

व्यक्ति कहा ?

दू० व्यक्ति हमारी वशाली कुण्डग्राम को तीथ कर निग्र थ नातृपुत्र महावीर की ज मभूमि होने का गौरव प्राप्त है।

व्यक्ति गम्भीर, सोचता हुआ निग्र थ नातृपुत्र महावीर।

दू० व्यक्ति हा, वे जीवो का उद्धार कर रहे हैं। पशुओ, स्त्रियो, शूद्रो पर उनकी करुणा बरस रही है।

व्यक्ति यं आर्यावत कृताथ हुआ। कहाँ है तीथकर ?

दू० व्यक्ति आजकल सुना है लाढ देश गये हुए है।

व्यक्ति मैं उनके दशनाथ वहा जाऊगा।

रथ आ रहा है।

दू० व्यक्ति राजकुमारी च दना। अपने उद्यान म जारी हैं।

व्यक्ति तजामयी है।

दू० व्यक्ति अपूव सु दरी हैं। राजा चटक की तीनो पुत्रिया अतीव सु दर है। मगध-रानी चलना, कौशाम्बी नपति उदयन की रानी मृगावती और यह राजकुमारी च दना।

व्यक्ति राजकुमारी हो या साधारण नारी स्थिति सबकी एक-सी है। सब पुरुष की भोगलिप्सा का साधन। नि श्वास

विलयन।

सायकालीन पक्षियो का कलरव । वीणावादन ।

चन्दना — नि श्वास सखी मदयन्तिके तेरी वीणा के स्वर इस चन्दिरा की भाति ही मन को छू गए ।

मदयन्ती — चन्द्रमा की उन मनोहर किरणा का मूल्य ही क्या जो कुमुदनी को खिला न सके ।

चन्दना — तेरे सगीत का दोष नही मदयन्तिके । मेरा मन आज अकारण अवसन्न है । जान क्या एसा लगता है कि मेरा एक भव आज समाप्त हो रहा है ।

मदयन्ती — हँसकर चिन्ता का विषय नही देवि । जिस प्रकार भगवती चलना के महाराज बिंबसार, देवी मृगावती के कौरवन्द्र उदयन हैं उसी प्रकार देवी चन्दना

चन्दना — चन्दन से विषधर ही लिपटता है मदयती, अमावस्या की रात्रि की भाति अदृश्य मेरे मन को अपनी कालिमा से घेर रहा है । दाहिनी आख भू लुण्ठित घायल कपोत की तरह फडफडा रही थी । जाने क्यो रह रहकर मुझे आज कौशाम्बी का ध्यान आ रहा था ।

मदयन्ती — वहन का ध्यान आ रहा है देवि, इसमे उदास होने का कौन विषय है । वज्जिसघ के गणमुख्य की नयनतारिका के लिए कौशाम्बी,

चन्दना — जा मदयतिका, तेरी वातो से आज मेरा बाढ की नदी के समान अतिवेगवान् प्रवहमान मन बँध नही पा रहा है । एक अलक्ष्य दिशा की ओर वढता ही चला जा रहा है । अरे, य क्या हुआ । सखी, सखी, मूर्च्छित हो गयी सहसा ? कोई है ?

करुण सगीत पृष्ठभूमि मे । दूरागत स्वर ।

विद्याधर — सुन्दरी !

चन्दना — चौंककर कौन ?

विद्याधर — भावोद्रेक मे स्वगत सा इस उद्यान म सघन कुजा म छिपकर तुम्हार रूप लावण्य की मदिरा पान करनेवाला एक चिरतृषित विद्याधर ।

चन्दना दूर हो। अयत्र जाओ।

विद्याधर अयत्र कहाँ जाऊँ? त्रिभुवन का सारा सौंदय छीनकर विधाता ने तुम्हें प्रदान कर दिया है, अय सब स्त्रियाँ दरिद्री हो गई हैं।

चन्दना जा यहाँ स। परम प्रतापी लिच्छवि गणमुख्य क उद्यान म प्रवश करने का साहस

विद्याधर ह-ह तुम्हार रूप का आकषण जडता म भी प्राण और प्राणो म अदम्य साहस जगान की शक्ति रखता है। और मेरी मन्त्रशक्तियो से तुम अभी परिचित नही हो। आओ, मरी मरु-भूमि-सी फैली हुई बाँहा म गगा बनकर भर जाओ, मुझे शीतल करो!

चन्दना दूर हो। परे हट! सघष करती हुई सिंहनी शृगालो का भोग नही हुआ करती। छोड मुझे पामर छोड, मैं अभी हल्ला मचाकर अपने सनिको को बुलाती हूँ।

विद्याधर बाँधने का प्रयत्न करता हुआ इस विशाल उद्यान के तृण-लता गुल्म तक मेरी सम्मोहिनी विद्या स मूर्च्छित पडे हुए हैं। तुम्हे कोई शक्ति इस समय मुझसे नही छुड़ा सकती।

चन्दना का सघष। छोड, छोड दे मुझे। पिता, तात! तात!—रुदन। विराम।
गणमुख्य चेटक का दरबार।

चेटक सेट्ठि वृषभसेन! विश्वास रखो, कौशाम्बी के समान ही वशाली मे भी तुम्हे पूर्ण याय मिलेगा।

वृषभसेन अपने महाराजाधिराज के पूज्य श्वसुर, प्रतापी वज्जिसघ के महामाय गणमुख्य चेटक से यही आशा भी करता हूँ। राजन जिस दिन मैं अपना साथ लेकर यहाँ आया, उसी दिन मदुर स भी पाँच सौ व्यापारियो का एक साथ द्रव्य लेकर आया था। मैंने उनके साथवाह से सारे द्रव्य का मूल्य पूछा। उन्होन आठ लक्ष खरब मुद्राओ की माँग की। द्रव्य परख कर मैंने यह मूल्य स्वीकार किया और तीन लक्ष मुद्राएँ अवद्रग के रूप म तत्काल दे दी। जब आपके व्यापारी सघ के अवचारक वहाँ पहुँचे और

मर द्वारा इतने ऊँचे मूल्य पर द्रव्य क्रय करन की बात सुनी तो मुझे बुरा भला कहन लग।

सेठ महाराज हमारे नगर म विकने क लिए द्रव्य आया है, उसका सौदा करन का अधिकार हम है। कौशाम्बी निवासी सार्थवाह न हमारे निमित्त आया हुआ द्रव्य क्रय कर हमारा अधिकार हनन किया है। अपन स्वार्थ के लिए इन्होने मूल्य इतना बढ़ा दिया कि दक्षिण के साथ अधिक लाभ के लिए अब हमसे कभी सौदा नही करेंगे।

दास घबराया हुआ आकर अभय दें देव, अत्यन्त अशुभ समाचार है।

चेटक आना है।

दास समाचार गापनीय है दव।

चेटक तब तनिक ठहर।

दास अत्यन्त आवश्यक समाचार है देव।

चेटक न्यायासन पर बठकर हमारे लिए न्यायदान से अधिक आवश्यक और कुछ नही। प्रतीक्षा करो। सेट्ठि वृषभसेन, तुम्ह वह द्रव्य क्रय करन का पूरा अधिकार था। वशाली के व्यापारी सघ का तुम्हारे प्रति यह अनाचार अक्षम्य है। सघ का अविचारक अभद्रता के लिए दण्डनीय है। उसे साठ कार्षापण दण्डस्वरूप देने हागे।

वृषभसेन महाराज की जय हो! मुझे आपके विमल यश के अनुसार ही न्याय मिला। कौशाम्बी तक आपके न्याय का जयजयकार हागा। हमारे महाराजाधिराज उदयन सुनकर प्रसन्न हागे।

चेटक आमात्य, हमारे जामाता क नगर स आये हुए सेट्ठि का भली भाँति सत्कार हो! दास, क्या समाचार है?

दास देवी चन्दना का कही पता नही चलता महाराज, वे उद्यान स लोप हो गयी।

चेटक उद्यान से लोप? लोप! उद्यान से? चन्दना? फडककर प्रतापी लिच्छवियो के नगर म यह अनहोना, अकल्पनीय

अनाचार ! तुम सब लोग क्या मर गए थे ! जाओ, चारो ओर खोज करो। जाओ !

विद्याधर का घर।

विद्याधर क्रुद्ध स्वर मे चदना, मेरी सहनशक्ति अब अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच चुकी। यदि तू मेरी नही होगी तो यह देख झटके के साथ द्वार खुलने का शब्द, सापो की सीटियां इन सापो बिच्छुओ और गोजरो से भरे हुए मेरे अगम्य तलग्रह मे तुझे तडप तडपकर प्राण गँवाने होगे।

चदना उत्तेजित स्वर तेरे घृणित प्रस्ताव को स्वीकार करने की अपेक्षा मृत्यु को वरण करना मेरे लिए सुगम और श्रेयस्कर है। रावण की शक्ति जिस प्रकार देवी सीता का दमन नही कर सकी थी उसी प्रकार चदना को त्रिभुवन की कोई शक्ति झुका नही सकती।

दूर घोडो की टापो का सुनायी पडना, दास का घबराया हुआ आना।

दास देव चारो ओर घर घर की खोज हो रही है। देवी चदना को यहाँ रखना भयकर विपत्ति मोल लेने के समान है।

दूरागत घोडो की टापें निकट आती हुई।

विद्याधर इस स्त्री के सम्मुख मेरी सम्मोहिनी विद्या पराजित हुई। इसे लाकर केवल क्षोभ और कष्ट मिला मुझे। इसके हाथ-पर और मुह बाँधकर बोरे म भरकर ले जाओ। और दूर जगल म छोड दो।

जगल की भयानकता, वनचर पक्षियो के ककश स्वर हिंस्र पशुओ की भयकर गरज और भयपूण सगीत।

चदना हे प्रभु मेरे भाग्य मे क्या यही लिखा था ? उस अचानक के एक क्षण म कितना बडा परिवतन हो गया। ऐसा मैंने कौन-सा पाप किया था ? पत्तो की खडखडाहट नारी का सौंदय

विपधर वनचर स्वय उसे ही डस लेता है। रोकर प्रभु, तुमने मुझे नारी क्या बनाया ? इतना सौंदय क्या दिया। मैं स्वय अपन लिए शाप बन गयी।

दूर पर आदिम जाति के एक दल का सामूहिक नत्य गीत चल रहा ह जिसकी आवाज च दना तक पहुंच रही ह। निकट ही सिहनाद।

च दना आ सिंह, तू मरे लिए इस समय वधु क समान है। मारकर मरा उद्धार कर।

सिहनाद दूर निकल जाता है। दूर पर आदिम जाति के दल का शोर भी सुनाई पड रहा है।

च दना नि श्वास दुभाग्य के समय मृत्यु भी साथ नही देती। हे दव-देव !

करुण सगीत। विलयन।

जगल में रत्मा सरदार की झोपडी।

रत्मा कठोर कक्श स्वर बोल च दना, मानगी कि नही।

एक ज० धूनी और तेज करूं सरदार ?

रत्मा कर दे।

जगली गोरी के मुख और नाक से रक्त निकल रहा है सरदार।

रत्मा निकलने दे। बडी आयी गोरी। ऐसी कौन सी नारी है जो रत्मा सरदार के वस म नही आयी। नही मानगी तो देवी को इसकी वलि चढाऊँगा।

प० प्रेमी सरदार !

रत्मा आ गये ?

प० प्रेमी ये सुदरी कौन है सरदार ? इसे पेड से उल्टा लटकाकर धूनी

क्या दे रहे हो। हाय, हाय, इतनी सुदर ! तुम्ह दया नही आती ?

रखमा दया ! ह ह , रखमा सरदार दया माया कुछ नही जानता। समझा ? जगल मे भटकती हुई आयी। मैंने इसे सरन दी, अब मेरी हुई कि नइ ? फिर भी मेरी इस्तरी नही बनगी। देख लूगा। ढोडे, इसे पेड से उतारकर धरती पर पटक दे। अमावस को इसकी बलि चढाऊँगा।

प० प्रेमी एक बात कहूँ सरदार, इस बेच दो। मैं तुम्ह सोने की एक मुद्रा दिलाऊँगा।

रखमा खरीदेगा कौन ?

प० प्रेमी बँपारी है। दासिया बेचता है। आठ दिन से सावत्थी म है, कल कौसाम्बी जायगा।

रखमा और तू लाया साना ? कह गया था।

प० प्रेमी ये लो सरदार।

रखमा ठीक है। रात मे अपनी चहेती के साथ आ जा। रहन का झोपडी मिल जायगी।

प० प्रेमी गिडगिडाकर किसी को खबर न होने पाये सरदार। सावत्थी के सेटिठ की पुतरी है। मैं उनके यहा दास हूँ। भाग थे मेरे जो मुझसे इतना परेम करन लगी।

रखमा उसका बाप तेरे साथ ब्याह नही करना चाहता, क्या र ?

प० प्रेमी क्या कहत हो सरदार सेटिठ लक्खाधिपति है, मैं तुच्छ दास। पर परेम की बात न्यारी है। एक बडे कुलीन धनी पुरुष के साथ उसका ब्याह पक्का हुआ है, इसीलिए हम दोना भागकर इस जगल म रहना चाहत हैं।

रखमा जो मेरे से बिगाड नइ करेगा तो जलम भर सुख स रहा आयगा। और बिगाड किया तो तेरी झोपडी म आग लगाकर तुम दोनो की बलि चढा दूगा।

प० प्रेमी गिडगिडाकर नही सरदार, जिसने ऐसे सम म सरन दी उसक साथ कभी घात नही कर सकता। अच्छा तो अब मैं

चमता हूँ। नगर पहुँचते एक पहर रात चढ जायगी। तुरन्त ही पटाचारा को लेकर लौटना है।

कट। सेट्ठि पुत्री पटाचारा का घर। विजया चन्द्राभा और पटाचारा। तीनो हँसती हुई।

विजया — अरे, इस पटाचारा को ब्राह्मणा पर बडे चुटकुले याद हैं सखी चन्द्राभा। कहो तो घटो सुनाती रहे। हँसती है

चन्द्राभा — एक और सुना दे पटाचारा। तेरी चिरौरी करती हूँ।

पटाचारा — एक ब्राह्मण बालक था। वह एक वृक्ष को अपना देवता मान उस पर पूर्ण आस्था रखकर सब से आँखें निकाल कहा करता कि इसेही पूजो नही तो वृक्ष देवता बाद मे शाप देंगे। पहले मैं ही अपने क्रोधसे भस्मकर दूगा। विजया चन्द्राभा की हँसी।

पटाचारा — फिर क्या हुआ कि एक दिन उसे मार्ग मे एक और साधु मिले। उन्होने पूछा कि भाई तुम्हारा देवता कौन सा है, दर्शन कराओ। ब्राह्मण उस गर्व से अपने देवता एक विशाल वृक्ष के पास ले गया।

चन्द्राभा — फिर ?

पटाचारा — साधु उस वृक्ष को देखकर हँसा और उस वृक्ष के कुछ पत्ते नोचकर बोला, देखा तुम्हारा शक्तिशाली देवता मेरा कुछ भी नही बिगाड सका। ब्राह्मण क्रुद्ध होकर बोला कि अच्छा तूने मेरे देवता की अवज्ञा की है, मैं तेरे देवता की करूँगा। साधु ने कहा आपके देवता तो बड़े महान हैं तब भी मेरा कुछ न बिगाड सके, और मेरे देवता छोटे से हैं, पर तु यदि तुम उनकी अवज्ञा करोगे तो वे तुमको तुरन्त दण्ड देंगे।

विजया — फिर ?

पटाचारा — साधु जी ब्राह्मण को बिच्छू घास के पास ले गये तो बडे आडम्बर से उसे प्रणाम कर कहा कि यही मेरे देवता हैं। ब्राह्मण ने नन्ही सी घास को दर्प से उखाड लिया, परन्तु दूसरे ही क्षण वह रोने चिल्लाने लगा। तीनो हँसती हैं

विजया अरे चुप, माता आ रही है।

माता पुत्रियो, धर्म-गुरुओं का इस प्रकार निरादर नहीं करते।

पटाचारा रहने भी दो अब, मुझे तुम्हारी इन रूढ़ियों में विश्वास नहीं।

विजया हम भी विश्वास नहीं।

चन्द्राभा इनके अत्याचारों से ऊब गए हैं लोग। हाय, यज्ञों में जब पशुओं को बलि होने से पहले करुण गुहारें करते सुनती हूँ तो मच मानना पटाचारा, मेरे रोम रोम को मानो काठ मार जाता है।

माता भले घर की कन्याओं के मुख पर यह शब्द सोहते नहीं पुत्रियो, तुम सब श्रावस्ती के उत्तम कुल

पटाचारा उत्तम मध्यम कुछ नहीं अब मन का झूठा गर्व है। जहाँ प्रेम है वहां सब बराबर हैं।

चन्द्राभा ठीक कहा सखी।

माता पटाचारा, तू इन दोनों की मति भी भ्रष्ट कर रही है। कलिकाल आ गया है। लड़के-लड़कियों के मन बिगड़ गये हैं। जिधर देखो यही हाल है। नि श्वास

पटाचारा क्यों न हो अब। नगर के पुरुष सभा बनवा रहे हैं। उनके गुरुओं ने यह आदेश दिया है कि इस पुण्य कार्य में स्त्रियों का धन न लगाया जाय। ये कोई न्याय है? क्या हम इतनी नीच हैं कि अपने धर्म कर्म में हम पुण्य लाभ नहीं मिल सकता।

माता धीमे रहस्य भरे स्वर में उत्तेजित मत हो री। मैं भी अपनी आन की पक्की हूँ। स्त्री होकर भी मैं यह पुण्य कमाऊँगी।

पटाचारा क्या सब ने स्वीकार कर लिया?

माता नहीं री, मैंने बढ़ई को धन देकर अपनी ओर मिला लिया है। कलश के बिना तो सभा पूरी नहीं होगी और कलश के लिए सूखी लकड़ी इसी समय मिलेगी फिर वर्षाकाल आ जायगा। मैंने अभी से ही कलश बनवाकर रखलिया है, उस समय आप इन लोगों को विवश होकर मुझे पुण्य का भागी बनाना ही पड़ेगा। कहकर प्रसन्न होती है

पटाचारा परन्तु तुमने छल किया अब।

विजया हाँ, यह बात तो है।

माता क्या करूँ, भगवान न हम स्त्री बनाया है। दण्ड तो भोगना ही पडेगा, पर पुण्य लाभ करने की इच्छा तो सब का ही होती है न, चाहे स्त्री हो या पुरुष

पटाचारा अथवा शूद्र भी हो।

माता कोई हो, जीव तो सब का एक जैसा ही है।

पटाचारा यही बात है। मैं इस ही सत्य मानती हूँ। पर जब इन्होन स्त्री और शूद्र का स्थान एक सा कर रक्खा है तो हमारा विवाह भी शूद्र स होना चाहिए कुलीना

माता पटाचारा तू बडी मुहफट हो गयी है। कुछ तो कुलीना के घर के सस्कारो की लाज रख। तरे पिता सुन लेते ता उन्ह कितना दु ख होता। तनिक तो ज्ञान होना चाहिए मनुष्य को। छि !

विजया पटाचारा, तेरी अम्मा ठहसे

पटाचारा चिढकर होने दो। ज्ञान। छि ! महात्मा मखलि गोशाल ठीक कहत हैं कि ज्ञान से मोक्ष नही होता। देव अथवा ईश्वर कोई है ही नही। ज्ञानी अज्ञानी नियत काल तक परिभ्रमण करत हुए समान रीति से दु ख का अ त करते है।

चन्द्राभा मखलि गोशाल कुछ भी कह। यह ठीक नही है।

विजया मैंने ता सुना है कि मखलि गोशाल को नये तीथकर महावीर ने अपना गणधर नही बनाया, इसीलिए व क्रुद्ध होकर यहा श्रावस्ती मे चले आये है, इसीलिए शून्यवाद का प्रचार करत हैं।

चन्द्राभा ऊँह, इस समय तो जो जिसके मन मे आता है उपदेश करता है। पूर्णकास्सप अक्रियावादी हैं। मखलि गोशाल शून्यवादी है। पकुड कात्यायन जीव हिंसा मे ,पाप पुण्य कुछ भी नही मानत। अजित केशकम्बलि की भी यही दशा है। सजय वेरित्थपुत्त

विजया पर अब सुना है कि तीथकर महावीर और तथागत बुद्ध का

विजया अरे चुप, माता आ रही है।

माता पुत्रियो, धर्म-गुरुओं का इस प्रकार निरादर नहीं करते।

पटाचारा रहने भी दो अब मुझे तुम्हारी इन रूढ़ियों में विश्वास नहीं।

विजया हम भी विश्वास नहीं।

चन्द्राभा इनके अत्याचारों से डर गए हैं लोग। हाय, यज्ञों में जब पशुओं का बलि होने से पहले करुण पुकारें करते सुनती हूँ तो सच मानना पटाचारा, मेरे रोम रोम को मानो काठ मार जाता है।

माता भले घर की कन्याओं के मुख पर यह शब्द सोहते नहीं पुत्रियो, तुम सब श्रावस्ती के उत्तम कुल

पटाचारा उत्तम मध्यम कुछ नहीं अब मन का रूठा गया है। जहाँ प्रेम है वहाँ सब बराबर हैं।

चन्द्राभा ठीक कहा सखी।

माता पटाचारा, तू इन दोनों की मति भी भ्रष्ट कर रही है। कलिकाल आ गया है। लड़के लड़कियों के मन बिगड़ गये हैं। जिधर देखो यही हाल है। नि श्वास

पटाचारा क्यों न हो अब। नगर के पुरुष सभा बनवा रहे हैं। उनके गुरुओं ने यह आदेश दिया है कि इस पुण्य कार्य में स्त्रियों का धन न लगाया जाय। ये कोई न्याय है? क्या हम इतनी नीच हैं कि अपने धर्म कर्म में हमें पुण्य लाभ नहीं मिल सकता।

माता धीमे रहस्य भरे स्वर में उत्तेजित मत हो री। मैं भी अपनी आन की पक्की हूँ। स्त्री होकर भी मैं यह पुण्य कमाऊँगी।

पटाचारा क्या सब ने स्वीकार कर लिया?

माता नहीं री, मैंने बढ़ई को धन देकर अपनी ओर मिला लिया है। कलश के बिना तो सभा पूरी नहीं होगी और कलश के लिए सूखी लकड़ी इसी समय मिलेगी, फिर वर्षाकाल आ जायगा। मैंने अभी से ही कलश बनवाकर रख लिया है, उस समय आप इन लोगों को विवश होकर मुझे पुण्य का भागी बनाना ही पड़ेगा। कहकर प्रसन्न होती है

पटाचारा परन्तु तुमने छल किया अब।

विजया हाँ, यह बात तो है।

माता क्या करूँ, भगवान न हम स्त्री बनाया है। दण्ड तो भोगना ही पडेगा, पर पुण्य-लाभ करने की इच्छा तो सब का ही होती है न, चाहे स्त्री हो या पुरुष

पटाचारा अथवा शूद्र भी हो।

माता कोई हो, जीव तो सब का एक जमा ही है।

पटाचारा यही बात है। मैं इस ही सत्य मानती हूँ। पर जब इन्होंने स्त्री और शूद्र का स्थान एक सा कर रक्खा है ता हमारा विवाह भी शूद्रा स होना चाहिए, कुलीना

माता पटाचारा तू बडी मुहफट हो गयी है। कुछ तो कुलीना के घर के संस्कारो की लाज रख। तरे पिता सुन लेते ता उन्हे कितना दुःख होता। तनिक तो ज्ञान होना चाहिए मनुष्य को। छि !

विजया पटाचारा, तरी अम्मा तुझसे

पटाचारा चिढ़कर होने दो। ज्ञान। छि ! महात्मा मखलि गोशाल ठीक कहते है कि ज्ञान से मोक्ष नही होता। देव अथवा ईश्वर कोई है ही नही। ज्ञानी अज्ञानी नियत काल तक परिभ्रमण करते हुए समान रीति से दुःख का अन्त करते है।

चन्द्राभा मखलि गोशाल कुछ भी कहे। यह ठीक नही है।

विजया मैंने ता सुना है कि मखलि गोशाल को नये तीर्थंकर महावीर ने अपना गणधर नही बनाया, इसीलिए वे क्रुद्ध होकर यहा श्रावस्ती म चले आये हैं, इसीलिए शून्यवाद का प्रचार करते है।

चन्द्राभा ऊँह, इस समय तो जो जिसके मन म आता है उपदेश करता है। पूर्णकास्सप अक्रियावादी हैं। मखलि गोशाल शून्यवादी हैं। पकुड कात्यायन जीव-हिंसा मे पाप पुण्य कुछ भी नही मानते। अजित केशकम्बलि की भी यही दशा है। संजय बेलट्ठिपुत्त

विजया पर अब सुना है कि तीर्थंकर महावीर और तथागत बुद्ध का

प्रभाव वढ रहा है।

पटाचारा धम कम ढोंग है विजया। जीवन को सुख से भरना चाहिए। सुख के लिए जो जी म आये वही करना चाहिए। अच्छा, अब आज्ञा दो सखियो, आज रात

चन्द्राभा आज रात क्या ?

पटाचारा **सावधान होकर** कुछ नही, कुछ भी नही।

अल्प विराम। जगली जीव जन्तुओ का स्वर दूर पर।

रत्मा आ गये तुम।

प० प्रेमी हा सरदार। यह हैं देवी पटाचारा। मेरी अब तो पत्नी ही कहूँ।

रत्मा हूँ। तुम्हारे लिए नयी कुटी बन गयी है। कल सबको भोज देकर वही रहना। आज इसे मेरे यहा छोड दो—उसी गोरी चन्दना के पास। बपारी आया ?

प० प्रेमी बताता हूँ सरदार। पटाचारा, तू अन्दर जा।

अल्प विराम।

चन्दना तुम कौन हो भगिनी ? क्या मेरे ही समान दुख की मारी

पटाचारा मैं शूद्र पति से विवाह कर यहा रहने आयी हूँ, मुझे कोई दुख नही। और तुम ?

चन्दना मै पशु पुरुषो की भोग्या न बनने क कारण दुख भोग रही हूँ।

पटाचारा सभी पुरुष पशु है। इनसे बचना व्यथ है। इसलिए एक का आश्रय ले ले तो सारे दुख मिट जायें।

चन्दना आश्रय सत्य और शील का लेना ही उचित है। मनुष्य (को समाज म ऊँचा आदश पाना चाहिये।

पटाचारा **चिढकर** ऊँचा आदश, इस समाज म जहाँ पुरुष हर प्रकार स्त्री को नीचा बनाकर रखता है ?

चन्दना सत्याचरण से स्त्री भी समाज म आदर का स्थान प्राप्त कर सकती है।

रक्षमा चल री गोरी, उठ। तुझे वैपारी क हाथ वच आऊँ।

पटाचारा भगिनी, मान जाओ ! तुम इनकी पत्नी वन जाओ, हम तुम इस अनजाने वातावरण म सखी बनकर सुख स रहग।

चन्दना मैं सत्य का वरण कर चुकी हूँ। देखू, वह कब तक मरी परीक्षा लेता है।

करुण सगीत। विलयन।

कौशाम्बी के वाजार की चहल पहल।

व्यापारी चिल्लाकर यह राजकन्या, देवकन्या सी सुन्दर दासी। कौशाम्बी के किस रसिक शिरोमणि के भाग्य म है ? वोलिए, वोलिए। कामदेव के बाणो के समान इस सुन्दरी के कटाक्षो से कौन युवक घायल होगा। बोलिए बोलिए। एक राज्य एक साम्राज्य, कुबेर का अक्षय भडार भी इस त्रिभुवनमोहिनी कामल बाहुपाश की जयमाल वरण करने के लिए कम होगा।

शोर मे एक स्वर अनुपम सुदरी है। मणिभद्र, दखत क्या हो—वोलो वाली।

दूसरा स्वर सौ स्वण-मुद्राएँ।

व्यापारी सौ—सौ स्वण मुद्राएँ ! केवल सौ ! मैने तो सुना था कि प्रसिद्ध वीणावादक रसिक शिरामणि गजे द्रगामी महाराज उदयन की राजधानी के धनी स्त्रीरत्न को परखना जानत है। अरे, सौ स्वण मुद्राएँ तो इस सुन्दरी की एक झलक मात्र पर निछावर है।

शोर तीन सौ, पाँच सौ। एक सहस्र स्वण मुद्राएँ। वडी सुन्दरी है। उस वेश्या भूमतो से कहो इसे त्रय कर ले। यह तो हमारी नगरवधू वनन के योग्य है। आदि

कट। बाजार की चहल पहल।

आ० ग धोत्कट अपशकुन, अपशकुन ?

वपभसेन — अपशकुन क्यो आचाय ?

आचाय — वह देख, दो चाडाल चले आ रहे है।

एक स्त्री — तुनक कर कसा अनाचार बढ गया है। अब तो दिन दहाडे आपणमाग पर चाडाल भी चलने लगे हैं।

दूसरी स्त्री — घोर अपशकुन हुआ भगिनी। पवित्र अग्नि के दशन करने जाते समय चाडालो के अशुभ दशन से अपशकुन हुआ।

आचाय — जल से नेत्र धो डालो पुत्रियो। नागरिक हो कसा है तुम्हारा सस्कार। दिन दहाडे कुलीनो के माग पर चाडाल घूमते है। इन दोनो को पकडकर तप्त लौह से इनका शरीर दागा जाय। इनके अशुभ मुखो पर हमारे आज के अपशकुन का प्रायश्चित्त सदा झलके। दूसरे पामरो को इन्हे देख देखकर शिक्षा मिले।

वृषभसेन — आचाय, मैं सविनय आपके इस आदेश का विरोध करता हूँ।

आचाय — श्रेष्ठि, वषभसेन तुम्हारे वचन कलिकाल की सीमा है। मैं तुम्हे दण्डस्वरूप आज के सवतोभद्र यज्ञ मे जाने से बरजता हूँ। देवी यदि तुम अपने पति से सम्मत हो

एक स्त्री — मैं धम्म की अवहलना नही कर सकती आचाय।

आचाय — श्रेष्ठि, रथ त्यागो, हमे यज्ञशाला मे पहुचना है।

रथ चल पडता है।

एक मनुष्य — देखा तो आचाय का दभ, इतने बडे सेठ का भरे हाट मे अपमान कर दिया।

वृषभसेन — मुझे वह दिन नही भूलता व धुओ जब मेरे साथ जाने से पूव मेरी यज्ञशाला मे ब्राह्मण कुमार जीवक ने आचाय का विरोध करते हुए कहा था कि मनुष्यमात्र एक है, समान है। अनेक यात्राओ मे भी मैंने यही अनुभव पाया। ... शूद्र सब धरती के ... । सब को सम ... । क समान अपने ... हैं। वक्ष ... है फिर मनुष्य ह ... क्या न द ...

एक व्यक्ति — कभी न कभी ... । ही। ... होने पर ... २

आप पराजित हो रहा है। कामुकता चारो ओर बढ गयी है। ऊच-नीच की भावना ने जीवन माग म इतन काटे बिछा दिय हैं कि चलते नही बनता। इतन आजीवक, परिव्राजक और अचेलक हो घूम रहे हैं, इतनी तरह के मत चल पडे है कि चारो ओर अराजकता फल गयी है।

वषभसेन परन्तु समय आ गया है ब धु, तीथकर महावीर और तथागत चन्द्र सूय के समान विचारो के आकाश म उदित हो चुके है। शीघ्र उनका आलोक हम तक भी पहुँचेगा। मैं अपनी यात्रा म सुन आया हूँ कि तीथकर शीघ्र ही हमारी इस नगरी पर भी कृपा करनेवाले हैं।

एक मनुष्य उत्साह से कब तक पधारेंगे य महात्मा ?

वषभसेन मैं सुन आया हूँ कि व कौशाम्बी के कही निकट ही है, कुछ मास म यहा पधारेंगे।

एक मनुष्य तो उनके लिए हम शीघ्र ही पथो को ठीक कराना चाहिए। जहा वृक्ष न हो वहा वक्ष कूप और अनेक सभाभवन उनके स्वागत म शीघ्र से शीघ्र बनवाने चाहिए।

वृषभसेन हमारे लिए यही उचित है ब धु।

एक मनुष्य आओ सेट्ठि, मैं अपने रथ पर तुम्हे पहुँचा दू।

रथ चलता है। कुछ दूर पर कोलाहल। रथ के निकट आते हुए स्वर भी निकट आता जायेगा।

व्यापारी बोलिए, बोलिए, कौशाम्बी के रसिकगण अब भी इस देव-कन्या तुल्य दासी का मूल्य नही आक पाये। केवल तीन सहस्र ! कौन अधिक भाग्यशाली है जो ऊँचे दाम लगाकर इस दासी का स्वामी बनेगा ? बोलिए, बोलिए।

वषभसेन रथ रोको सारथी आह, यह भाग्य की मारी कौन देवकन्या है जो आज प्रासादो स निकलकर हाट म बिकने के लिए आयी है ? इसके मुख पर कसा शील, कितना करुण दुख अकित है बन्धु ! मैं इस पापाचारियो के हाथ म पडने से बचाऊँगा।

पुत्री की भांति यह मेरा ममत्व आकर्षित कर रही है।

एक मनुष्य किस किस अभागी का उद्धार करोगे सट्ठि ? दासियो के हाट म न जान देश विदेश के कितने श्रेष्ठ कुला की दुर्भाग्य-वतिया बिकने के लिए आती है।

वषभसेन यह मेरी पूव ज म की पुत्री है, निस्सदेह मेरा मन एसा कहता है। मैं इसे पापपक म पडने से बचाऊँगा। जोर से व्यापारी इस बाला का क्रय बद करो। इसका जो भी मूल्य लगे उससे दो सहस्र स्वण-मुद्राएँ अधिक देकर मैं इस ग्रहण करूँगा।

एक युवक सु दरता को देखकर स त बननेवाले महासेठ्ठि मे भी रस उत्प न हो गया ? ह ह ह !

विराम। सेट्ठि वृषभसेन का घर।

सेठानी तुम इसकी सु दरता पर रीझ कर इसे लाय हो। तुम मेरी छाती पर एक सपत्नी को बिठाना चाहते हो ?

वषभसेन सेठानी, मैंने अपने आचरण स कभी तुम्हे अविश्वास करने का अवसर नही दिया। यह मेरी पुत्री के समान है।

सेठानी पुत्री के समान है। इस यात्रा मे तुम किस नये मत के चेले हो आये जी, जो इतना ढोग करना सीख गये ?

वषभसेन तुम मुझे उत्तेजित कर रही हो सेठानी, मेरे शब्दो मे सत्य है।

सेठानी धमद्रोही के शब्दो म सत्य ? आचाय ठीक कहते हैं। तुम अब अधम माग पर चल रहे हो। तुम कलिकाल के प्रभाव म आ गये हो। मैं कहे देती हूँ जी, यह युवती यदि मेरी सपत्नी बनी-तो मैं इसकी और अपनी जान एक कर दूगी।

वषभसेन सेठानी तुम्ह स्वजाति पर दया नहीं आती ? कितना जड और कठोर हो गया है तुम्हारा हृदय ! इसे सुखपूवक घर मे रखा जाय यह मेरा आदेश है। मैं राजप्रासाद म जा रहा हूँ। इसे किसी बात का कष्ट न हो।

सेठानी चिढ़कर कष्ट, अरे, मैं इसका मुह कुचल दूगी तडातड मारती है अभागी, तू मेरे ही घर म क्यो घुसी ? मेरा ही विनाश करने क्यो आयी, बोल, बोल !

मारती है। चन्दना का सिसकना। करुण संगीत। विलयन।

श्रावस्ती मे भगवान बुद्ध का आराम। पक्षियो का कलरव, कहीं कोई पाठ कर रहा है—'कम्मना वत्तते लोको कम्मना वत्तते पजा। कम्मनि बधना सत्ता '

दूसरा कोई—'ओ भन्ते, ध्यान एकाग्र कर। पाठ करते हुए हरिणो के जोडे को ओर क्यो देख रहा है ?'
तीसरा—'व्यवस्थित रहो भिक्खुओ ! भगवान तथागत समीप ही बठे हैं।'

जीवक *भगवन्, मैं अधम के अनाचारो से घाव खाकर आपकी शरण म आया हूँ।*

बुद्ध यह धम सुआख्यात है। अच्छी तरह दु ख का क्षय करने के लिए ब्रह्मचय का पालन करो। वस्तुगत सत्य ही तथागत के लिए सब कुछ है। चाहे तथागत उत्प न न हो किन्तु यह जो पदार्थों का नियम के अ दर अवस्थित रहना है वह तो ठहरेगा ही।

जीवक तथागत, प्रव्रज्या लेने का उद्देश्य क्या है ?

बुद्ध जो वेदनाएँ उत्पन्न हो चुकी हैं,उनको दबाकर शा त कर देना, यही प्रव्रज्या का उद्देश्य है। अहिंसा धम का पालन करो। पचशील मे पूण *आस्था रखकर चलो, जो मानो उसी का* आचरण करो। तुम भी तथागत हो सकत हो आवुस निर्वाण-पद जीव मात्र क लिए सुलभ है।

एक स्त्री का विलाप दूर पर सुनाई देना, आश्रमवासियो का स्वर दूर पर ही।

आ०वासी यह पागल है, इस इधर मत आन दो, यह पागल है, इस इधर मत आन दो।

बुद्ध इस मत रोको, मर पास आन दो।

पटाचारा रोते चिल्लात-हसते बड़बडाते हुए आना तुम मर पति हो, मर बच्चे कहा? आओ आओ। मैं तुम्ही सब को ढूढन क लिए तो निकली थी। तुम सब मर पति हो। तुम सब मेर पुत्र हो। ह -ह ह ! सहसा स्तब्ध होकर तुम तुम !

बुद्ध सतिम पटिलभ भगिनी,अपनी चेतना को प्राप्त करो। आवुस, इसकी लज्जा के लिए आवरण दो।

पटाचारा पटाचारा का फूट फूटकर रोना देव, मेरी रक्षा करो। मैं इसी श्रावस्ती म कभी रहती थी। सटिठ घुमत्सन की एक मात्र कन्या अभागी पटाचारा अपने घर के एक दास के प्रेम म पडकर समाज छोडकर पति के साथ जगलो म रहने के लिए चली गयी। मेरे दो पुत्र हुए। पति को सॉप न काट लिया। मेरे एक पुत्र को बाज खा गया दूसरा जल म डूब गया। नगर म आयी तो माता पिता दोनो एक साथ चिता पर जलाय जा रहे थे, मैं कहीं की न रही। मेरा मन खो गया। मुझे कुछ भी नही सूझता।

बुद्ध पटाचार, तू चिन्ता मत कर। तू ऐसे ही व्यक्ति के समीप आ गयी है जो तेरी रक्षा करने म समर्थ है।

पटाचारा का रुदन।

बुद्ध पटाचारा, जिस प्रकार तू आज पुत्रादिको के मरण के लिए आँसू बहा रही है उसी प्रकार इस अनादि ससार म पुत्रादिको के मरण के लिए बहाये हुए तेरे आँसू चार महासमुद्रो के वल से भी बहुत अधिक हैं। भगिनी, तेरे पुत्रादि तेरे शरण नही हो सकत। तू अपन शील का शोधन कर जिससे तू निर्वाण गामी मार्ग को प्राप्त करे।

पटाचारा धीरे धीरे बुद्ध शरण गच्छामि। देव, मैं सनाथ हू। परन्तु मेरी जसी अनक अभागी आज के समाज मे दारुण दु ख भोग

रही हैं। मैंने स्वय मन की तृष्णाओ म फँसकर दु ख पाया, अनेक दूसरा की तृष्णा म फँमकर दु ख पाती हैं। जगल म मुझे एक च दना भी मिली थी।

बुद्ध — पटाचारा, चि ता मत करो। निगण्ठ नातपुत्त तीथकर च दना का उद्धार करेंगे।

कट।

सेठानी — यह कुलटा जब से मेरे घर म आयी है, मेरे और सेटिठ के बीच मे आय दिन की कलह समा गयी है। जाने इस पाप से कब मेरा उद्धार होगा। दात पोसकर पर तु मैं भी इस खूब सताऊँगी। हडीबा इसके हाथ बाँधकर और सिर मूडकर एक मन धान सूप म फटकन के लिए रख दे। सूर्यास्त के पहले सारा धान फटक जाय, सुना री। और हेडीबा, जब ये काम पूरा कर ले तब इसके सूप मे कोदो के थोडे से दाने डाल देना।

हेंडीबा — सेठानी, सेटिठ सुन लेंगे तो

सेठानी — सुन कसे पायेंगे ? पुरुष भले ही ससार का स्वामी हो पर घर की रानी गहणी ही है। पुरुष की आँख ओट स्त्री लाख मन-मानी करती है।

कट। नगरी की सीमा पर भगवान महावीर का स्वागत।

वृषभसेन — तपोनिधि, महावीर आपके पधारने स हमारी नगरी पवित्र हुई। हमारी प्रस नता की सीमा नही।

कई स्वर — तीथकर की जय हो। तीथकर हमारा कल्याण करें।

वृषभसेन — ज्ञान धन, देह के साथ देही का अन्त होत भासता है। किसी न आज तक आँखो मे उस देही 'आत्मा' को नहीं देखा फिर कस मानें—आत्मा है, जीव है ?

महावीर — आत्मा स्थूल नत्रा स दिखाई नही देती, क्योकि वह रूप-रस-गध-वण रहित है। पर तु मानवीय अनुभव उसका अस्तित्व प्रमाणित करता है। निस्सदेह देह से वह विज्ञानमयी चेतना-

भिन्न है। कदाचित् उसे जल पृथ्वी, अग्नि, आकाश और वायु से मिलकर बनता कल्पित करो तो यह सोचो कि इन पदार्थों में कौन सा ऐसा है जिसमें जानने-देखने का गुण है। और जब चेतना इनमें नहीं तो इनके मिश्रण में कहाँ से आएगी? विश्व में जो कोई वस्तु है, उसका कभी नाश नहीं होता। और जो वस्तु नहीं है। उसका कभी अस्तित्व नहीं हो सकता।

वृषभसेन परन्तु देह के साथ मृत्यु समय आत्मा का नाश नहीं हो जाता भगवन?

महावीर देह पुद्गल है और आत्मा चिरंतन है। शव का अग्नि संस्कार होने पर भी पुद्गल पुद्गल ही रहता है और चेतन लोक में दूसरा शरीर धारण कर लेता है। यदि यह न मानें तो भला सोचो हमारा व्यावहारिक अनुभव क्या हो? पंचभूतों के अंशों का ही परिणाम यदि चैतन्यभाव हो, तो वह अखण्ड कहाँ से होगा? वह तो उतने ही अंशों में बँटा होगा। तब हम बाहरी जगत का अनुभव एकरूप नहीं, एक साथ अनेक रूप होगा। परन्तु मनुष्य का अनुभव ऐसा नहीं है वह एक है और अखण्ड है। अतएव वह एक अखण्ड पदार्थ का ही अनुभव है। वह अखण्ड पदार्थ ही आत्मा है। आत्मा जानता देखता है शरीर जानता देखता नहीं है। आज का काल और क्षेत्र वासनामय है, अहिंसा और शील धर्म का नाश हो चुका है। पशु यज्ञ की पराकाष्ठा वासना तृप्ति का साधन बना हुआ है। निर्दोष, दीन, असहाय, पशुओं के रक्त से यज्ञ की वेदी लाल हो रही है। पशु की बलि देकर यह लोग समझते हैं कि देवता प्रसन्न हो गये हैं और वे यजमान की मानो कामना पूरी करेंगे, किन्तु ऐसा होता कहीं नहीं दीखता। हाँ पुरोहित समुदाय को दक्षिणा इसमें खूब मिलती है। इस भयानक हिंसावृत्ति ने इस समय सज्जनों का दिल दहला दिया है।

वृषभसेन   गहरे उच्छवास से   भगवान्, आपके अमृत वचनो से हमारा उद्धार हुआ।

एक सेठ   प्रभु हमारी सेवा स्वीकार करें।

महावीर   नही आवुस इस वार मैंन कठिन आखडी ली है।

वृषभसेन   क्या भगवन् ?

महावीर   जव कोई राजकुमारी दासी के रूप म मुड शिर और व धन-युक्त हाकर सूप म आहार देती मिलेगी उसी दिन मैं पारणा करूँगा।

वृषभसेन   कठिन है आपका व्रत हम क्स अपने मन को समझायें ? आपक प्रण ने हमे विवश कर दिया।

शोर। भगवान महावीर की जय। शोर आगे बढता जाता है। विराम।

वृषभसेन का घर। सूप फटकने का स्वर।

हेडीबा   हाय, अभागी, ब धन म बँधकर भी इतना धान फटक लिया ? तू सचमुच चुडैन है। ले ये कोदो।

दूर पर भगवान महावीर की जय, जगदुद्धारक की जय, का स्वर क्रमश बढता चला आ रहा है।

च दना   जगदुद्धारक, जगतोद्धारक ! ! शोर निकट आ गया मैं जाती हूँ।

हेडीबा   अरी अभागी, ये सूप लिये कहाँ भाग चली ?

शोर निकट। तेज पृष्ठ-सगीत।

च दना   भाव भरे स्वर मे जगतोद्धारक, मेरे उद्धारक !

महावीर   च दना, तेरे कारण ही मेरा व्रत सच्चा है। तेरे सूप मे पडे हुए यह कोदो के दाने मेरे लिए खीर तुल्य हैं।

कई स्वर   ध य हैं पतितपावन, ध य हैं तीथकर महावीर, जिन्होने पद-दलित कुमारी का उद्धार किया।

—

महावीर ध य है वपभसेन जो ब्राह्मणो के मिथ्या प्रभुत्व मे दबे हुए समाज म रहते हुए भी लोक मूढता म नही रहे। मानव को क्रीतदास बनाकर रखना मानवता नही है।

चन्दना श्रमणोत्तम में जानती हूँ, स्त्री पर्याय नि द्य है। स्त्रियो की माया और छल प्रसिद्ध है पर तु नाथ, आपका शुभागमन तो सज्जन और दुजन सब के लिए समान रीति से उपकारकर्ता है। मैं ससार स भयभीत हूँ जि दीक्षा दीजिए।

महावीर पर्याय कोइ भी अच्छा नही है। वह ब धन है। सोने का ब धन लोहे के ब धन से अच्छा नही हो सकता। दोनो ही व्यक्ति की स्वाधीनता के घातक है। अच्छे सस्कार उपादेय हैं, बुरे त्याज्य।

चन्दना णमो अरह्णण णमो सिद्धाण।

सगीत। विलयन । काशी। गगा का कलकल स्वर।

आ० गन्धोत्कट काशी ! पतितपावनी ! युग युग से अविरल धारा बहती ही चली आ रही है। पर तु फिर भी देव ! यह कैसा परिवतन है। पवित्र सनातन धम का त्याग कर लोग नये नये धर्मो का आश्रय ले रहे है। क्या मेरे मन मे दया नही   याय नही ? मैं धम के लिए हिंसा करता हूँ। मैं धम के लिए दण्ड देता हूँ। मैं जग के कल्याण के लिए तप करता हूँ। जाओ। सारा समाज पतन के गत मे गिर जाय। लोक चाहे पवित्र सनातन धम का छोड दे किन्तु ग धोत्कट धम के नाम पर मरना भी—प्राण दना भी जानता है। मैं इस अधममय जगत म अब नही रहूँगा। अपने शरीर को आरे स दो भागो म विभक्त कराकर प्राण के अतिम अणु मे अपनी आस्था का जगमगाता परिचय लोक का दूगा। बधिको, मेरे शिर पर आरा चलाओ। शिवोह ! शिवोह ! शिवोह !!

आरा चलने की ध्वनि उपयुक्त पृष्ठ सगीत। विलयन।

उद्घापक   जडता मे भी प्राण होते हैं परन्तु वह प्राण जडता के ससग से स्वय जड हो जाते हैं। उन्हे कभी अमृतत्व प्राप्त नही होता। यह थी तीर्थंकर और तथागत के युग के भारत की एक झलक। महाबोधि की छाया म एक नये युग का निर्माण हुआ था।

विलयन।

(प्रस्तुत रचना के लिए लेखक जातक कथाओं कुछ बौद्ध और जैन पोथियों और विशेष रूप से डाक्टर मोतीचन्द लिखित 'सार्थवाह' का आभारी है।)

रत्ना के प्रभु

पात्र

रत्ना
अकेली
तुलसीदास

रात्रि। वर्षा। हवा का तेजी और बौछारा की ध्वनि। बिजली की कडक।

रत्ना शा त स्थिर स्वर राम ! बिजली की कडक

रत्ना उसी भाव मे राम !! हवा की सन सन, बिजली की कडक

रत्ना उसी भाव मे ' राम !!!

रत्ना उसी भाव मे राम ! राम !! राम !!! मैं तुम्ह ही याद करूगी। मन के घन जितन भी गरजेंगे, कलेजे की कसक जै बार भी गाज बनके गिरेगी, राम ! मैं तुम्हारा ही नाम लूगी। जिनके पद परस कर पिया ने मेरी बाह छोड दी, जिनकी छांह पाकर प्रभु मेरी दाह बढा गय उनका नाम मैं न सुमरूंगी ता और कौन सुहागिन के भाग जागेंगे ?

मोहि दीनो स देस पिय
अनुज न द के हाथ
रतन समुझि जनि पृथक मोहि
जो सुमिरति रघुनाथ।

हा मैं रघुनाथ को सुमिरूँगी। सियाराम को सुमिरूँगी। मेरे लिए ये क्या कठिन है। जिनके हिरदे मे सियाराम आठा जाम बसते हैं वे पिया मेरे ही उर धाम म निवास करते हैं। रत्ना तेरा भाग अभिराम है।

घुघरुओ की झमक दूरतम से चचलतम होती हुई क्रमश माइक्रोफोन पर निकट से छाती हुई तेजी से निकल जायगी।

घुंघरू जैसे बजकर एकाएक चुप हो जाते हैं। 'अकेली' प्रवेश करती है। यह पात्र बहुत चचल है। पूर्ण नवयौवना, किन्तु अति भोली, इस भोलेपन म एक काव्यात्मक बनावट भी है। हर भाव को तत्काल साथक करती है।

अकेली धीरे से किन्तु अभिमान भरे स्वर म चुप ! आहा, सखी पूजा म लीन थी। हाय र, सुहागिन का गरब गुमान, विरह की चिता म भी हिमालय सा तपता ही रहता है ?

रत्ना जा अकेली। तू मरी जान खान का क्या आ गयी ?

अकेली बडे भोलेपन से भरी हुई मलमनसाहत के साथ ना री, मैं ता तेरा ध्यान रमान आयी हूँ। पूजा म निष्ठा बडी कठोर हो जाती है सुहागिन, उसे सिंगार स रिझाना भी चाहिए।

रत्ना अकेली !

अकेली हाँ।

रत्ना अब सिंगार के दिन गये। देखती नही, बुढ़ाप की इन झुर्रियो मे स मेरा रोम रोम सिहर रहा है।

अकेली अरी बावली, यह तो सुहागिन का साज है। सुहागिन भी भला कभी बूढ़ी होती है।

रत्ना न सही। पर अमावस की रात को तारो स सजकर भी कौन सुख मिलता है। तारे भी घाव से लगत हैं।

अकेली उँह ! मर ! तू बडी भोली है, रत्ना ! अरी इतन बरस स जो सुहाग का सुख भोग रही है वो क्या कम है ? आग को वही सह सकता है सखी जिसकी छाती शीतल होती है।

रत्ना ठीक कहती हो अकेली वो घर स चले गये तो क्या हुआ, मेरे मन से तो नही गये। मुझे कौन दु ख है ? सारा दिन उनकी याद पलको की तरह मरे ननो स जुडी रहती है। मन म, जग म, जहाँ देखती हूँ मुझे अपने रामदुलारे ही दीख पडत हैं। भोर उठकर जबपूजा के लिए फूल चुनने जाती हूँ तो ठण्डी बयार म

कोई अपनी गूज भर कह जाता है, य फूल मेर रामजी का अल-कार है, इ ह मरी पादुका पर न गँवाना। तब मरी साध घुटके रह जाती है सखी ! दिन-घडी आठो पहर मैं जो पूजा अपन प्रभु को अपित करना चाहती हूँ व उस अपने प्रभु के लिए ल जात है। व मेरे पास आते तो हैं पर मरे लिए नही, अपन प्रभु क लिए। इसी का वडा दु ख सताता है मुझे। तुमसे सच कह दू वहन, मैं एक जगह डर गयी हूँ।

अकेलो पिया का डर प्यार की चि हानी है गुइया। तुम्हारे ही प्रभु न लिखा है विनु भय होत न प्रीति। क्या समझी।

रत्ना एक नि श्वास छोडती हे।

अकेलो ना सखी, उदास न हो। उदासी म मोह नही मोह बिन प्रीति नही।

रत्ना तू मुझे फिर गहरे पानी म घसीटे लिय जाती है अकेली। मैंने ही अपन मोह से उ हे छुडाया है, पिया क मन वसी अपनी प्रीन का सियाराम के चरणो म सौंपा है। दुनिया कहती है रत्ना, तू वडभागिन है जो तेर कारन पति को नान मिला। पर अकली, तू ही बता, मेरी ऐसी मूरखा तूने कही और भी देखी है ? मेरी ऐसी दुखिया

धिक मोह कहँ मो बचन लगि
मोह पति लहयो विराग।
भई वियोगिन निज करनि
रहँ उडावत काग॥

अकेलो तू पागल है रतना। कस्तूरी मृग जीता है सुगध की रखवाली के लिए और मरता है जगत को उसका दान कर देने क लिए। वृक्ष अपन फूलो को सीचते है इसीलिए कि वे खिलकर ससार को सु दर बनायें। तूने भी अपन जीवन कमल को प्रेम-रस से सीचा और जब वह खिलकर भक्ति और भगवान की शोभा बढा रहा है। सारा ससार तेरे प्रभु की भक्ति मे तर ही प्रम को निरख रहा है सखी ! तू काहे का शोक मनाती है।

रत्ना अकेली, तू बडी अनाडा ह।

अकेली क्या भला ?

रत्ना और नही तो क्या, जब मैं अपने आपे का समेटकर पूजा म लीन करन बैठती हूँ तो तू अपन चचल घुघरूओ से मेरे सून आन द को बिखेर जाती है। मरी पूजा म वियोग का रग भर जाती है। और

अकेली और ?

रत्ना और क्या, तेरा कपाल। तू मुझे बहुत खिजाती है री। जाने कब तुझस छुटकारा मिलेगा ?

अकेली दो ही उपाय है सखी, या ता पिया आ जायँ, अकेली विसर जायगी और या

रत्ना या ?

अकेली या तरी पूजा इतनी सध जाय कि मेरे घुघरूओ की झकार तुझे सुनाई ही न पड़े। पर ऐसा तू कह नही सकती रत्ना। ऊँ हूँ।

रत्ना मैं ऐसा ही करूँगी। मैं अपने प्रभु की पूजा करते-करते समाधि ले लगी।

अकेली और जो तेरे प्रभु ही आ जायें तो ?

रत्ना मैं तेरी एक न सुनूगी। रात म सूरज दिखाने की बात करती है जा।

अकेली तुम उल्टी बात कह गई रत्ना। मैं दिन की धूप को चाँदनी बताती हूँ।

रत्ना कस ?

अकेली हुं, जा भी। अरे जो तू भी कही मेरी ही तरह हर लौ म रम जाती ता फिर रतना न रहती, अकेली भी न रहती, बस एक पिया रह जाते—पिया चिरजीव हो जाते।

रत्ना अकेली सच बता, क्या तू ही मरा सच्चा रूप है ?

अकेली अब ये तो गुइयाँ, रत्ना का दरपन ही बतायेगा। मैं बिचारी अकेली, कोई जाने न पहचान और, और रतनावली को तो

सारा ससार जानता है। रत्ना को सब माता कहकर पूजत ह।
रतना तो रामचरितमानस के परमहस की पत्नी, उनकी गुरु
है। रतना का बडा मान है। और मैं बेचारी अकली—सब स
छोटी। पिया की बडाई मलुकी छिपी मगन डोलती हूँ। मेरेका
ता न आह, न आसू, न जलापा। जले मेरी सौत ताली पीट-
कर रतना, हाँ। धक्का देने का सा भाव मैं तो नाचूगी।

नत्य मे चचलता क्रमश थककर वियोग
का भाव धारण करती है।

चौपाई

पावकमय ससि स्रवत न आगी।
मानहु मोहि जान हतभागी॥
सुनहि विनय मम विटप असोका।
सत्य नाम करू हरु मत सोका॥

रत्ना अकेली।

अकेली हा।

रत्ना तुम खरी सुहागिन हो बहन! तुम्हारा यौवन अखण्ड है, अमर है। मैं, रतना, बूढी हो गयी, आज हूँ कल मर जाऊँगी।

अकेली आज अभी नही मरता बहन, कल भी था, कल भी रहेगा। हर दिन आज है, हर आज मे पिया की आहट बँधी है। मैं उसे सुनती हूँ। मेरे को तो मरने जीने का बखत ही नही मिलता क्या करूँ।

रत्ना हाय रे बन्धन! कहाँ जाऊँ इस छलावे को तोडकर।

अकेली हाय रे राम! सखी को तो भाव आने लगे।

रत्ना राम का नाम न ले अकेली! किसी के कायल-पपीहे बैरी होते हैं, मेरे तो राम हो गये।

अकेली हाय गुइयाँ, ये राम से कब का बैर निकाला पुराना? तेरी तपस्या सचमुच बहुत घनघोर हो गयी है रतना! तू तो तप रही है, बाबा रे बाबा।

रत्ना अकेली, तू मुझे बहुत खिजाती है। मैं मर जाऊँगी।

अकेली   शान्त उसी दिन पिया आयेंगे।

रत्ना   अकेली, तू मुझसे जलती है।

अकेली   जलते हैं मुरदे। मैं तो जिन्दा हूँ, साढे पाँच हाथ की !!! तेरे सामने छमक छमक छमक

घुघरू की आवाज।

रत्ना   अकेली।

अकेली   उसी तरह बनावटी गम्भीरता के साथ हाँ बहन।

रत्ना   जी नही लगता अकेली।

अकेली   आँसू लाऊँ। खेलोगी पचगुटटे।

रत्ना   ना री, बहुत दिन खेल लिये आसुओ के पचगुटटे। अब सधते नही अकेली, जी नही बहलता उनसे।

अकेली   जी बहलाया नही जाता सहेली, जी लगाया जाता है। असल बात तो यह है—बाकी जो श्री रतनावली जी सोचें सो बावन गण्डे ठीक।

रत्ना   मैं अपने से हार गई हूँ अकेली। मेरा हठ हार गया मुझसे।

अकेली   तो मेरी मान।

रत्ना   क्या ?

अकेली   मुझसे झगडा न किया कर बस।

रत्ना   तू हँसी करने लगी चल।

अकेली   मेरी हँसी भी सच्ची होती है। मेरी हर पुलक म पिया बसे हैं।

रत्ना   सच कहती हो अकेली।

अकेली   चल दूर, झूठी कही की।

रत्ना   आवेश के साथ अकेली।

अकेली   दृढता के साथ शान्ति के स्वर मे सच कहती हूँ रत्ना। तेरा अभिमान झूठा है। तू उसी पहले के गरब गुमान म तप रही है।

रत्ना   ईर्ष्या के साथ और तू।

अकेली   मैंने हर घडी, हर पल का हिसाब रक्खा है। तब से मैंने अपनी पलक नही लगने दी जो पिया ओझल हो जाते। तू उस दिन

उठी, देखा, पिया चले गये। तू रूठी और मान करके बठ गई। तूने कहा

कर गहि लाए नाथ तुम
बादन बहु बजवाय
पदहु न परसाये तजत
रतनावलिहि जगाय।

रत्ना — ईर्ष्यावश और तुम? क्या तुम नही कडक उठी थी मेरे साथ?

अकेली — हाँ, वियोग के डर स मैं भी एक बार काप उठी थी डिग गयी थी। पर वैसे ही धीरज बँध गया। फिर अपनी सो पर आ गई, और मैंने तो खोल के कह दिया कि

जदपि गये घर सो निकरि
मो मन निकरे नाहि।
मन सो निकरो ता दिनहि
जा दिन प्रान नसाहि।
हा गुसैंया, जाओगे कहाँ॥

रत्ना — अकेली, तू बडी मुखरा है री! प्रभु पर भी चोट करने स नही चूकती।

अकेली — दखो भाई, तुम तो पाच वेद पचास शास्तर पढी हो रतनावली जी, इसी से तुम्हे चोट चपेट की खबर रहती है। और मैं ठहरी अकली, एक वेद जानती हूँ। पहले प्यार किया है, प्यार देकर उन्हे अपना प्रभु बनाया है। और जब तक प्यार है पिया हैं, तब तक मैं सुहागिन रहूँगी। मैं उनसे प्यार करती हूँ, उनसे रार भी करती हूँ मैं उलझती हूँ और उनके चरणो मे मेरी आखें भी झुकी रहती है, मैं उनसे रूठ जाती हूँ मैं मान भी करती हूँ। पर—पर अभिमान कभी नही करती। कैसे अभिमान करूँ और किससे अभिमान करूँ। वो वृक्ष हैं, मैं बेल। उन्ही के सहारे मैं निखर रही हूँ और मेरे आलिगन से उनकी शोभा भी अनूठी हो रही है। देखकर वो मुझे दख रहे हैं, और

मैं उन्हे। उन्हे देखकर मैं सब कुछ देख रही हूँ। और मुझे देखकर वह राम को देख रह है। मेरा सब कुछ उनका है। वो राम के हैं फिर मैं कहा रही।

रत्ना तनिक रुक जा अकेली, देख मेरे प्राण खिचे आते है।

अकेली और भी अच्छा है। तब मेरे प्राण तेरे भी प्राण हो जायेंगे। अकेली रतना हो जायेगी और रतना अकेली। दोनो के प्राण एक, प्राणनाथ एक, और नाथ-के नाथ रघुनायक एक।

नेपथ्य मे सगीत।

राम सच्चिदानद दिनेसा
नहिं तह मोह निसा लव लेसा।
सहज प्रकास रूप भगवाना
नहिं तह पुनि विग्यान विहाना।।

सगीत।

रत्ना ये सब ठीक है अकेली पर मेरा मन अभी भी मान करता है।

अकेली तो कर ना ! तुझे रोकता कौन है ?

रत्ना तो तू जा ! तेरे रहते मैं मान भी नही कर सकती।

अकेली ले मैं जाती हूँ ! अभी पिया आयेंग द्वार खटखटायेंगे, और तुम मान किये बठी रहना गुइया, भला ! लो मैं चली, राम-राम !

घुघरू की आवाज। दरवाजे पर खट-खट और बिजली की आवाज।

रत्ना गुनगुनाती है

उद्यापन तीरथ वरत
जोग्य जग्य जपदान

कुण्डी खटकती है। बादल की गरज।

रत्ना कौन ?

रत्ना के प्रभु अतिथि बनकर द्वार पर आये, परन्तु रत्ना का शकालु हृदय उन्हे अपना न पाया।

तुलसीदास द्वार खोलो !

रत्ना आय जाने ! उन्ही की जैसी आवाज है। नही, वो क्या आयेंगे ऐसी घनघोर पानी बिजली से भरी हुई रात मे। वो अब नही आवेंगे। कभी नही आवेंगे। अकेली झूठी है। वो नही आयेंगे।

दरवाजा खटकता है।

तुलसीदास अतिथि भीग रहा है देवी ! द्वार खोलो।

रत्ना आई महाराज ! कुण्डी खुलने का शब्द पधारें महाराज।

तुलसीदास आज की रात मैं तुम्हारे यहाँ शरण लेने आया हू देवी !

रत्ना अतिथि भगवान हैं महाराज ! मेरे भाग जागे। आसन लाती हूँ ये लीजिये ! बडी विकट रात है, ऐसे म कहाँ आ गये महाराज ?

तुलसीदास मेरे सस्कार हैं देवी ! ऐसी ही रात मे उदय होते हैं। दिये की लौ सुधार लो देवी सब-कुछ दीख पडेगा।

रत्ना बुढ़ापा आ गया महाराज, इस घरपर दिया भी मेरे ही जितना पुराना है।

तुलसीदास तब तो यह दीपक अनुभव हो गया है देवी। स्नेह से इसका कण-कण परिपूरित है। फिर लौ सुधारते क्या देर लगेगी ?

रत्ना अच्छा महाराज, अभी सुधारती हूँ।

अकेली धीरे धीरे दिये की लौ सुधारो गुइयाँ, पिया कह रहे हैं।

रत्ना धीरे धीरे हट, मेरा मन डगमगाती है। अतिथि आये हैं। तू जा।

अकेली धीरे जाती हूँ, मैं पिता के चरणो मे लीन हो जाती हूँ। तू मर यो ही मान करती हुई।

दिये की लौ तेज होती है।

रत्ना अब उजेला तो हुआ। मैं देख रही हूँ आप तो एकदम भीग गये हैं महाराज।

तुलसीदास राम की करुणा बरस रही है देवी। ऐसी ही एक रात और भी बरसी थी—वर्षों पहले।

रत्ना तब मेरे ऊपर गाज गिरी थी।

घुंघरू की झन झन।

अकेली हट!

रत्ना चौंकती है।

तुलसीदास क्या हुआ?

रत्ना अकेली!

तुलसीदास तुम अकेली नही हो देवी।

रत्ना बहुत डराती है मुझे।

तुलसीदास राम मे लीन रहो, अकेली घुलमिल जायेगी।

रत्ना राम! मैं लाख जतन करती हूँ कि मेरा ध्यान प्रभु के प्रभु म लग जाय, पर वह तो मेरे प्रभु की अगवानी म बिछा रहता है। उनके प्रभु तक पहुँच ही नही पाता।

तुलसीदास तुम्हारा ध्यान अपने प्रभु तक भी नही पहुँच पाता रत्नावली। मन की गली मे रुक जाता है।

रत्ना ऐसा न कहें महाराज—अकेली भी यही कहती है।

तुलसीदास अकेली ही रत्नावली है देवी।

रत्ना और मैं?

तुलसीदास तुम मोह हो। छलना।

रत्ना मोह! छलना!! ये दो शब्द जस मेरे लिए ही बने हो, जैसे इनका अर्थ ही हो रत्नावली। अकेली सुन लेगी तो उसे कितना बल मिलेगा।

तुलसीदास सत्य को बल मिलेगा। इसमे बुरा क्या है देवी!

रत्ना मेरा अधिकार

तुलसीदास मोह का अधिकार है गति विकासाविकसित। होकर मोह ज्ञान बनता है।

रत्ना मैं मोह नही हूँ। विरह हूँ, अपने प्राण प्यारे की याद म जलती हुई आग हूँ।

तुलसीदास एक ही बात है रत्नावली। विरह का विकास है योग। पूर्ण-काम परम शान्त!

रत्ना परम शांति बस एक प्रभु के दर्शन मे है। एक बार वह आ

जायँ, एक बार मैं उनसे रूठ लू, वह मुझे मना लें। बस मैं शान्ति पा जाऊँगी।

तुलसीदास पर ऐसा भी हो सकता है कि तुम अपने पति से मिलकर उन्हें न पहचान सको।

रत्ना नही, नही, नही ! ऐसा न कहे महाराज। अकेली भी ऐसा ही कहकर मुझे डरा चुकी है। मैं भला अपने प्रभु को न पहचान पाऊँगी ? सत्ताईस की उमर से आज सत्तर पार कर चुकने पर भी जिस आग को लिये बैठी हूँ वह झूठी नही है महाराज।

तुलसीदास सत्य है। पर तु अब आग को अपने आचल म समेटकर क्यो देखती हो। ज्योति को चारो ओर से अपना काला आंचल हटा लो देवी। ज्योति म अपने सम्पूर्ण को देखो।

बिजली की कडक।

रत्ना नही। यह विरह का काला आँचल ही तो मेरी रक्षा है। इसे हटा लगी तो प्रलय की इन आँधियो मे मेरी ज्योति बुझ जायगी। नही ।

घूघरू की झनझन।

अकेली अरी हट।

रत्ना भयभीत हो फिर आई।

तुलसीदास कौन ?

रत्ना भयभीत घिग्घी-सी बधी हुई अकेली

तुलसीदास वह अकेली नही है रत्नावली।

रत्ना कौन कौन है वह ?

तुलसीदास रत्नावली।

रत्ना और मैं ? मोह, छलना नही नही नही मैं मर जाऊँगी राम।

आवाज सगीत की करुणा मे मिल जाती है। सगीत की वह करुणा भी एक लय, एक स्वर नहीं। जसे करुणा का स्रोत

फूटकर बूदो मे बिखर गया हो—एक प्रताप, एक धारा न बना सका हो। विभिन्न स्वरो का अनिर्यालत सघष साम्य की एक दिशा ढूढ रहा है। साम्य आता है। अभी भी तडक थमी नहीं। अभी भी स्थिर नहीं हुई।

तुलसीदास राम। राम।

रत्ना की धीमी धीमी सिसकिया। घुघरू सम्हालकर धीरे धीरे अकेली आती है।

अकेली रत्ना।

रत्ना की सुबकिया।

अकेली मोह त्यागने मे भी बडी करुणा है। रोये जा। रोये जा रतना, काठा खाली होगा।

रत्ना दूर जा अकेली, मैं सूनी मरूंगी।

अकेली तभी तो आज की रात मैं तेरे पास रहूँगी सखी। जब तू चोला छोडेगी तो तुझे मैं अपने म मिला लूगी।

रत्ना और तुम रत्नावली कहाओगी। क्या? नही, मैं हूँ रत्नावली। जिसके दल हरि को प्यारे हैं उनके दास की प्राणप्यारी रत्नावली मैं हूँ, मेरे यौवन ने मेरे प्रियतम पर विजय पायी। मरी सुन्दरता ने उस महाभागवत की भक्ति को अपनी चेरी बना कर रक्खा। मेरी कल्पना नेउस महाकवि को भृगारी बनाया। मेरी काम स्फूर्ति ने उस महामानव को अदम्य उत्साह और शक्ति प्रदान की। मेरे लिए ही उन्होन ऐसी प्रलयकर रात म शव को साधन बनाकर पतित पावनी को पार किया था। मेरे आकपण ने उनके लिए काल नाग को प्रम की कमद बना दिया था। मैं वह रत्नावली हूँ और मैंन—अमर सुहागिन रत्नावली न ही वह अमर सुहाग का फूल श्रीराम क चरणो म चढाया है। वो मरे हैं, वो सदा मेरे रहगे। मैं नही मरूँगी। कभी नही मरूँगी और यदि मरूँगा भा तो उनस मिलकर—

रार तकरार कर अपनी साध मिटाकर मरूँगी।

अकेली अबकी भारी निसास छोडकर चल भाई, कभी मरेगी तो सही। मैं तो समझी थी तुम अमर सुहागिन ही नही अमर बेल भी हो।

रत्ना चिढकर तो क्या मैं तेरा लहू पीकर जीती हूँ ?

अकेली मैं क्या बताऊ।

रत्ना अकेली, तू मेरे सहारे जीती है। मैं तुझे अपने कलेजे म पालती हूँ। मैंने ही तुझे मुक्ति दी है।

अकेली अच्छा बाबा, यो ही सही। तब फिर मैं अपनी मनमानी करूँगी।

रत्ना तो कर जा टल यहा से।

अकेली ठीक है। तो फिर मैं अब चौडे बाजार पिया को लेके अछूती निकल जाऊँगी। देखू मुझे कौन छूता है।

घुघरू नाचते हुए भागते हैं। रत्ना क्रोध मे अंधी हो अकेली का पीछा करती है।

रत्ना मैं आज तर प्राण ही लेकर रहूँगी। तू मेरी सौत है।

घुघरू फिर नाचकर भाग जाते हैं। कमरे भर मे रत्ना क चारो ओर घुघरू बज रहे हैं। बीच बीच मे अकेली की खिलवाड भरी हँसी भी सुनायी देती है। चारो ओर रत्ना के दौडने की आहट।

रत्ना थक्कर दो तीन बार हाफती है, फिर एक उच्छवास लेकर राम। मैं कितनी लाचार हूँ। राम। मैं मर जाऊँगी रोना

घुघरू फिर सम्हल सम्हलकर आहिस्ता कदम उसके पास अते हैं।

अकेली हाय कितना रो रही है बेचारी। रत्ना ! तू बठी ठाली मुझसे न जय पडा कर बहना। देख मुझसे जूझने म तरा काई लाभ नही। मैं तो तेरी शक्ति हूँ।

रत्ना रोते हुए घृणा के साथ तू मेरी सौत है।

अकेली रतना, तू अहकार का कठोर दीपक है, पर मेरे बिना सूना। मैं तरा तेज हूँ सखी। दिया अपनी ही लौ से तपे और आप ही अभिमान भी करे। अरी, वाह री रतना! हट। आसू पोछ।

रत्ना बिलखकर मैं मर जाऊँगी अकेली।

अकेली तू बार बार मरने का सोच क्या करती है बावली। लौ म समा के देख—पिया जागते हैं। फिर मौत कहाँ? तू अपना ध्यान करती है इसलिए भय तुझे सताता है। राम मे रम जा, पिया तेरा ध्यान बन जायेंगे। लौ लगा सहेली—लौ लगा।

सारगी पर जोगिया।

रत्ना राम! राम! राम! राम! राम!

अकेली राम! राम! राम! राम! राम!

दोनो एक साथ, एक स्वर से। क्रमश अकेली का स्वर विलीन हो जाता है।

रत्ना राम! राम! राम!

पृष्ठ वाद्य जोगिया से भरव मिलता है। रात बीतती है। सबेरा होता है। पछी चहचहाते हैं। तुलसीदास का भाव भरा स्वर सुनाई पडता है।

तुलसीदास कहउ कृपाल भानुकुल नाथा।
परिहरि सोच चलहु बन साथा।
नहि विषाद कर अवसर आजू।
बेगि करहु बन गमन समाजू॥

रत्ना प्रभो, कल अधकार मे आपको पहचान न पायी।

तुलसीदास इसीलिए तो भोर तक रुका रहा रत्नावली! सूय को दीपक मे देखो, और दीपक को सूय स विलग न मानो। यही प्रेम का पथ है, इसी पर हमे चलना है।

रत्ना जैसी प्रभु की इच्छा मैं साँस की तरह चलूगी।

••